रत्न संचय

भाग-५

आचार्य देव श्री रत्नाकर सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य

उपाध्याय श्री रत्नत्रय विजयजी

॥ श्री गोड़ीजी पार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ श्री जित-हीर-बुद्धि-तिलक-शांतिचंद्र-रत्नशेखर-राजेन्द्रसूरिभ्यो नमः ॥

रत्नसंचय भाग-५

शास्त्राधारे २५० विषयो का संग्रह

संपादक

आचार्यदेव श्री रत्नाकर सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य

उपाध्याय श्री रत्नत्रय विजयजी म.सा.

प्रकाशक

श्री रंजनविजयजी जैन पुस्तकालय

मालवाड़ा, जि. जालोर (राज.)

पुस्तक नाम : रत्नसंचय भाग-5

विषय : शास्त्राधारे 250 विषयो का संग्रह

प्रथमावृत्ति : नकल : 3,000 संवत : 2071

संपादक : उपाध्याय श्री रत्नत्रय विजयजी

किंमत : रु. 60 (साठ रुपये)

प्राप्तिस्थान

अमदावाद : **श्री पारस-गंगा ज्ञान मंदिर**

बी-१०३,१०४, केदार टावर, राजस्थान होस्पीटल के सामने
शाहीबाग, अमदावाद-३८० ००४

• फोन नं. ०७९-२२८६०२४७ (मो.) ९४२६५ ३९०७६.

श्री जैन प्रकाशन मंदिर

दोशीवाड़ा की पोल, कालुपुर, अमदावाद-१

फोन : (०७९) २५३५६८०६

मुंबई : **मणिलाल यु. शाह**

बी-१०१, फीलजोय एपार्टमेन्ट, एम.सी.एफ. क्लब के पास, हिंमतनगर फ्लेट के पीछे, बोरीवली, (वे.) मुंबई-४०० ०९२

• (मो.) ९८२०१ ८५३५३ • (घर) ०२२-२८९११४६९

पालीताणा : **श्री पार्श्वनाथ जैन पुस्तक भंडार**

फुवारानी पासे, तलेटी रोड, पालीताणा-३८४२७० (सौराष्ट्र).

• फो. : ०२८४८ - २५३३२३

मुद्रक : **नवनीत प्रिन्टर्स, (निकुंज शाह), शाहपुर, अमदावाद**

• मो. : 98252 61177

प्रस्तावना

जिस तरह सागर में से रत्न बहार नीकलते है उसी तरह जिनशासन में द्वादशांगी को सागर की उपमा दी है । तीर्थंकर परमात्मा की त्रिपदी सुनकर गणधर भगवंत द्वादशांगी की रचना करते है उसी द्वादशांगी को आज २५०० साल का समय पूर्ण होते ही कितना भाग विच्छेद हुआ तो भी आज अपने पास ४५ आगम के मूल श्लोक, टीका, भाष्य, चूर्णी, निर्युक्ति आदि के साथ गिनने जाय तो ९ लाख श्लोक का समावेश होता है । गणधर भगवंतो के अनुमान से अपने पास जो ज्ञान है वो बिन्दु ० समान है मगर अपने अनुमान से सागर भरा हुआ है, क्योंकि नवलाख श्लोक को पढना यानि पूरा सागर पार करना इतना समय लगता है तो भी आज दिन तक जो जो रत्न प्राप्त किये उन सभी का संग्रह मंदमति के अनुसार किया है पूर्व में एक से चार भाग रत्नसंचय के प्रगट किये अब की बार पांचवा व छट्ठा भाग एक साथ प्रगट हो रहा है जिसके अंतर्गत कुल ५०० विषयों का संग्रह है प्रत्येक विषय के पीछे आगम-ग्रंथ का नाम भी लिखा है तो भी किसी जगह रह गया हो तो पढनेवाले विचार लेना । दोनों भाग संपूर्ण रुप से पढने पर बहोत सारे विषयो की जानकारी प्राप्त होगी ।

शास्त्राधार से ५०० विषय पढने के बाद जीवन में समकित व्रत को निर्मल करके सम्यग्ज्ञान में वृद्धि करके ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम करके सुकृत के सहभागी बनना । पढने के बाद इस पुस्तक को इस पुस्तक को दूसरो

के हाथ में पहोंचाकर पढाने का प्रयास करना, क्योंकि आगम के पदार्थ को पढना व पढाना बहोत बड़ा लाभ बताया है, जिनाज्ञा विरुद्ध कुछ भी विषय का शब्द का उपयोग हो गया हो तो क्षम्य गिनना ।

साधु साध्वीजी भगवंतो को प्रवचन के लिये शिबीर, वाचना आदि में ये विषय अति उपयोगी बनेंगे । ज्यादा से ज्यादा इस विषयो का पठन पाठन मनन चिंतन करके स्व-पर के उपकारी बने यही अंतर की अभिलाषा ।

लि.

आचार्य देवश्री रत्नाकर सूरीश्वरजी

मू.सा. के शिष्य उपाध्याय

श्री रत्नत्रय विजयजी...

अनुक्रमणिका

क्रम	विषय	पृष्ठ नं.
1.	अरिहंतपद का विवेचन	01
2.	सिद्धपद का विवेचन	06
3.	आचार्यपद का विवेचन	09
4.	उपाध्यायपद का विवेचन	10
5.	साधुपद का विवेचन	11
6.	आवश्यक निर्युक्ति ग्रंथाधारे पांचपद का अर्थ	12
7.	शील के १८,००० भेद	13
8.	सम्यग्दर्शन के ६७ भेद	14
9.	सम्यग्ज्ञान के ५१ भेद	15
10.	सम्यग्चारित्र के ७० भेद	16
11.	सम्यग्तप के ५० भेद	16
12.	खीमऋषी के घोर अभिग्रह	17
13.	पांच आगम वाचना का समय	20
14.	कल्पसूत्र का प्रथम वांचन	21
15.	पल्योपम सागरोपम का प्रमाण	21
16.	श्रेणिक राजा की १० राणी का तप दीक्षा में	22
17.	बडे तपो का प्रमाण	23
18.	पांच पांडवो का पूर्वभव	25
19.	धन्ना अणगार की काया	26
20.	सर्वार्थ सिद्ध विमान का स्वरुप	27

21.	हरिभद्रसूरि द्वारा प्राप्त गाथा का अर्थ	28
22.	याकिनी महत्तरा साध्वीजी का जवाब	29
23.	राजगृही के पांच पहाड के नाम	29
24.	श्रीपाल राजा के रास की रचना	29
25.	श्रुत केवली की शक्ति	30
26.	सातवी नरक के नाम व रोग	31
27.	मिच्छामि दुक्कडम् का अर्थ	31
28.	इरियावहीया में मिच्छामि दुक्कडम् के भेद	31
29.	गुणरत्न संवच्छर तप की विधी	32
30.	परमाधामी द्वारा नारकी को भयंकर वेदना	33
31.	अंडगोलिक मनुष्य का स्वरुप	34
32.	नरक में नरकावास की संख्या	35
33.	परमाधामी देवो की खुशी	35
34.	नरक की वेदना केसी ?	35
35.	नरक की वेदना का विवरण	36
36.	नवपद का भंडार	36
37.	स्वाध्याय का प्रमाण	37
38.	चक्रवर्ती के १४ रत्न	37
39.	चक्रवर्ती का स्वरुप	38
40.	चक्रवर्ती के नव निधान	39
41.	सर्वार्थसिद्ध विमान के झुम्मर	39
42.	वासुदेव के सातरत्न	40

43.	हठीसींग की वाड़ी	40
44.	शत्रुंजय महात्म्य का प्रमाण	41
45.	स्थापनाचार्य पडिलेहन विधी	41
46.	वस्तुपाल तेजपाल के भव	42
47.	कोटिशीला का प्रमाण	43
48.	वासुदेव व कोटिशीला का प्रमाण	44
49.	श्रेणीकभाई कस्तुंरभाई पेढी के नाम	44
50.	वखतचंद शेठ की उदारता	45
51.	गंगा मां की खुमारी	45
52.	दानवीर जगडुशाह का दान	46
53.	पाठशाला शब्द का अर्थ	47
54.	गुरुदेव शब्द का अर्थ	47
55.	सातवे गुणठाणे आवश्यकक्रिया नियत नहि	47
56.	शंखेश्वर पार्श्वनाथ की प्राचीनता	48
57.	वीर विजयजी का जीवन व रचना	50
58.	वीर विजयजी द्वारा पूजा ढाल रचना	51
59.	धनजी शूरा, पनजी शूरा, रतनजी शूरा	51
60.	तामली तापस	52
61.	तीर्थंकर का वर्षीदान	52
62.	तीर्थंकर वर्षीदान के छ अतिशय	54
63.	वर्षीदान का प्रभाव	54
64.	वर्षीदान कौन सा दान ? कौन ले सकता है ?	55

65.	परमात्मा के समवसरण में ३६३ पाखंडी	55
66.	दस प्रकार के तिर्यग् जृंभकदेव	55
67.	साधु धर्म की दस समाचारी	56
68.	पडिलेहन की विधी	57
69.	साधु के उपकरण के नाम	59
70.	प्रत्येक उपकरण के नाम	59
71.	अधिकरण यानि क्या ?	61
72.	प्रतिक्रमण में अवग्रह का प्रमाण	61
73.	'छ' आवश्यक का प्रमाण	61
74.	श्रावक की सात धोती	62
75.	गरना का प्रमाण	62
76.	श्रावक के सात चंदरवे के स्थान	63
77.	स्वाध्याय के पांच प्रकार	63
78.	दुष्प्रभसूरि व संघ	63
79.	कुमारपाल राजा के १८ देश के नाम	63
80.	धर्मदूत का द्रष्टांत	64
81.	परमात्मा की भक्ति अलंकार द्वारा	64
82.	पद-संपदा की पहचान	65
83.	जाप के तीन प्रकार	66
84.	दूसरी तरह जाप के तीन प्रकार	66
85.	पंचाचार के ३६ भेद का विवरण	67
86.	श्रावक जीवन के ३६ कर्तव्य	70

87.	भरहेसर सज्झाय के ५३ महापुरुष	72
88.	भरहेसर सज्झाय के ४७ महासतीयां	77
89.	पंचवस्तु ग्रन्थ की पांच वस्तु	80
90.	स्वाध्याय का लाभ	81
91.	स्वाध्याय से सात गुणों की प्राप्ति	81
92.	स्वाध्याय की महत्ता	82
93.	बहुवेल संदिसाहुं क्यों ?	83
94.	तीर्थंकर सम सूरि भगवंत	83
95.	नयचक्र ग्रंथ की दुर्लभता	84
96.	कोडाय का ज्ञानमंदिर	85
97.	श्रावक द्वारा श्रुतलेखन	85
98.	पेथडमंत्री की श्रुतभक्ति	85
99.	कुमारपाल राजा के बार व्रत की झांखी	86
100.	सम्यग्दर्शन निर्मल हेतु १० रुचि	88
101.	वस्तुपाल मंत्री के बिरुद	89
102.	वांदणा के २५ आवश्यक	89
103.	नगरशेठ की पोल में गोड़ीजी पार्श्वनाथ	90
104.	नवसारी में चिंतामणी पार्श्वनाथ	91
105.	आज्ञा में धर्म की प्रधानता	91
106.	उणोदरी तप का वर्णन	91
107.	'छ' प्रकार की अप्रशस्त भाषा	92
108.	'छ' प्रकार के शब्दो का आवाज	92

109.	पांच प्रकार की निद्रा	93
110.	धर्म कथा के चार प्रकार	93
111.	'तीर्थ' किसको कहना	94
112.	सच्चा सम्यक्त्व	94
113.	कौन सी तिथी में कौन सी आराधना ?	94
114.	पांच समिति का स्वरुप	95
115.	तीन गुप्ति का स्वरुप	96
116.	सिद्धचक्र यंत्र किसने निकाला ?	97
117.	कायोत्सर्ग का प्रभाव	97
118.	श्रीपाल राजा का उजमणा ?	98
119.	शत्रुंजय तीर्थ मोक्ष जानेवाले की संख्या ?	99
120.	नवपद जाप का प्रभाव	102
121.	श्रावक की अग्यार प्रतिमा	102
122.	साधु की बार प्रतिमा	104
123.	सात स्वर यानि क्या ?	106
124.	काम की दश दशाए	107
125.	राणकपुर तीर्थ की विशिष्टता	107
126.	अनुपमादेवी द्वारा उजमणा	108
127.	रोहिणैय चोर की परंपरा	109
128.	लव व कुश के 'छ' भव	110
129.	सीता का पूर्वभव	111
130.	गिरनारजी के नेमिनाथजी की प्राचीनता	111

131.	अनुपमादेवी का सुपात्रदान	112
132.	बालाशाह की टुंक पालीताणा	113
133.	गच्छ के नाम	113
134.	सारणा-वारणा का अर्थ	114
135.	पुष्पपूजा का प्रभाव	114
136.	बम्बई में प्रथमबार साधु का प्रवेश	115
137.	पौषध पारते समय 'छ' महापुरुष के नाम	115
138.	दृष्टिवाद व उसके भेद	119
139.	दृष्टिवाद पद का प्रमाण	121
140.	सूरिमंत्र पीठीका के नाम व जाप का प्रमाण	122
141.	गुणानुराग के सात लक्षण	122
142.	भावश्रावक के सात लक्षण	123
143.	ज्ञाताधर्म कथा आगम का प्रमाण	124
144.	चौद स्थानों में संमूर्च्छिम जीवो की उत्पत्ति	125
145.	मूरख के आठ लक्षण	126
146.	उपधान आचार में तप का प्रमाण	126
147.	मांडला किस लीये ?	127
148.	अजितशांति की रचना कब व कैसे ?	128
149.	आत्म अंगुल आदि का प्रमाण	129
150.	तमस्काय का स्वरुप	130
151.	कृष्णराजी का स्वरुप	130
152.	नवलोकांतिक देव का स्वरुप	131

153.	वज्रलेप का स्वरुप	132
154.	राजीया वाजीया खंभात बंदरे गाजीया	132
155.	चार प्रकार के दोष क्रिया के	134
156.	प्रायश्चित तीर्थ का स्वरुप	134
157.	रोने का कब चालू हुआ ?	134
158.	पुंठ करने से नुकसान	135
159.	गौशाला के भव	135
160.	वाणीया शब्द की प्रसिद्धि	137
161.	शिबिका को प्रदक्षिणा	138
162.	विधी बहुमान के पांच लक्षण	138
163.	पूनमीया गच्छ की उत्पत्ति	138
164.	सुपात्र दान का प्रभाव	139
165.	चार प्रकार के कर्मबंधका स्वरुप	139
166.	दशवैकालिक सूत्र की उत्पत्ति	140
167.	उपदेशमाला ग्रंथ के टीकाकार	141
168.	उपदेशमाला ग्रंथाधारे १२५ गाथाका स्तवन	143
169.	उपदेशमाला ग्रंथाधारे २४ ग्रंथमाला का सर्जन	143
170.	उपदेशमाला ग्रंथाधारे ३५० गाथा का स्तवन	145
171.	रणसिंह राजर्षि की ढाल	146
172.	श्रावक को उपदेशमाला ग्रंथ पढने का प्रमाण	146
173.	पूरे दिन में कालवेला का प्रमाण	147
174.	सुरत नाम कैसे पडा ?	147
175.	उपाध्याय उदयरत्नजी द्वारा रचित रास	148

176.	सुरत में गोपीपुरा किसने बसाया ?	149
177.	सुरत से नीकले हुए बारह संघ	150
178.	पांच प्रकार के आचार से पांच वैभव की प्राप्ति	156
179.	सुरत में रचे हुए ढाल-रास का प्रमाण	157
180.	सुरत में होने वाले चातुर्मास व प्रतिष्ठा	158
181.	विनयगुण की प्रधानता	160
182.	विनय के १० भेद	161
183.	बहुमान आचार यानि क्या व उसके लक्षण	161
184.	बहुमान आचार की चतुर्भंगी	162
185.	वस्तुपाल मंत्री की सात प्रार्थना	163
186.	प्रतिक्रमण करने का शास्त्रीय समय	163
187.	आलोचक के ११ गुण	164
188.	प्रभुवीर का गर्भ में अभिग्रह	165
189.	पोरिसी का प्रमाण	165
190.	संथारा पोरिसी में आते भारी शब्दार्थ	165
191.	काया की पडिलेहण में द्रष्टांत	166
192.	चोवीश तीर्थंकर के नाम का कारण ?	167
193.	सुधर्मास्वामी समुदाय प्रमाण	169
194.	संभूति विजयसूरिका समुदाय	169
195.	परस्पर क्षमापना के 'छ' लक्षण	169

196.	'छ' काय विराधना से डरनेवाले महापुरुषो के द्रष्टांत	170
197.	इरियावही सूत्र का जाप	172
198.	उपदेशमाला ग्रंथाधारे पांच समिति का वर्णन	173
199.	पुष्पमाला ग्रंथाधारे तीन गुप्ति का वर्णन	174
200.	एषणा समिति में पांच आचार का पालन	175
201.	शुद्ध मौन की विधी	175
202.	साधु साध्वीजी का हास्य कैसा ?	176
203.	श्रावक-श्राविका के दैनिक 'छ' कर्तव्य	176
204.	स्थंडिल भूमि की दस शुद्धि	178
205.	चार प्रकार के ध्यान का स्वरुप	179
206.	पांच इन्द्रिय के २३ विषय	181
207.	पांच इन्द्रिय के २५२ विकार भाव	182
208.	वाचना कैसे व किस लिये ?	182
209.	संयम से पतित होने के 'छ' कारण	183
210.	भिन्नमाल नगर के चार आचार्य	184
211.	सामायिक शब्द के विशेष अर्थ	185
212.	आवश्यक शब्द के विशेष अर्थ	186
213.	आवश्यक शब्द के १० पर्यायवाची शब्द	187
214.	चौद पूर्व हेतु स्याही का प्रमाण	188
215.	पूर्वधरो का विशेषण	189

216.	चार वेद के साथ १४ विद्या के नाम	189
217.	चोराशी आगम के नाम	189
218.	चौदपूर्व में सेउद्धृत ग्रंथ	191
219.	पूर्वधर द्वारा रचित ग्रंथ	192
220.	कुमारपाल राजा के चरित्र	192
221.	देवो की दश जाति	192
222.	मानव जन्म के दश दृष्टांत	193
223.	दश प्रकार का यतिधर्म	197
224.	जैन शास्त्र में आसन के नाम	199
225.	योगशास्त्राधारे पांचमहाव्रत का स्वरुप	200
226.	दर्शन-ज्ञान-चारित्र योग की व्याख्या	203
227.	योगशास्त्राधारे अष्टप्रवचन माता का स्वरुप	204
228.	अन्तर्मुहुर्त समय का प्रमाण	206
229.	योगशास्त्रधारे श्रावकके १२ व्रत का स्वरुप	207
230.	मदिरा पीने से नुकसान	215
231.	मांस भक्षण के दोष	216
232.	माखण भक्षण के दोष	216
233.	मध भक्षण के दोष	217
234.	अनंतकाय के दोष	217
235.	रात्रिभोजन के दोष व लाभ	218

236.	द्विदल भक्षण के दोष	219
237.	बोल आचार के दोष	219
238.	सामायिक शुद्धिकरण के मन के १० दोष दूर करना	220
239.	सामायिक शुद्धिकरण के वचन के १० दोष दूर करना	221
240.	सामायिक शुद्धिकरण के काया के १२ दोष दूर करना	222
241.	मोक्ष मार्ग का कारण	224
242.	सम्यग्ज्ञान का स्वरुप	224
243.	सम्यग्दर्शन का स्वरुप	225
244.	सम्यक्त्व के आठ आचार	226
245.	सम्यक् चारित्र का स्वरुप	226
246.	सम्यक् तप का स्वरुप	227
247.	उत्तराध्यन सूत्राधारे अष्टप्रवचन माता का स्वरुप	228
248.	अष्टप्रवचन माता पालन का सार	232
249.	उत्तराध्ययन सूत्रान्तर्गत प्रश्नोत्तरी	233
250.	उपाध्याय शब्द के विशेष अर्थ	236

1. अरिहंत पद का विवेचन

➠ **नमो अरिहंताणं :** अरिहंत परमात्मा को नमस्कार हो । अरि यानि शत्रु हंत यानि नाश, राग-द्वेष-क्रोध-मान-माया-लोभ इन 'छ' अंतरशत्रु का नाश करते है वो ही "अरिहंत" कहलाते है ।

➠ **अरिहंत परमात्मा के 12 गुण :**

(1) **अपायापगमातिशय :** अरिहंत परमात्मा जहाँ जहाँ विचरते है । उनके चारो दिशा में पचीश पचीश योजन और उपर (उर्ध्व दिशामें) साढे बार योजन व नीचे (अधो दिशा में) साढे बार योजन इस तरह सवासो योजन तक सभी प्रकार के कष्ट शान्त होते है वो ही है अपायापगमातिशय । इतने सारे कष्टो को दूर करने की शक्ति व सामर्थ्य अरिहंत बिना किसी में नहि होती ।

(2) **ज्ञानातिशय :** अरिहंत परमात्मा को केवलज्ञान होने के बाद लोक-अलोक के संपूर्ण भाव को देख सकते है वो ज्ञानातिशय. अनुत्तर वासी देवता के संशय भी इसी ज्ञान से दूर होते है ।

(3) **वचनातिशय :** अरिहंत परमात्मा जब देशना देते है तब उनकी वाणी पैंतीस गुणों से युक्त होती है । देव-मनुष्य-तिर्यञ्च सभी अपनी अपनी भाषा में समज सकते है । समझने के बाद सभी जीव अपनी अपनी योग्यतानुसार परमात्मा की वाणी द्वारा बोध प्राप्त करते है वो ही प्रभु का वचनातिशय है ।

(4) **पूजातिशय :** सभी देवता, असुर, मानव व सर्वश्रेष्ठ एश्वर्य को धारण करने वाले 64 इन्द्र परमात्मा के पांचो कल्याणको की भावपूर्वक भक्ति एवं पूजा करते है । एसी पूजा जगत में किसी की नहि होती है । बत्तीस लाख विमान के अधिपति इन्द्र महाराजा

भी परमात्मा को गोद में धारण करके अभिषेक करते है वो पूजातिशय ।

(5) **अशोकवृक्ष :** जहाँ जहाँ अरिहंत परमात्मा विचरते है उन की उंचाई से 12 गुना उंचा होता है। इस वृक्ष का विस्तार एक योजन जितना होता है।

(6) **सुरपुष्पवृष्टि :** देवता जल एवं थल में उत्पन्न होने वाले पांचो वर्णो से विकस्वर सुगंधी पुष्पो की निरंतर वृष्टि करते है चारों तरफ जानु प्रमाण एक योजन तक पुष्पवृष्टि करते है उसमें स्वस्तिक, श्रीवत्स, आदि आकार फुलो द्वारा बन जाते है। परमात्मा के प्रभाव से उन पुष्पो पर चलने से पुष्प के जीव को बिल्कुल पीड़ा भी नहि होती मगर अमृत की तरह सिंचीत बनकर ज्यादा प्रफुल्लित बनते हैं ।

(7) **दिव्यध्वनि :** परमात्मा जब मालकोश राग में देशना देते हैं। उस समय देवता वीणा-वेणु आदि के नाद द्वारा मिश्रीत करके सूर पूरकर परमात्मा की देशना को एक योजन तक फैलाते है । देवताओं के वांजीत्र से परमात्मा की वाणी ज्यादा आहलाद्क बनती है ।

(8) **चारमश्रेणी :** परमात्मा जब विहार करते हैं या देशना देते है उस समय परमात्मा के दोनों तरफ चामर वींझाते है। चामर नीचे से उपर व उपर से नीचे की और जाते है उसी तरह चामर के साथ जो परमात्मा को मस्तक झुकाता है वो उर्ध्वगति प्राप्त करता है ।

(9) **सिंहासन :** पादपीठ से युक्त सुवर्ण के सिंहासन पर परमात्मा बिराजमान होते है वो ही सिंहासन जब परमात्मा विहार करते है

तब आकाश में चलता है जब परमात्मा देशना देते है तब चारों दिशा में चार सिंहासन मोतीओकी मालाओ से युक्त होते है एक तरफ परमात्मा बिराजमान होते है तीन दिशामें परमात्मा जैसे प्रतिबिम्ब होते है ।

(10) **भामंड़ल :** जब अरिहंत परमात्मा के चार घाती कर्म का क्षय होता है तब सूर्य से भी 12 गुणा तेजस्वी भामंड़ल परमात्मा के मस्तक के पीछे भाग में उत्पन्न होता है वो परमात्मा के तेज को संहर लेता है नहि तो परमात्मा का तेज इतना तेजस्वी होता है कि परमात्मा का दर्शन भी दुर्लभ बन जाता है मगर भामंडल होने से परमात्मा के दर्शन अच्छी तरह होते है ।

(11) **देवदुंदुभि :** जब परमात्मा विचरते है उस समय आकाश में उंचे देव-दुंदुभि का गंभीरनाद उत्पन्न होता है । वो इस प्रकार घोषणा करते हैं हे भव्य जीवो ! प्रमाद को छोड़कर परमात्मा को भजो ! इस तरह गर्जना द्वारा प्रेरणा देते है ।

(12) **तीनछत्र :** शरद ऋतु के चंद्र जैसे निर्मल, पथ्वी, पाताल व स्वर्गलोक इस तरह तीन लोक के साम्राज्य के स्वामी है एसा दिखाने हेतु परमात्मा के उपर तीन छत्र शोभायमान बनते है ।

(1) **अढार दूषण रहित अरिहंत परमात्मा :**

1. हिंसा 2. अलीक 3. अदत्त 4. क्रीडा 5. हास्य 6. रति 7. अरति 8. शोक 9. भय 10. क्रोध 11. मान 12. माया 13. लोभ 14. मद 15. परिग्रह 16. मत्सर 17. अज्ञान 18. निद्रा ।

(2) **चार मूल अतिशय :** अरिहंत परमात्मा को जन्म से लगाकर मोक्ष तक साथ में रहने वाले ये चार अतिशय है ।

रत्नसंचय : ५

(1) तीर्थंकर परमात्मा का शरीर सभी जीवों से ज्यादा सुंदर होता है। रोग-शोक-परसेवा आदि कुछ नहि होता ।

(2) परमात्मा का श्वासोश्वास कमलफुल की तरह सुगंधी होता है ।

(3) परमात्मा के शरीर में मांस व खून दोनों दूध की तरह सफेद होते है।

(4) परमात्मा के आहार-निहार कोई भी आंखो से देख नहि सकते।

➠ रंग में जैसे श्वेतरंग प्रधान है उसी तरह पंच परमेष्ठि में अरिहंत पद प्रधान स्थान पर होने से श्वेतवर्ण द्वारा उनका ध्यान धरा जाता है अरिहंत परमात्मा में उपकार का भंडार भरा हुआ है ।

(3) कर्मक्षय से प्रगट होने वाले अग्यार अतिशय :

(1) परमात्मा जहां विचरते वहां पर करोड देवीदेवता, मानव, तिर्यञ्च एक योजन प्रमाण भूमि में पीडा बिना समावेश हो जाता है ।

(2) परमात्मा की देशना को देव-मनुष्य-तिर्यञ्च अपनी अपनी भाषा से सुनते हैं ।

(3) परमात्मा के पीछे भामंडल सूर्य से भी 12 गुणा ज्यादा तेजवाला होता है ।

(4) प्रभु जहां विचरते वहां पर सवा सो योजन प्रमाण में किसी भी प्रकार का रोग नहि होता ।

(5) परमात्मा के समवसरण में बैठने वाले जीव को पूर्व भव के जन्मजात वैर उत्पन्न नहि होते ।

(6) परमात्मा जहां विचरते वहां पर तीड-उंदर आदि का उपद्रव नहि होता ।

(7) परमात्मा जहां विचरते वहां पर मरकी, आकस्मिक भय, मृत्यु आदि का डर दूर चला जाता है ।

(8) अतिवृष्टि (लीला दुष्काल) नहि होती ।

(9) अनावृष्टि (सुका दुष्काल) नहि होती ।

(10) दुर्भिक्ष (भयंकर दुष्काल) नहि होता ।

(11) स्वचक्र-स्थानिक राजा, परचक्र-दूसरे राजा आदि का भय लगता नहि है ।

(4) देवकृत 19 अतिशय :

(1) परमात्मा जहाँ विचरते है वहां पर धर्मचक्र आगे से आगे घूमता रहता है ।

(2) श्वेत सुंदर चामर की जोड़ी दोनों तरफ चलती है ।

(3) पादपीठ व सिंहासन दोनो आकाश मार्ग पर चलते है जहां परमात्मा बिराजमान होते है वहां स्थित हो जाते है ।

(4) तीन छत्र आकाश में परमात्मा की उपर अद्धर चलते है ।

(5) रत्नमय ध्वज छोटी छोटी ध्वजा से युक्त चलता है ।

(6) परमात्मा जब चलते हैं तब आगे के दो कमल पर दो पैर रखते हैं । सात कमल पीछे होते है जैसे पैर उठाते वैसे एक कमल आगे आ जाता है ।

(7) समवसरण में प्रथम गढ रत्न का वैमानिक देव बनाते है दूसरा गढ सुवर्ण का ज्योतिष् देव बनाते है, तीसरा गढ चांदी का भवनपति देव बनाते है ।

(8) परमात्मा एक दिशा में बैठते हैं बाकी की तीन दिशा में तीन प्रतिबिंब चामर छत्र से युक्त होते है ।

(9) परमात्मा जहां देशना देते हैं वहां पर 12 गुणा उंचा अशोक वृक्ष होता है ।

(10) परमात्मा जहां विचरते वहां पर मधुर ध्वनि से देवदुंदुभि बजती हैं।

(11) परमात्मा जहां विहार करते वहां पर वृक्ष भी नमस्कार करते है।

(12) जहां पर विचरते हैं वहां पर एक योजन तक संवर्तक वायु कचरा दूर करते है ।

(13) परमात्मा की देशना में देवता दिव्यध्वनि द्वारा सुर पूरते हैं ।

(14) परमात्मा जहां विचरते हैं वहां पर पक्षीभी प्रदक्षिणा देते है ।

(15) परमात्मा जहां बिराजते है वहां पर मेघकुमार सुगंधी जल की वृष्टि करते है ।

(16) जहां देशना देते है वहां पर देवता पांचवर्ण के फुलो की वृष्टि होती है ।

(17) प्रभु के केश-रोम-नख बढते नहि है ।

(18) प्रभु के पास कम से कम एक करोड देवी देवता हाजर रहते हैं।

(19) प्रभु जहां विचरते हैं वहां पर 'छ' ऋतु एक साथ फलीभूत होकर अनुकुल बनती है ।

2. सिद्ध पद का विवेचन

नमो सिद्धाणं : सिद्ध परमात्मा को नमस्कार हो ।

लम्बे समय से बांधे हुए आठ प्रकार के कर्म को धर्मध्यान व शुक्लध्यान रुपी अग्नि द्वारा जो जलाते है, वो सिद्ध ।

सिद्ध भगवंत के आठ गुण है ।

(1) **अनंतज्ञान :** जब संपूर्ण ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है तब वो तीनों काल के चराचर जगत को, रुपी अरुपी पदार्थ को, एवं

अनेक सभी पर्यायो को हाथ में रहे हुए आमला की तरह देख सकते हैं ।

(2) अनंत दर्शन : दर्शनावरणीय कर्म के क्षय होने से जगत के सभी पदार्थो को सामान्य रुप से देख सकते है वो अनंतदर्शन ।

(3) अव्याबाध सुख : वेदनीय कर्म का जब क्षय हो जाता है तब कीसी भी प्रकार की पीड़ा (दुःख) उत्पन्न नहि होती है सिद्ध भगवंत पीड़ा बिना के सुख को अनुभव करते है वो अब्याबाध सुख ।

(4) अनंत्त चारित्र : जब संपूर्णरुप से मोहनीय कर्म का क्षय हो जाता है तब निरंत्तर आत्मस्वरुप में रमणता प्रगट होती है । वीतरागता गुण आत्मा में प्रगट हो जाय वो अनंत चारित्र ।

(5) अक्षय स्थिति : मानव के पैर में यदि बेडी आजाय तो मानव जकडा जाता है उसी तरह आयुष्य कर्म की बेड़ी से मानव चारों गति में भटक रहा है जब बेडी रुपी आयुष्य कर्म टूट जाता है तब अक्षय स्थिति प्राप्त होती है ।

(6) अरुपीपणु : नाम कर्म के कारण जीव तरह तरह के रुप धारण करता है और उसके द्वारा सुखी दुःखी बनता है नाम कर्म के क्षय से जीव अरुपी पणां प्राप्त करता है ।

(7) अगुरुलघुपणुं : गोत्र कर्म के कारण जीव के उंचे नीचे भाव प्राप्त होते है । जब गोत्र कर्म का क्षय हो जाता है तब अगुरुलघु गुण प्राप्त होता है ।

(8) अनंतवीर्य : अंतरायकर्म के कारण जीव अपने आत्मा में रहे हुए दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य आदि गुणों को नाश करता

है मगर जब अंतराय कर्म का नाश हो जाता है तब स्वगुण प्रवर्तन में अनंतवीर्य प्रगट होता है ।

सिद्ध परमात्मा में शाश्वता सुख का भंडार भरा हुआ है जब एक जीव सिद्ध अवस्था को प्राप्त करता है तब एक जीव अव्यवहार राशि में से नीकलकर व्यवहार राशिमें आता है अपन सभी अव्यवहार राशि यानि निगोद में से बहार आये उसमें सिद्ध भगवंत का बडा उपकार है मगर अपन जब शुद्ध चारित्र का पालन करके सिद्ध पद को प्राप्त करे तब उनके उपकार का ऋण चूकवा सकते है ।

सिद्धपद का स्थान कहाँ ? :

बारह देवलोक नव ग्रैवेयक जाने के बाद पांच अनुत्तर विमान आते है उनके उपर 12 योजन जाने के बाद पृथ्वीकाय मय सिद्धशीला आती है जो स्फटिकरत्न की है जिसकी लम्बाई 45 लाख योजन, चौडाई 8 योजन व अंतिम भाग मक्खी के पंख जितना पतला होता है उस सिद्धशिला के एक योजन उपर जाने पर लोक के अग्रभाग पर सिद्ध के जीव रहे हुए है यानि अनुत्तर विमान से **21** योजन दूरी पर सिद्ध के जीव रहे हुए है । **(आवश्यक नि. दीपीका)**

सिद्धपद का वर्ण लाल क्यों ?

जिस तरह सुवर्ण गरम करने के बाद लाल वर्ण वाला बनता है उसी तरह सिद्धपद प्राप्त करने हेतु आठो कर्मो का क्षय करने के लिये ध्यानरुपी अग्नि द्वारा आत्मा को तपाकर लाल बनाते है उसी कारण लाल वर्ण का ध्यान धरा जाता है । जिस तरह रोग बिना का व्यक्ति लालबुंद जैसा लगता है उसी तरह सिद्धपद लाल वर्ण का है । **(सूत्र संवेदना)**

3. आचार्य पद का विवेचन

➡ **नमो आयरियाणं :** आचार्य भगवंत को नमस्कार हो ।

तीर्थंकर की अनुपस्थिति में शासन का भार आचार्य भगवंत वहन करते हैं जो जिनशासनरुपी राजभवन में राजा के स्थान पर है जो शुद्ध प्ररुपक आचार्य महाराजा कहलाते हैं पांच प्रकार के आचार को स्वयं पालन करके दूसरो को पालन कराने का प्रयत्न करते हैं जिनशासन में सूरि भगवंत का ध्यान पीतवर्ण से करने का कहा है राजा-महाराजा सुवर्णालंकार से युक्त होते है उसी तरह आचार्य भगवंत भी 36 प्रकार के आचाररुपी अलंकार से युक्त होते है आचार्य भगवंत में आचार का भंडार भरा हुआ है।

आचार्य भगवंत के 36 गुण :

(1) पांच इन्द्रिय के विकारभाव को रोकनेवाले............... (5)
(2) नव ब्रह्मचर्य की वाड को धारण करनेवाले............. (9)
(3) चार कषाय से मुक्त बनने हेतु प्रयत्न करनेवाले .... (4)
(4) पांच महाव्रत के भार को उठाकर चलनेवाले............ (5)
(5) पांच प्रकार के आचार को शुद्धरुप से पालनेवाले..... (5)
(6) पांच प्रकार की समिति में अपना मन लगानेवाले ..... (5)
(7) तीन प्रकार गुप्ति द्वारा रक्षण करनेवाले..................... (3)

कुल **36**

हरिभद्र सूरिजीने संबोधप्रकरण ग्रंथ में आचार्य भगवंत की संपूर्ण छत्रीसी बनायी है यानि 36 × 36 करने से **1296** गुण सूरि भगवंत के होते है । **(सूत्र संवेदना)**

4. उपाध्याय पद का विवेचन

➡ **नमो उवज्झायणं :** उपाध्याय भगवंत को नमस्कार हो ।

उप यानि पास में अधि यानि अध्ययन (ज्ञान) जो ज्ञान की पास में रहे वो उपाध्याय । उपाध्याय भगवंत जिनशासन में मंत्री के स्थान पर है उपाध्यायभगवंत का ध्यान नील वर्ण से होता है क्योंकि जिस तरह उद्यान (बाग) में माली पाणी के द्वारा संपूर्ण बाग को हराभरा बनाता है उसी तरह उपाध्याय भगवंत विनय एवं ज्ञान द्वारा चतुर्विघ संघ, समुदाय को भी हराभरा रखते है उपाध्याय भगवंत में विनय का भंडार भरा हुआ है विनय द्वारा ज्ञान की प्राप्ति व वृद्धि होती है ।

➡ **उपाध्याय भगवंत के 25 गुण**

(1) आचारांग सूत्र
(2) सूयडांग सूत्र
(3) ठाणांग सूत्र
(4) समवायांग सूत्र
(5) भगवती सूत्र
(6) ज्ञातधर्मकथांग सूत्र
(7) उपासकदशांगसूत्र
(8) अंतगड़दशांग सूत्र
(9) अनुत्तरोववाई सूत्र
(10) प्रश्नव्याकरण सूत्र
(11) विपाक सूत्र
(12) औपपातिक सूत्र
(13) रायपसेणी सूत्र
(14) जीवाभिगम सूत्र
(15) पन्नवणा सूत्र
(16) जंबूद्वीपपन्नत्ति सूत्र
(17) कप्पिया सूत्र
(18) कप्पवडिसया सूत्र
(19) पुष्पिका सूत्र
(20) पुष्पचूलिका सूत्र
(21) चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र
(22) सूर्य प्रज्ञप्ति सूत्र
(23) वह्निदशांग सूत्र
(24) चरण सित्तरी
(25) करण सित्तरी ।

आगम ग्रंथ का भंडार वो ही उपाध्याय भगवंत का गुण है और वो गुण की प्राप्ति विनय के द्वारा होती है । हरिभद्र सूरिजी ने संबोध प्रकरण ग्रंथ में उपाध्याय भगवान की संपूर्ण पच्चीशी बतायी है यानि 25 × 25 गुणो करने से **625** गुण उपाध्याय भगवंत के होते है ।

5. साधुपद का विवेचन

➠ **नमो लोए सव्व साहूणं :** लोक में (ढाई द्वीप) में रहे हुए समस्त साधु भगवंतो को मेरा नमस्कार हो ।

साधु भगवंत सिर्फ ढाई द्वीप में है जिस समय अपन यह पद बोलते है तब ढाई द्वीप में रहे हुए सभी साधुओ को नमस्कार होता है निर्वाण साधक योगो की साधना करने वाले, प्रत्येक प्राणीमात्र के उपर समभाव रखनेवाले समता के व सहाय के भंडार साधु भगवंत है । संयम पालन करनेवाले महात्मा को वो सहायता भी करते है । साधुपद का ध्यान श्याम वर्ण से होता है क्योंकि जिस तरह लकडे जलने जलने के बाद काले हो जाते है उसी तरह साधु भी तप व ध्यानरुपी अग्नि के द्वारा कर्म को जलाकर काले बनते है और मलपरिषह को सहन भी करते है । जैसे धन्ना अणगार... एसे साधु जिन शासन में वंदनीय है ।

➠ **साधु भगवंत के 27 गुण :**

→ पांच महाव्रत को धारण करने वाले .... (5)

→ रात्रि भोजन विरमण व्रत को पालनेवाले................... (1)

→ 'छ' काय जीव की रक्षा करने वाले .... (6)

→ पांच इन्द्रिय के उपर संयम रखनेवाले..................... (5)

→ तीन गुप्तिओ का पालन करनेवाले .... (3)

→ लोभ कषाय का निर्ग्रह करनेवाले .... (1)

→ क्षमागुण को धारण करने वाले .... (1)
→ अपने मन को हंमेशा निर्मल रखनेवाले .... (1)
→ वस्त्रादि का शुद्ध पडिलेहन करनेवाले .... (1)
→ बावीस प्रकार के परिषहो को सहन करनेवाले .... (1)
→ मरणांत उपसर्गको सहन करनेवाले .... (1)
→ प्रतिदिन संयम योग में उपयुक्त .... (1)

कुल .... **27 गुण**

∞ हरिभद्रसूरिजी ने संबोधप्रकरण ग्रंथ में साधु के 27 गुणो की संपूर्ण सत्तावीसी बताई है यानि 27 × 27 गुण करने से **729** गुण साधु भगवंत के बताये है ।

6. आवश्यक निर्युक्ति ग्रंथाधारे पांच पद का अर्थ

(1) **अरिहंत पद :** अरिहंत परमात्मा वंदन एवं नमस्कार के योग्य है अरिहंत परमात्मा पूजा व सत्कार के योग्य है अरिहंत परमात्मा सिद्धिगमन के योग्य है उसके कारण वो अरिहंत कहलाते है । **(आ.नि.गा. 890)**

(2) **सिद्धपद :** जिस तरह बीज जलने के बाद अंकुरा की उत्पत्ति होती नहि है। उसी तरह कर्मरुपी बीज जलने के बाद भवरुपी अंकुरा की उत्पत्ति नहि होती । **(आ.नि.गा. 891)**

(3) **आचार्यपद :** पांचे प्रकार के आचार का पालन जो करते है और दूसरो को कराते है यानि जो आचार बताते सिखाते है वो आचार्य कहलाते है। **(आ.नि. गा. 894)**

(4) **उपाध्याय पद :** परमात्मा की देशनानुसार गणधर भगवंतो द्वारा गुंथी हुयी

द्वादशांगी को पंडित पुरुष स्वाध्याय कहते है जो द्वादशांगी का स्वाध्याय करके वाचना देते है वो उपाध्याय कहलाते है । **(आ.नि.गा. 1001)**

(5) **साधुपद :** निर्वाण साधक योगो की जो साधु साधना करते है और समस्त प्राणीमात्र के उपर समभाव-करुणाभाव रखते है वो भावसाधु कहलाते है।

(आ.नि. गा. 1010)

7. शील के 18,000 भेद

➡ 'अढार सहस शीलांग धारा' प्रतिदिन प्रतिक्रमण मे यह शब्द बोला जाता है जो साधु 18,000 शीलांगरथ को धारण करते है उनको में मस्तक झुकाकर वंदन करता हूँ ।

➡ साधु का धर्म 10 प्रकार का = **10 यतिधर्म** - क्षमा, मार्दव, आर्जव, मुक्ति, तप, संयम, सत्य, शौच, आकिंचन व ब्रह्मचर्य इन 10 धर्म को दस काय के साथ गुणना ।

➡ **दसकाय :** पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, अजीवकाय

10 × 10 = 100

➡ **पांच इन्द्रिय :** स्पर्शेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, श्रोत्रेन्द्रिय

100 × 5 = 500

➡ **चारसंज्ञा :** आहार संज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा, परिग्रहसंज्ञा

500 × 4 = 2000

➡ **तीनयोग :** मनोयोग, वचनयोग, काय योग

2000 × 3 = 6000

➡ **तीन करण :** करण करावण, अनुमोदन

6000 × 3 = 18,000

8. सम्यग्दर्शन के 67 भेद

➠ सर्वज्ञ परमात्माने जो बात बतायी है उनके उपर जो श्रद्धा रखता है परमात्मा के वचन सत्य है एसी बुद्धि जिसके हृदय में है वो सम्यग्दर्शन । उनके **67** भेद है । समकित के 67 बोल वो ही सम्यग्दर्शन के **67** भेद है दर्शनपद में सद्भावना का भंडार भरा है वो ही भाव अपनी आत्मा में भरने का है ।

सम्यग्दर्शन के 67 भेद :

1.	श्रद्धा के	-	4 प्रकार
2.	लिंग के	-	3 प्रकार
3.	विनय के	-	10 प्रकार
4.	शुद्धि के	-	3 प्रकार
5.	दूषण के	-	5 प्रकार
6.	प्रभावक के	-	8 प्रकार
7.	भूषण के	-	5 प्रकार
8.	आगार के	-	6 प्रकार
9.	जयणा के	-	6 प्रकार
10.	स्थान के	-	6 प्रकार
11.	लक्षण के	-	5 प्रकार
12.	भावना के	-	6 प्रकार
कुल सम्यग्दर्शन के		-	**67 प्रकार**

9. सम्यग्ज्ञान के 51 भेद

➠ जीव-अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध, मोक्ष, इस तरह नवतत्त्वो के पदार्थ को जो जानता है वो सम्यग्ज्ञान कहलाता है। सभी ज्ञान का मूल विनय है विनय से ही ज्ञान प्रगट होता है। सम्यग्ज्ञान में सद्विचारो का भंडार भरा हुआ है वो ही विचारो का चिंतन-मनन अपने आत्मकल्याण हेतु करने का है।

(1) **मतिज्ञान के 28 भेद :**

व्यंजनावग्रह के	- 4 भेद
अर्थावग्रह के	- 6 भेद
ईहा के	- 6 भेद
अपाय के	- 6 भेद
धारणा के	- 6 भेद
	28 भेद (गुण)

(2) **श्रुतज्ञान के 14 भेद :** 1. अक्षरश्रुत 2. अनक्षरश्रुत 3. संज्ञीश्रुत 4. असंज्ञीश्रुत 5. सम्यक्श्रुत 6. मिथ्याश्रुत 7. सादिश्रुत 8. अनादिश्रुत 9. सांतश्रुत 10. अनंतश्रुत 11. गमिकश्रुत 12. अगमिकश्रुत 13. अगंप्रविष्ट अंगबाह्य इस तरह श्रुतज्ञान के 14 गुण है.

(3) **अवधिज्ञान के छ भेद :** 1. अनुगामिक 2. अनुगामिक 3. वर्धमान 4. हीयमान 5. प्रतिपाति 6. अप्रतिपाति इस तरह 6 गुण है।

(4) **मनःपर्यवज्ञान के दो भेद :** 1. ऋजुमति 2. विपुलमति = 2 गुण

(5) **केवलज्ञान का एक भेद :** 1. लोकालोक प्रकाशक = 1 गुण

28 + 14 + 6 + 2 + 1 = 51 गुण सम्यग्ज्ञान के

10. सम्यग् चारित्र के 70 भेद

➠ चय ते संचय कर्म नो, रिक्त करे वली जेह
चारित्र निर्युक्ति ए कह्युं, धन धन जगमां तेह

जो पाप कर्म इक्कट्ठे होते है उनको खाली करने का स्थान चारित्र है जिसके अन्तर्गत अशुभक्रिया - पापव्यापार का त्याग बताया है और प्रमाद के त्याग साथ शुभक्रिया का व्यापार बताया है। चारित्र के अन्तर्गत हंमेशा अप्रमत्त भाव होना जरुरी है इसलिये चारित्र में सद्वर्तन का भंडार भरा है वो अपनी आत्मा मे लाना अति जरुरी है उसके 70 भेद है चरण सित्तरी के **70** भेद वो ही चारित्र के 70 भेद है।

➠ **चारित्र के 70 गुण :**

1. महाव्रत के - 5 गुण
2. क्षमाधर्म के - 10 गुण
3. संयम धर्म के - 17 गुण
4. वैयावच्च के - 10 गुण
5. ब्रह्मचर्य के - 9 गुण
6. तप के - 12 गुण
7. चार कषायजय के - 4 गुण
8. तीन योग के - 3 भेद

कुल चारित्र के 70 गुण है।

11. सम्यग् तप के 50 भेद

➠ भयंकर कर्मो को तोडने हेतु बार सूर्य समान बार प्रकार के तप बताये है। कषाय रहित 12 तप में से कीसी भी तप की आराधना चीकने में चीकने कर्मो को खपाता है। जब तक तप चलता है तब तक समताभाव रखना अति जरुरी है। सम्यग् तप में संतोष का भंडार भरा है वो भंडार

अपनी आत्मा में स्थिर करके तप करने का बताया है। सम्यग् तप के 50 गुण बताये है।

∞ अनशन तप के	- 2 गुण	∞ प्रायश्चित तप के	- 10 गुण
∞ उणोदरी तप के	- 2 गुण	∞ विनय तप के	- 7 गुण
∞ वृत्तिसंक्षेप के	- 4 गुण	∞ वैयावच्च तप के	- 10 गुण
∞ रसत्याग तप के	- 1 गुण	∞ स्वाध्याय तप के	- 5 गुण
∞ कायक्लेश तप के	- 1 गुण	∞ ध्यान तप के	- 4 गुण
∞ संलीनता तप के	- 2 गुण	∞ कायोत्सर्ग के	- 2 गुण
बाह्य तप के	**12**	व अभ्यंतर तप के	**38**

कुल तप के **50** गुण है।

12. खीम ऋषि के घोर अभिग्रह

➠ उपदेश रहस्य ग्रंथ में उपाध्याय यशोविजयजी ने बताया है कि मुमुक्षु आत्मा को वैराग्यभाव दृढ बनाने हेतु रोज नये नये अभिग्रह धारण करना चाहिए और प्रतिदिन यथाशक्ति छ विगई में से एक एक विगई का त्याग करना चाहिए। एसा भी न हो सके तो कम से कम एक द्रव्य का त्याग करना चाहिए।

➠ **खीम ऋषि का जीवन व अभिग्रह :** चित्तोडगढ के पास वडगाम गांव मे **बोहा** नामका निर्धन श्रावक प्रतिदिन पांच द्रम्म का घी लाकर चितोडगढ में बेचने जाता था। एक बार पैर लपसने से घी ढुल गया। लोगों को मालूम पड़ा पांच द्रम्म इक्कट्ठा कर के दे दिया। मगर दूसरी बार एसा हुआ तब वैराग्य जागृत हुआ और यशोभद्रसूरिजी के पास संयम ग्रहण किया। अपने चीकने कर्म को खपाने हेतु गुरु आज्ञा लेकर एकाकी विहार किया।

(1) प्रथम अभिग्रह : मालवा प्रदेशके थामणोद गांव मे तलाव के

किनारे पर काउसग्ग ध्यान में खडे रहे। उस ब्राह्मण पुत्रोने साधु के उपर लाठी-मुठी व पत्थर के प्रहार करने लगे। समताभाव से सहन किये। संयम के प्रभाव से अधिष्ठायक देवने ब्राह्मणपुत्रो को बांध लिया। मुनि के चरणोदक से सभी को छोडा तब सभी ने क्षमा मांगी। यथाशक्ति द्रव्य मुनि के चरणों में रखा वो जीर्णोद्धार में उपयोग करके क्षमामूर्ति का नाम बोहमुनि में से क्षमा ऋषी-खीमऋषि प्रसिद्ध हुआ।

(2) दूसरा अभिग्रह : एसा अभिग्रह धारणा किया की जिस दिन गौचरी में 'क' नाम के पांच द्रव्य मिले उस दिन पारणा करना। (1) कंसार (2) करंबो (3) कोदरा (4) केर (5) काकडी की सब्जी

(3) तीसरा अभिग्रह : एसा अभिग्रह धारण किया कि जिस दिन गौचरी में '**ख**' नाम के पांच द्रव्य मिले तो पारणा करना (1) खारेक (2) खजुर (3) खाजा (4) खांड (5) खोपरा।

(4) चतुर्थ अभिग्रह : एसा अभिग्रह धारण किया की पारणे में 'ग' नामके तीन द्रव्य मिले तो पारणा करना (1) गुड (2) गुदा की सब्जी (3) गोरस वि.

(5) पांचवा अभिग्रह : मिथ्यात्वी राजा से भ्रष्ट हो गया हो, दोपहर के समय कंदोई के दुकान पर बैठा हो, राजा के सैन्य में सैनिक बना हुआ हो, मस्तक के बाल खुल्ले हो, हाथ में भाला हो उस भाला के द्वारा कंदोई की दुकान से 21 पुड़ला वहोरावे तो पारणा करना। तीन मास आठ दिन के बाद ये अभिग्रह पूर्ण हुआ। कृष्ण नाम के व्यक्तिने वहोराकर पूछा कि मेरा आयुष्य कितना ? ऋषि ने कहा छ मास, तो मैं राजा बनूँगा। तब ऋषि ने कहा

राजेश्वरी वो नरकेश्वरी इस प्रकार बोध देकर दीक्षा दी । दीक्षा पालन करके देवलोक में गया ।

(6) **छट्ठा अभिग्रह :** आलान स्तंभ को तोडकर दौडता हुआ हाथी अपनी सूंढ द्वारा प्रसन्न होकर लड्डू पांच वहोरावे तो पारणा करना । पांच महिना व 18 दिन के बाद मदोन्मत हाथी आलान स्तंभ को तोडकर कंदोई की दुकान पर आकर खडा हो गया मुनिवर को देखते ही प्रसन्नता के साथ अपनी सूंढ द्वारा पांच लड्डू वहोरावे ।

(7) **सातवा अभिग्रह :** घर में बडी बहु हो, सास से दुःखित हो, आंख में से आंसु गिरते हो, वहाँ से रीस चढाकर अपने पिता के घर जाती हो । गरीब कठियारा घी-गुड के साथ पांच खाजा उस बहु को देवे और बहु वहोरावे तो पारणा करना । बहोत समय पश्चात् मुनिवर पहाड से नीचे उतर रहे है बहु खाने की तैयारी कर रही है मुनिवर को देखते ही भाव आया और वहोराया ।

(8) **आठवां अभिग्रह :** गले में काला रंग हो, शरीर सफेद रंग का हो, नासिका वींधी हो पुंछ बंध हो (यानि आधी पुंछ) एसा बेल जो गुड वहोरावे तो पारणा करना । वहोत समय के पश्चात धारा नगरीमें मुनिवर वहोरने जाते थे । कीसि व्यापारी के गोदाम में गुड भरा हुआ था । बेल वहां पर खडा था, ऋषि को देखते ही अपने सींग द्वारा गुड वहोराया अभिग्रह पूर्ण हुआ । उस समय व्यापारी को विचार आया मैं मानव बनकर एसा लाभ न लीया जो जानवर ने लीया । उसी समय व्यापारी के भावोल्लास जगते ही सभी गुड बेचकर पार्श्वनाथ का जिनालय बनवाकर **गुडपिंड** नाम से जिनालय प्रसिद्ध हुआ व व्यापारी ने यशोभद्रसूरि के पास दीक्षा ली ।

(9) **नवमा अभिग्रह :** वसंतऋतु में एसा अभिग्रह किया की कोई बन्दर सांकल में बंधा हो और आम का रस वहोरावे तो पारणा करना। एक बार एक बनीया मटके में केरी का रस भर कर जा रहा था। पास में ही बंदर आया और ऋषि भी पास में आया तुरंत बंदर ने मटका मुनिवर के पात्रमें खाली कर दिया।

(10) **दसवां अभिग्रह :** मदोन्मत हाथी को कोई माजी वश करे और वो हाथी अपनी सूंढ द्वारा खीचडी-खाजा-खांड वहोरावे तो पारणा करना। शासन देवी की सहाय से वो भी अभिग्रह पूर्ण हुआ। इस तरह ऋषिने कुल 84 अभिग्रह धारण किये थे।

(उपदेश प्रासाद) (1589 में कवि लावण्यसमय कृत रास)

13. पांच आगम वाचना का समय

वाचना	वीरसंवत	स्थान	निश्रा	निमित्त	श्रुत
प्रथम	169	पाटलीपुत्र	स्थूलभद्रसूरि	दुष्काल	11 अंग 1 पूर्व
द्वितीय	305	कुमारगिरि पर्वत	आर्यसुस्थित सूरि	पुष्पमित्र चढाई	11 अंग 10 पूर्व
तृतीय	502	मंदसौर	आर्यरक्षितसूरि	दुष्काल	चार अनुयोग विभाजन
चतुर्थ	840	उ.मथुरा/ वल्लभीपुर	स्कंदिलसूरि नागार्जुनसूरि	दुष्काल	ग्रंथरुपे आलेखन
पंचम	980	वल्लभीपुर	देवर्द्धिगणीक्षमा भूतदिन्नसूरि	पाठ संकलन	84 आगम ताडपत्री लेखन

(आचारांग सूत्र भा. 1)

14. कल्पसूत्र का प्रथम वांचन

➠ प्रभु महावीर का मोक्षगमन पश्चात् 993 साल के समय में आनंदपुर नगर में वल्लभीवंश के राजवी भट्टारक सेनापति के चार पुत्र थे । धनसेन, द्रौणसिंह, ध्रुवसेन, घरभट्ट । इसमें ध्रुवसेन नामके तृतीयपुत्र का मरण होते ही राजा के हृदय में बडा आघात लगा । उस दुःख को दूर करने हेतु सकल संघ के बीच में प्रथमवार कल्पसूत्र का वांचन हुआ । कल्पसूत्र की रचना चौदपूर्वी भद्रबाहु स्वामीने पूर्व में से उद्धर करके की थी ।

(कल्पसूत्र)

15. पल्योपम-सागरोपम का प्रमाण

➠ 8 यव	=	1 उत्सेघांगुल
24 उत्सेघांगुल	=	1 हाथ
4 हाथ	=	1 धनुष्
2000 धनुष्	=	1 कोश
4 कोश	=	1 योजन
1 योजन	=	12 किलोमीटर (प्रायः)

➠ 12 किलोमिटर लंबा, चोडा व गहरा खड्डा बनाना उसके अन्तर्गत जन्मे हुए बालक के बाल को ठांस ठांस के भरना । 100 साल का व्यक्ति 100 साल के बाद एक बाल बहार निकाले जब पूरा खड्डा हो जाय तब एक पल्योपम का प्रमाण पूर्ण होता है ।

➠ देवकुरु - उत्तरकुरु क्षेत्र के 1 से 7 दिन के जन्मे हुए बालक के जब 8 बाल इक्कट्ठे होते है तब हरिवर्ष क्षेत्र के युगलिक का एक बाल बनता है ।

∞ हरिवर्ष युगलिक के 8 बाल = हिमवंत क्षेत्र का 1 बाल

हिमवंत क्षेत्र के 8 बाल = अन्तर्द्विप मनुष्य का 1 बाल

अन्तर्द्विप मनुष्य के 8 बाल = महाविदेह क्षेत्र का 1 बाल

महाविदेह क्षेत्र के 8 बाल = भरतक्षेत्र का 1 बाल

इस तरह सभी क्षेत्र के बाल का 8 × 8 से गुणाकार करके 32,768 बाल भरतक्षेत्र के होते है एसे बाल यदि 1 योजन प्रमाण खड्डे में क्रम से रखने जाये तो 1 लाख 62 हजार 61 क्रोड, 27 लाख, 3600 टुकडे होते है जब संपूर्ण खड्डा भर जाय तब

33 कोडाकोडी, कोडाकोडी, कोडी

07,62,104 कोडाकोडी, कोडाकोडी

24,65,625 कोड़ाकोडी, कोडाकोडी

42,19,960 कोडाकोडी

97,53,600 कोडी. बादर वालाग्र का 1 योजन के खड्डे में समावेश होता है । सभी वालाग्र खाली हो जाय तब 1-पल्योपम

10 कोडाकोडी पल्योपम = 1 सागरोपम

20 कोडाकोडी सागरोपम = 1 कालचक्र (बृहत्संग्रहणी)

16. श्रेणिकराजा के 10 राणीओ का विशिष्ट तप दीक्षा में

	नाम	अभ्यास	संयमपर्याय	तप
1	कालीराणी	अग्यारअंग	आठ साल	रत्नावली तप
2	सुकालीराणी	अग्यारअंग	नौ साल	कनकावली तप
3.	महाकालीराणी	अग्यारअंग	दश साल	लघुसिंहनिष्क्रिडिततप
4.	कृष्णाराणी	अग्यारअंग	अग्यार साल	महासिंहनिष्क्रिडिततप
5.	सुकृष्णा राणी	अग्यारअंग	बारह साल	प्रतिमा स्वीकार
6.	महाकृष्ण राणी	अग्यारअंग	तेरह साल	सर्वतोभद्र प्रतिमा

7. वीरकृष्णा राणी	अग्यारअंग	चौदह साल	महासर्वतोभद्र प्रतिमा
8. रामकृष्णाराणी	अग्यारअंग	पंद्रह साल	भद्रोत्तर प्रतिमा
9. पितृसेनकृष्णा राणी	अग्यारअंग	16 साल	मुक्तावली तप
10. महासेनकृष्णा राणी	अग्यारअंग	17 साल	वर्धमानतप की 100 ओली

(अंतगडदशांग सूत्र वर्ग-8)

17. बड़े तपो का प्रमाण

(1) **रत्नावली तप :** 1 थी 16 उपवास चढना
16 से 1 उपवास तक उतरना
बीच में 8-8 छठ करना यानि 34 छठ करना ।
कुल - 384 दिन के उपवास व 88 पारणां करना ।
इस तरह चार बारी करने से पांच साल 2 मास 28 दिन का तप होता है ।

प्रथम बारी के पारणे में - एकासणा करना
दूसरी बारी के पारणे में - विगई त्याग एकासणां करना
तृतीय बारी के पारणे में - अलेपकृत एकासणा करना
चतुर्थ बारी के पारणे में - आयंबिल तप करना

(2) **कनकावली तप :** 1 से 16 उपवास तक चढना
16 से 1 उपवास तक उतरना
बीच में आठ-आठ अट्ठम करना यानि कुल **34** अट्ठम करना ।
इस तरह एक बारी में 1 साल 5 मास 12 दिन होता है ।
कुल चार बारी करने से 5 साल, 9 मास 18 दिन का तप का होता है । पारणा रत्नावली की तरह जानना ।

(3) **लघुसिंहनिष्क्रिडित तप :** इस तप की प्रथम बारी में 1-2-1-3-2-4-3-5-4-6-5-7-6-8-7-9
इस तरह उपवास करने से 154 उपवास व 33 पारणे होते है कुल यह तप की एक बारी 187 दिन की होती है। चार बारी मे पारणा के साथ **749** दिन का तप का होता है।

(4) **महासिंह निष्क्रिडित तप :** इस तप में 1 से 26 के बीच में 2 से 15 उपवास करते है। प्रथम बारी में 497 उपवास व 61 पारणां आते है प्रथम बारी में 558 दिन का तप होता है चार बारी पूर्ण करने पर 6 साल, 2 मास 18 दिन का तप होता है।

(5) **प्रतिमा स्वीकार :** इस तप में दत्ति का प्रमाण बताया है एक बार भोजन में जितना ले लीया वो दत्ति कहलाती है। इस तरह 1-2-3-4-5-6-7 दत्ति तक का तप बताया है।
प्रथम बारी में सप्तमसप्तमिका = 49 दिन - 196 दत्ति
द्वितीय बारी - अष्टअष्टमिका = 64 दिन - 288 दत्ति
तृतीय बारी - नवनवमिका = 81 दिन - 405 दत्ति
चतुर्थ बारी - दश दशमिका = 100 दिन - 550 दत्ति
अंत में 30 उपवास एक साथ करना। फिर पारणा करके 15 उपवास करना।

(6) **सर्वतोभद्र प्रतिमा :** प्रथम बारी में
1-2-3-4-5
5-1-2-3-4
4-5-1-2-3
3-4-5-1-2
2-3-4-5-1

इस तरह प्रथम बारी में 75 उपवास 25 पारणा आते है कुल 100 दिन का तप चार बारी पूर्ण करते 500 दिन का यह तप होता है।

(7) सर्वतोभद्र प्रतिमा : 1-2-3-4-5-6-7 इस तरह सात बार प्रथम बारी में 196 उपवास 49 पारणा आते है कुल 245 दिन की एक बारी चार बारी परिपूर्ण करने पर 980 दिन का तप होता है ।

(8) भद्रोत्तर प्रतिमा : 5-6-7-8-9 इस तरह पांच बार करने से प्रथम बारी में 175 उपवास व 25 पारणा = 200 दिन की प्रथम बारी जानना । चार बारी परिपूर्ण करने पर 800 दिन का तप होता है ।

(9) मुक्तावली तप : 1 से 15 उपवास तक चढना बीच में सलंग 16 उपवास वापिस 15 से 1 उपवास तक उतरना । इस तरह इस तप में 284 उपवास व 59 पारणा आते है **345** दिन का यह तप होता है।

(10) वर्धमान तप की ओली : इस तप में एक उपवास व 1 आंबिल इस 2 आंबिल से लगाकर 100 आंबिल तक चढना कुल 5050 आंबिल व 100 उपवास आते है इस तरह 5150 दिन का यह तप है उस समय इस तप को एक साथ करते थे मगर अब शक्ति अनुसार वर्धमानतप की ओली की जाती है । **(अंतगड दशांगसूत्र)**

18. पांच पांडवो का पूर्व भव

➡ अचलग्राम में दरिद्र खेडूत के वहां पर पांच पुत्रो का जन्म हुआ जिनके नाम सुमति, शांतनु, देव, सुमति, सुभद्र ये पांचो भाई थे । दरिद्र होने के कारण उनका विकास नहि होता था । यशोधर मुनिवर विचरते यहां पर पधारें पांचो भाईओ को देशना सुनकर वैराग्य हुआ । पांचो भाईओने दीक्षा लेकर घोर तप चालू किया । प्रथम भाई से लगाकर पांचो मुनिवरोने कनकावली, मुक्तावली, रत्नावली, लघुसिंह निष्क्रिडित, व वर्धमान तप *की 100 ओली एक साथ तप करके अनुत्तरविमान में उत्पन्न हुए । वहां से च्यवन होकर पांचो पांडव का अवतार प्राप्त हुआ । नेमिनाथ परमात्मा*

के शासन में पांचो पांडवोने शत्रुंजय का संघ निकालकर शत्रुंजय का उद्धार कराके द्रौपदि, कुंती माता के साथ दीक्षा लेकर आसो सुद पूर्णिमा के दिन शत्रुंजयतीर्थ पर मोक्ष प्राप्त किया । **(शत्रुंजय कल्पवृत्ति)**

19. धन्ना अणगार की काया

➡ काकंदी नगरी, जितशत्रु राजा, भद्रासार्थवाहिनी माता, एक ही पुत्र नाम-धन्यकुमार, 32 कन्या के साथ शादी । 32 करोड सुवर्ण का मालिक, 32 महेल का स्वामी, कोमल काया । प्रभु वीर का आगमन देखकर वंदन करने गया । वाणी सुनकर वैराग्य उत्पन्न हुआ । माता को बात कही । माता मूर्छित हो गयी बाद माता को समजाकर, जितशत्रु राजाने दीक्षा महोत्सव किया । दीक्षा बाद अभिग्रह - छठ के पारणे शुद्ध आंबिल करना, शुद्ध आंबिल यानि संसृष्ट-खरडे हुए हाथ से लेना, उज्झित धर्म - सभी का भोजन होने बाद जो बर्तन के अन्दर लगा हुआ है उसका वहोरना । मक्खी भी जिसके उपर न बैठे एसा आहार करना । 9 मास तक एसा घोर तप करने से कैसी काया हुयी उसका परिचय ।

- पादुका - लकडे की छाल जैसी ।
- अंगुली - सुकी हुइ फली जैसी ।
- घुटने - मोर के घुटने जैसे
- साथल - बोरडी के वृक्ष को छीलके धूप में सुकने जैसे
- कमर - उंट के पैर जैसी
- गुदा - उंट के पैर नीचे का भाग जैसी
- पेट - लकडे की परात जैसा
- पांसली - सुके लकडे के भार जैसी

- पीठ - गोल पत्थर की श्रेणी जैसी
- सीना - वांस की बनी हुयी चटाई जैसी
- भुजा - खेजडी वृक्ष के फली जैसी
- पंजा - वडवृक्ष के फली जैसी
- हाथ की अंगुली - उड़द की फली जैसी
- ग्रीवा (गर्दन) - कमंडल के अग्रभाग जैसी
- दाढी - सुकी आम की गोटली
- चाल - कोयले से भरे हुए गाडी जैसी
- होढ - सुखे हुए लाख की गोली जैसी
- जीभ - खाखर के वृक्ष जैसी
- नासिका - सुकी आम की छोटी गोटली
- आंख - बांसुरी के छिद्र जैसी
- कान - कारेला के छाल जैसे
- मस्तक - सुके हुए सीताफल जैसा
- 9 मास पर्याय संयम का, 14,000 साधु में प्रथम नंबर, विपुलगिरि पर अनसन, सर्वार्थ सिद्ध विमानमे उत्पन्न । (अनुत्तरोपपातिकसूत्र)

20. सर्वार्थसिद्धविमान का स्वरुप

- पूर्व दिशा में - विजय विमान
- दक्षिण दिशा में - वैजयंत विमान
- पश्चिम दिशामें - जयंत विमान
- उत्तर दिशामें - अपराजित विमान
- बीच में - सर्वार्थसिद्ध विमान

पंखे के आकार के विमान होते है
जिस तरह शय्या में देव उत्पन्न् होते है उसी तरह वो सोये हुए रहते है। चार विमान में 31 से 32 सागरोपम का आयुष्य, व सर्वार्थसिद्ध विमान में 33 सागरोपम का आयुष्य होता है। विषय सेवन से दूर रहते है। अल्प संकलेशवाले, स्वस्थ, शांत, रुपवान, भव्यजीव, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान से युक्त, असंख्यात योजन के चार विमान सर्वार्थसिद्ध विमान - एक लाख योजन का, 33 सागरोपम में सिर्फ एक बार करवट बदलते है। हाथ भी नहि हिलाते, शक्ति बहोत मगर उपयोग नहि, असंख्यात देवो से ज्यादा रुपवान, 32 मण से युक्त मोती का झुमखा समकीति व संयमी आत्मा इस विमान में उत्पन्न होता है। सिर्फ छठ तप जितनी निर्जरा बाकी रह जाती है। वो लवसत्तमीया कहलाते है। यानि 4 मिनिट 22 सैकण्ड का यदि आयुष्ट बढ जाता तो वो मोक्ष में चले जाते।

(बृहत्संग्रहणी)

सव्वट्ठाओ नियमाएगंमि, भवंमि सिज्झए जीवो ।
विजयार विमाणेहि य, संखिज्ज भवाउ बोधव्वा ॥

भावार्थ : सर्वार्थसिद्ध विमान में जो उत्पन्न होते है वो नियमा एक ही भव में मोक्ष को प्राप्त करते है चार विमान में से संख्याता भव के बाद भी मोक्ष हो सकता है। **(लोकप्रकाश)**

21. हरिभद्रसूरि द्वारा प्राप्त गाथा का अर्थ

चक्की दुगं, हरिपणगं, पणगं चक्कीण केसवो चक्की ।
केसव चक्की केसव दु, चक्की केसीय चक्कीय ॥

चित्तोडगढ में याकिनी महत्तरा नामके साध्वीजी इस गाथा का **स्वाध्याय**

कर रहे थे । हरिभद्र ब्राह्मण को इस शब्द का अर्थ मालूम न होने पर आचार्य के पास जाकर इसका अर्थ समजा । दो चक्री, पांच वासुदेव, पांच चक्री, एक वासुदेव एक चक्री एक वासुदेव एकचक्री, एक वासुदेव 2 चक्री एक वासुदेव एकचक्री

2 + 5 + 1 + 1 + 2 + 1 = 12 चक्री /

5 + 1 + 1 + 1 + 1 = 9 वासुदेव

22. याकिनी महत्तरा साध्वीजी का जवाब

हे आर्यपुत्र ! यह गीले गोबर से लीपा नहि है जो जल्दी समज में आ जाए। हमारे को जिनागम के सूत्रो को गोखने की अनुज्ञा है मगर समजाने की अनुज्ञा नहि है । समजाने के लिये श्रमण भगवंत का अधिकार है। यदि आप को विस्तृत अर्थ जानना है तो गुरुदेव के पास जाओ । दूसरे ही दिन हरिभद्र ब्राह्मण आचार्य जिनभद्रसूरि के पास पहोंचे

23. राजगृही के पांच पहाड के नाम

(1) विपुलगिरि (2) रत्नागिरि (3) वैभारगिरि (4) उदयगिरि (5) सुवर्णगिरि

24. श्रीपालरास की रचना

संवत सत्तर आड्त्रीस वरसे, रही रांदेर चौमासुजी
सार्ध सप्तशतगाथा विरची, पहोंच्या देव्रलोकजी
त्रट त्रट तुटे तांत, गमा जाय खसी, ते देखीने सभा सघली हसी ।

वि.सं. 1738में उपाध्याय विनयविजयजी म.सा. ने सुरत के रांदेर गांव

में चातुर्मास किया वहाँ पर श्रीपाल रास की रचना की, उसमें 750 गाथा रचने के बाद उनका कालधर्म हुआ । उसके बाद उनकी भाषा में उपाध्याय यशोविजयजी ने रास पूर्ण किया । **(श्रीपाल रास)**

25. श्रुतकेवली की शक्ति

➡ चौदपूर्वी श्रुत केवली कहलाते है उनमें अबज शक्ति होती है ।

पभूत भंते ! चोद्दसपुव्वी घडाओ घडसहस्सं, पडाओ पडसहस्सं, दंडाओ दंडसहस्सं छत्ताओ छत्त सहस्सं, कडाओ कडसहस्सं, रहाओ रहसहस्सं अभिनित्वद्टेत्ता उवदंसेतए ?

चौदपूर्वी 1 मटके में से 1000 मटके, 1 वस्त्र में से 1000 वस्त्र, 1 दंड में से 1000 दंड, 1 छत्र में से 1000 छत्र, 1 रथ में से 1000 रथ बनाने की शक्ति उनके पास उत्करिका भेद द्वारा अनंतकाय ग्रहण योग की शक्ति उत्पन्न होती है । उसके भी पांच प्रकार के भेद बताये है । (1) खंडभेद (2) प्रतरभेद (3) चूर्णिका भेद (4) अनुत्कारिका भेद (5) उत्करिका भेद । **(भगवतीसूत्र)**

तत्त्वार्थभाष्यम् - भेदः पञ्चविधः ओत्कारिकः चौणिकः खण्डः प्रतर अनुतट इति ।

➡ **भेद के पांच प्रकार :**

(1) **ओत्कारिक :** घीसने के बाद अळग हो जाय जैसे चंदन

(2) **चौर्णिक :** भुक्का हो जाय जैसे गेहूं **का** आटा आदि

(3) **खंड :** टुकडे हो कर अलग हो जाय **जैसे** - पत्थर के कंकर

(4) **प्रतर :** जिसका पड अलग हो जाय **जैसे** अबरख

(5) **अनुतर :** छीलने के बाद अलग हो जाय जैसे - वांस, गन्ने के छीलके

26. सातवी नरक के नाम व रोग

(1) अप्रतिष्ठान (2) काल (3) महाकाल (4) रौरव (5) महारौरव

पणकोडि अडसट्ठि, लक्खा नवनवइ सहस्स पंचसया ।
चुलसी अहियानिरए, अपइट्ठाणम्मि वाहिओ ॥6॥

अप्रतिष्ठान नरकावास में 5,68,99,584 प्रकार के रोग होते है ।

(उपदेशमाला टीका)

27. मिच्छामि दुक्कडम् का अर्थ

मित्तमिउमद्दव त्ते, छत्तिय दोसाण छायणे होइ ।
मित्तिय मेराए, ठिओ दुत्ति दुगं छामि अप्पाणं ॥687॥
कत्ति कडं मे पावं, डत्तिय डेवेमि तं उवसमेणं ।
एसो मिच्छामिदुक्कड़म्, पयक्खत्तो समासेणं ॥688॥

मि - मार्दवता, मन-वचन-काया को कोमल बनाना

च्छा - दोषो को ढंकना नहि, दूसरी बाद वापिस वो भूल न होवे उसका ध्यान रखना

मि - मर्यादा में रहना-चारित्र के आचारों में स्थिर बनना

दु - पाप की दुर्गंछा यानि निंदा करना

क्क - पाप की कबूलात करना (छुपाना नहि)

डम् - पाप का उपशमन करना (शांत रहना) **(आवश्यक निर्युक्ति)**

28. इरियावहिया सूत्र में मिच्छामिदुक्कडम् के भेद

इरियावहिया सूत्र में अभिहया शब्द से प्रारंभ करने पर 10 प्रकार से मिच्छामि दुक्कडम् दिया जाता है । जीव के 563 भेद है उनको 10 प्रकार से मिच्छामिदुक्कडम्

563 × 10 अभिहया आदि से गुणाकार करते - 5630 भेद

5630 × 2 राग द्वेषसे गुणाकार करते - 11260 भेद

11260 × 3 मन-वचन-काया से गुणाकार करते - 33780 भेद

33780 × 3 करण-करावण-अनुमोदना से गुणाकार करते - 10134 भेद

10134 × 3 भूत, भविष्य-वर्तमान से गुणाकार करते - 304020 भेद

304020 × 6 अ.सि.सा.देव.गुरु,आत्मा की साक्षीमे गुणते - 1824120

इस तरह एक इरियावहिया में 18,24,120 बार मिच्छामि दुक्कडम् दिया जाता है ।

29. गुणरत्नसंवच्छरतप की विधी

मास	तप	तपदिन	पारणा	कुलदिन
1	उपवास	15	15	30
2	छठ	20	10	30
3	अट्ठम	24	8	32
4	4 उपवास	24	6	30
5	5 उपवास	24	5	30
6	6 उपवास	24	4	28
7	7 उपवास	21	3	24
8	8 उपवास	24	3	27
9	9 उपवास	27	3	30
10	10 उपवास	30	3	33
11	11 उपवास	33	3	36
12	12 उपवास	24	2	26

13	13 उपवास	26	2	28
14	14 उपवास	28	2	30
15	15 उपवास	30	2	32
16	16 उपवास	32	2	34

कुल = 407 उपवास व 73 पारणा कुल 480 दिन का तप होता है ।

(अंतगड़ दशांग सूत्र)

30. परमाधामी द्वारा नारकी जीव को भयंकर वेदना

1. **अम्ब :** गरम किया हुया लोहे का रस पीलाते है ।
2. **अम्बरिष :** एकदम गरम लालबुंद लोहे के थंभे सात आलिंगन करवाते है ।
3. **श्याम :** कांटेवाले शाल्मली वृक्ष के उपर चढाते व उतारते है ।
4. **शंबल :** लोहे के घण द्वारा घा करते है ।
5. **रौद्र :** वांस व खरपत्र के द्वारा शरीर घीस के खारवाले तेल में डालते हैं ।
6. **उपरौद्र :** लोहे की घाणी में पीलते हैं ।
7. **काल :** गरम कढाई के अन्दर डालकर गरम करते है ।
8. **महाकाल :** यंत्र में डालकर पीलते है ।
9. **असिपत्र :** लोहे के त्रिशूल सलीये द्वारा छेद भेद करते है ।
10. **धनु :** करवत के द्वारा चीरते है व अंगारा द्वारा जलाते है ।
11. **कुंभ :** सिंह, शेर, शीयाल, नोंलीया, साप आदि रुप करके काटते है ।

12. **वालुक :** धगधग करती गरम मिट्टी में डालते है ।

13. **वेतरण :** तलवार जैसे पत्तेवाले वन में प्रवेश कराते है ।

14. **खरस्वर :** लोही-परु वाली वैतरणी नदी में उतारते हैं ।

15. **महाघोष :** परस्पर लडाई कराके भयंकर दुःख देते है ।

ये पंद्रह परमाधामी मिथ्याद्रष्टि पूर्वजन्म में संकलिष्ट कर्मवाले पापकर्म में आनंदवाले होते है । **(तत्त्वार्थ सभाष्य भाषांतर)**

31. अंडगोलिक मानव का स्वरुप

परमाधामी मरकर अंडगोलिक मानव बनते है । वो मानव लवण समुद्र से 55 योजन दूर जंबुवेदिका है वहां से साढे बार योजन भयंकर कृष्णवर्ण का स्थान है वहां से साढे तीस योजन दूर समुद्र की गहराई में 47 भयंकर अंधकारमय गुफा आती है । उस गुफा में प्रथम संघयण वाले जलचर मानव रहते है वो ही अंडगोलिक मानव कहलाते है । जिनकी काया साढे बार हाथ की, कृष्ण वर्ण वाले, घोर द्रष्टिवाले, संख्याता साल के आयुष्य वाले होते है वहां से 31 योजन दूर रत्न नामका द्वीप है उस द्वीप के उपर पत्थर की घंटी है जो व्यापारी रत्न लेने के लिये आते है वो व्यापारी उस पत्थर की घंटी में मध मांस भरते है फिर दूसरे मध-मांस के टोपले भर भर के 31 योजन तक रखते हैं उनको खाने की लालच से जलचर मनुष्य टोपले का भोजन करते करते पत्थर की घंटी मे गिरते है गिरते ही व्यापारी घंटी का ढक्कन बंध कर देते है 1 साल तक वो पीलते है तब वो मरते है उस में से अंडगोली प्राप्त करके व्यापारी अपने कान पर बांधकर रत्नद्वीप में लेने जाते है तब जलचर प्राणी उन व्यापारी को हैरान नहि करते । **(बृहत्संग्रहणी)**

32. नरक में नरकावास (मकान) की संख्या

1.	रत्नप्रभा	- 30 लाख
2.	शर्कराप्रभा	- 25 लाख
3.	वालुकाप्रभा	- 15 लाख
4.	पंकप्रभा	- 10 लाख
5.	धूमप्रभा	- 3 लाख
6.	तमःप्रभा	- 1 लाख (5 कम)
7.	तमःतमःप्रभा	- 5 नरकावास

(बृहत्संग्रहणी)

33. परमाधामी देवो की खुशी

➠ दुष्ट चेष्टावाले परमाधामी देव नारकीजीव को देखते ही खडखडाट हास्य करते है वस्त्र उडाडते है चपटी बजाते है हाथ के द्वारा जोर से वांजीत्र बजाते है बडा सिंहनाद करते है देव भव होने पर भी, अच्छी सामग्री होने पर भी तीन शल्य एवं तीव्र कषाय से युक्त होते है आलोचना बिना का पापानुबंधी पुण्यवाले, भावादोष को खींचनेवाले अप्रीतिकर स्थान को प्राप्त करके खुशी प्राप्त करते है ।

नारकी के जीवो के कितनी भी वेदना करे तो भी पाणी में लकडी के द्वारा दो भाग तुरंत इकट्ठे हो जाते है उसी तरह उनके शरीर तुरंत इक्कट्ठे हो जाते है । **(तत्त्वार्थसभाष्यम्)**

34. नरक की वेदना कैसी ?

1.	प्रथम नरक में	-	उष्णवेदना
2.	द्वितीय नरक में	-	तीव्रतर वेदना
3.	तृतीय नरक में	-	तीव्रतम उष्णवेदना
4.	चतुर्थ नरक में	-	शीत-उष्ण वेदना

5.	पांचवी नरक में	-	शीत-उष्णवेदना
6.	छठी नरक में	-	शीततर वेदना
7.	सातवी नरक में	-	शीततम वेदना

(तत्त्वार्थ भाष्यम्)

35. नरक की वेदना का स्वरुप

➠ **उष्ण वेदना :** जेठ मास में बादल बिना का आकाश हो । भर दोपहर का समय हो, एसी गरमी में धग धग करती अग्निज्वाला की बीच में व्यक्ति को जो दुःख होता उससे अनंतगुणा दुःख उष्ण वेदना में होता है ।

➠ **शीत वेदना :** पोष व महामास की कडकडती ठंडी में हाथ-पग-दांत आदि कंपायमान होते हो । पाणी जैसा ठंडा पवन चलता हो । शरीर बरफ से लीपा हो । उस समय जो वेदना होती है उससे अनंतगुणा दुःख शीतवेदना में होता है ।

➠ **नारकी जीवो की भूख :** उनकी जठराग्नि तेज होने से गरम गरम शरीरवाले प्रति समय आहार करते है । सभी पुद्गलो का आहार कर ले तो भी उनकी भूख कम नहि होती और सभी दरिये का पानी पी जाय तो तृषा भी कम नहि होती बल्कि बढती जाती है ।

(तत्त्वार्थ सभाष्यम्)

36. नवपद के भंडार

➠ **देव तत्त्व :**	1.	अरिहंत पद	-	उपकार
	2.	सिद्ध पद	-	शाश्वता सुख
गुरुतत्त्व :	3.	आचार्य पद	-	आचार

	4. उपाध्याय पद	-	विनय
	5. साधु पद	-	समता
धर्मतत्त्व :	6. दर्शन पद	-	सद्भावना
	7. ज्ञान पद	-	सद्विचार
	8. चारित्र पद	-	सद्वर्तन
	9. तप पद	-	संतोष

37. स्वाध्याय का प्रमाण

➠ चातुर्मास में 500 गाथा का, शीत ऋतुमें - 800 गाथा का ग्रीष्म ऋतु में - 300 गाथा का स्वाध्याय करना चाहिए प्रतिदिन ज्ञान की आराधना हेतु पांच नयी गाथा कंठस्थ करना व पांच गाथा अर्थ के साथ ग्रहण करना। **(सोमसुंदरसूरि)**

38. चक्रवर्ती के 14 रत्न

नाम	प्रमाण	उत्पत्ति	उपयोग	विशेष उपयोग
1. चक्र	वाम प्रमाण	आयुधशाला	आकाशे	चक्रबधाई, दानपूजा, महोत्सव
2. छत्र	वाम प्रमाण	आयुधशाला	वृष्टि-वायु	99,000 सुवर्ण सलीओ से युक्त
3. दंड	वाम प्रमाण	आयुधशाला	भूमिसम	1 योजन भूमि में गुफा द्वार खोले
4. खड्ग	32 अंगुल	आयुधशाला	पहाडभेद	तीक्ष्णधार, वैडूर्यरत्न से युक्त

5. चर्म	दो हाथ	भंडार	धान्य	श्रीवत्स आकार में समस्त सेना बैठ के गंगा-सिंधु नदी तैर सकते है
6. काकिणी	4 अंगुल	भंडार	मंडलप्रकाश	50 योजन में 49 मांडला पासा आकार के करे
7. मणि	2 अंगुल	भंडार	दिव्यप्रकाश	हाथी के कुंभस्थल पर 12 योजन प्रकाश करे
8. अश्व	108 अंगुल	वैताढ्य	युद्ध में	क्रोधि डुंगरो को बिनाश्रम उल्लंघन करे
9. गज	योग्य	वैताढ्य	युद्ध में	विजययात्रा
10. पुरोहित	योग्य	स्वनगरे	गौरवार्थे	14 विद्या शांतिकर्मे
11. सेनापति	योग्य	स्वनगरे	निष्कुट	चार खंड साधे
12. गृहपति	योग्य	स्वनगरे	भोजनसामग्री	सुबहबोए शामको तैयार
13. वाधिकी	योग्य	स्वनगरे	पुल-नगर	ग्राम-नगर पुलका निर्माण
14. स्त्री	योग्य	राजगृही	चक्री को	छ-खंड नारीओकातेज केशरोम नख बढे नहि

(बृहत्संग्रहणी)

39. चक्रवर्ती का स्वरुप

➠ . चक्रवर्ती 14 रत्नो की सेवा पूजा करते है ।

➠ एक साथ जंबूद्वीप में चार चक्री व 56 रत्न हो सकते है ।

- प्रत्येक रत्न 1000 देवता से अधिष्ठित होते है ।
- चक्रवर्ती के स्पर्श मात्र से रत्न 12 योजन लंबे हो जाते है ।
- जब तक चक्री है तब तक गुफा में 49 मांडला का प्रकाश रहता है ।
- चक्रवर्ती का राज्याभिषेक 12 साल तक चलता है । **(बृहत्संग्रहणी)**

40. चक्रवर्ती के नव निधान

1. **नैसर्प** - ग्राम-नगर-गृहस्थापनादि, वास्तुशास्त्र, पुस्तकादि का संग्रह
2. **पांडुक** - धन, धान्य, मान, उन्मानादि की उत्पत्ति
3. **पिंगल** - पुरुष, गज, अश्व, अलंकार, 64 सेर के हार की व्यवस्था
4. **सर्वरत्न** - 14 रत्न की उत्पत्ति और कांतिमय बनाते है
5. **महापद्म** - वस्त्रोत्पत्ति, रंगविधि, कपडा धोवाण आदि ।
6. **काल** - 63 शलाकापुरुष, ज्योतिष, शिल्प के 100 प्रकारो की जानकारी ।
7. **महाकाल**- मणि-रत्न-प्रवाल-खाण आदि की उत्पत्ति ।
8. **माणवक**- सभी प्रकार के शस्त्र, नीतिदंड, कला आदि का ज्ञान ।
9. **शंख** - गायन, नाटक, काव्य, वांजीत्र आदि की वीधी ।

सभी निधान पटारा के आकार के होते है 12 योजन लंबे, 9 योजन चोडे व 8 योजन विस्तार वाले होते है । आठ आठ पइए सभी को होते है उसमें सभी पदार्थ शाश्वते होते है । **(बृहत्संग्रहणी)**

41. सर्वार्थसिद्ध विमानके झुम्मर

- 64 मण का - एक मोती ➠ 32 मण के - चार मोती
- 16 मण का - आठ मोती ➠ 8 मण के - सोलह मोती

➠ 4 मण के - बत्तीस मोती ➠ 2 मण के - चोसठ मोती

➠ 1 मण के - एकसो अट्ठावीस मोती

कुल - 256 मोतीओ का झुम्मर होता है। (**सर्वार्थसिद्धविमान सज्झाय**)

42. वासुदेव के सात रत्न

1. सुदर्शन चक्र - वासुदेव ही एसे चक्र को घूमा सकते है।
2. नंद खड्ग - तलवार घुमाते शत्रु भाग जाते है।
3. मणि रत्न - मणिरत्नका प्रकाश 12 योजन दूर जाता है।
4. धनुष्य रत्न - धनुष् टंकराव से शत्रु भाग जाते है।
5. गदा रत्न - गदा स्पर्श से शैन्य शस्त्र दूर चले जाते है।
6. वनमाला - उनके गले की माला कभी करमाती नहि है।
7. शंख रत्न - पांच जन्य शंख का आवाज 12 योजन दूर जाता है। (**बृहत्संग्रहणी**)

43. हठिसींगकी वाडी

➠ शेठ हठिसींग ओसवाल थे। शेठाणी का नाम हरकोर था, अमदावाद में शाहीबाग विस्तार में विशाल जगह का संपादन करके तीन मंजील, तीन शिखर, दो रंग मंडप, 52 देवकुलिका से युक्त भव्य जिनालय का निर्माण करवाया था। मूलनायक धर्मनाथ भगवान की प्रतिष्ठा वि.सं. 1903 में शांतिसागर सूरिजी के हाथों से करवायी थी। प्रतिष्ठापूर्व ही शेठ का स्वर्गवास होने पर हरकोर शेठाणी ने उल्लास के साथ प्रतिष्ठा करवायी थी। जब जब शेठाणी मंदिरजी जाते तब दान देते जाते थे। पूज्य वीर विजयजी महाराज साहेबजी ने हठीसींग देहरा प्रतिष्ठा के ढाल की रचना की थी उसमें पूर्ण इतिहास प्राप्त होगा।

44. शत्रुंजय माहात्म्य प्रमाण

श्री युगादिजिनादेशात्, पुण्ड्रीको गणाधिपः ।
सपादलक्ष प्रमितं, नानाश्चर्यकरान्वितम् ॥8॥

श्री शत्रुञ्जयमाहात्म्यं, सर्वतत्त्वसमन्वितम् ।
चकार पूर्वं विश्वैकहिताय, महितं सुरैः ॥9॥

वर्धमान नियोगेन, सुधर्मा गणभृत ततः ।
चतुर्विंशतिसहस्रान्, तस्मादालोऽय सारतः ॥

भावार्थ : प्रथम जिनेश्वर के आदेश से पुंडरिक गणधरने सवा लाख श्लोक प्रमाण आश्चर्य भूत, सभी तत्त्वो से युक्त, देवताओं से पूजीत, विश्व के हित के लिये, शत्रुंजय महात्म्य की रचना की थी । उसके बाद वीर प्रभु के प्रथम गणधर सुधर्मास्वामीने शत्रुंजय माहात्म्य को संक्षेप करके 24,000 श्लोक प्रमाण बनाया ।

उसके बाद भद्रबाहु स्वामी, पादलिप्तसूरि ने संक्षिप्त किया था । वि.सं. 1371 में राजगच्छ के धनेश्वरसूरिजीने 10,000 श्लोक प्रमाण शत्रुंजय माहात्म्य की रचना की थी । भद्रबाहु स्वामीने कल्पप्राभृत में उद्धार किया था ।

(प्रवचन किरणावली)

45. स्थापनाचार्य पडिलेहन विधी ।

प्रथम स्थापनाचार्य को नाभि के उपर पाटले पर रख के पडिलेहन करना । इरियावहिया करके सभी मुहपत्ति का पडिलेहन (पांचो मुहपत्ति) 25-25 बोल से करना । एक गरम कपडा रखना । झोलीया का 25

बोल से व ठवणी 10 बोल से करना । प्रत्येक स्थापनाचार्य का क्रम से पडिलेहन करना । अरिहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-साधु प्रत्येक का 13-13 बोल से पडिलेहन क्रम से करना । पाटली 25 बोल से करना । सुबह प्रथम स्थापनाचार्य का, शाम को प्रथम झोलीया अंत में स्थापनाचार्य का पडिलेहन करना । इस तरह अपनी प्रत्येक क्रिया में अति आलंबनभूत स्थापनाचार्य का बहुमान-आदर भाव से पडिलेहन करना ।

46. वस्तुपाल तेजपाल के भव ।

वस्तुपाल का स्वर्गवास होने के बाद 10 साल पश्चात् तेजपाल का स्वर्गवास शंखेश्वरतीर्थ के पास चांदुर गाम में हुआ था । जैत्रसिंह राजा ने वहां पर भव्य जिनमंदिर का निर्माण करवाया था । दोनों भाई का स्वर्गवास होने के बाद वर्धमान सूरिने अभिग्रह ग्रहण किया था कि शंखेश्वर दादा के दर्शन न होवे तब तक आंबिल तप चालू रखना । काया को कष्ट पहोंचते ही दादा के ध्यान में वर्धमानसूरि काल धर्म करके शंखेश्वर तीर्थ के अधिष्ठायक देव बने । वो ही देव ने सीमंधर स्वामी के पास जाकर दोनो भाई के भव पूछे ।

वस्तुपाल मंत्री : महाविदेह क्षेत्र के पुंडरिकीणी नगर में राजकुमार बना है । उनके बाद वो कुरुचंद्र नामके राजा बनेगें । दीक्षा का पालन करके अनुत्तर विमान में जायेंगे । वहाँ से च्यवन होकर महाविदेहक्षेत्र में जन्म पाकर राजा बनकर दीक्षा-केवलज्ञान पाकर मोक्ष में जायेंगे ।

तेजपाल मंत्री : मृत्यु पाकर प्रथम देवलोक मैं गये । चतुर्थभवमें महाविदेह क्षेत्र में जन्म पाकर मोक्ष मे जायेगें । **(वस्तुपाल चरित्र)**

47. कोटिशीला का प्रमाण

- जिस तरह ऋषभकूट पर नाम लिखने वाला चक्रवर्ती बनता है उसी तरह कोटिशीला उठानेवाला वासुदेव बनता है ।
- कोटिशीला 1 योजन लम्बी, 1 योजन चोडी होती है, शाश्वती व देवता से अधिष्ठित होती है दक्षिणाधर्ध भरत के सिंधु देश के दशार्ण पर्वत पर है।
- इस कोटिशीला के उपर शांतिनाथजी के चक्रायुध गणधर के **32** पाट परंपरा तक संख्याताक्रोड़ मुनिवर करोडो मुनिवरो के साथ मोक्ष में गये।
- इस शीला के उपर कुंथुनाथ परमात्मा के गणधर **28** पाट परंपरा तक संख्याता क्रोड मुनिवरो के साथ मोक्ष मे गयें है ।
- इस शीला के उपर अरनाथ परमात्मा के गणधर **24** पाट परंपरा तक 12 करोड मुनिवरो के साथ मोक्ष में गये है ।
- इस शीला के उपर मल्लीनाथ परमात्मा के गणधर **20** पाट परंपरा तक 7 क्रोड मुनिवर मोक्ष में गये है ।
- इस शीला के उपर मुनिसुव्रत परमात्मा के गणधर तीन क्रोड मुनिवरो के साथ मोक्ष में गये है ।
- इतनीं पवित्रशीला को वासुदेव उठाते है तब वो वासुदेव के रुप में प्रसिद्ध होते है । लक्ष्मण वासुदेव ने यह शीला उठायी थी ।
- **कोटिशीला तप की विधी**

1 उपवास	-	8 एकासणा	1 उपवास	-	1 एकासणुं
1 उपवास	-	1 एकासणुं	1 उपवास	-	4 एकासणां
1 उपवास	-	10 एकासणां	1 उपवास	-	1 एकासणुं

1 उपवास - 1 एकासणां	1 उपवास - 1 एकासणुं
1 उपवास - 4 एकासणां	1 उपवास - पारणुं

➡ कुल इस तप में 10 उपवास - 31 एकासणा मिलकर 41 दिन का तप होता है **'नमो सिद्धाणं'** का जाप 8 खमासमणा 8 लोग, का काउसग्ग। (तपावली)

48. वासुदेव व कोटिशीला का प्रमाण

➡ प्रथम वासुदेव - कोटिशीला को मस्तक के उपरी भाग तक उठाते है।

➡ द्वितीय वासुदेव - कोटिशीला को मस्तक तक उठाते है।

➡ तृतीय वासुदेव - कोटिशीला को कंठ तक उठाते है।

➡ चतुर्थ वासुदेव - कोटिशीला को सीना तक उठाते है।

➡ पांचवे वासुदेव - कोटिशीला को जठर तक उठाते है।

➡ छट्ठे वासुदेव - कोटिशीला को कमर भाग तक उठाते है।

➡ सातवे वासुदेव - कोटिशीला को पेटभाग तक उठाते है।

➡ आठवे वासुदेव - कोटिशीला को जानुभा (घुटना) तक उठाते है।

➡ नवमे वासुदेव - कोटिशीला को पैर के पानी तक उठाते है।

यह पदक्रम अवसर्पिणी में वासुदेव का जानना व उत्सर्पिणी में वासुतेवद का क्रम नीचे से गिनना।

49. श्रेणिकभाई कस्तुरभाई पेठी के नाम

1. सब से पहले राजनगर के नगरशेठ शांतिदास शेठ

2. उसके पुत्र - लक्ष्मीचंद	7. उसके पुत्र - भगुभाई
3. उसके पुत्र - खुशालचंद	8. उसके पुत्र - दलपतभाई

4. उसके पुत्र - वखतचंद
5. उसके पुत्र - मोतीचंद
6. उसके पुत्र - फतेहचंद
9. उसके पुत्र - लालभाई
10. उसके पुत्र - कस्तुरभाई
11. उसके पुत्र - श्रेणीकभाई

गंगा मां दलपतभाई की पत्नी व लालभाई की माता थी ।

(आणंदजी कल्याणजी पेढी इति.)

50. वखतचंदशेठकी उदाहरता

➠ खुशालचंद शेठ के पुत्र वखतचंद प्रतिदिन पालखी में बैठकर झवेरीवाड वाघणपोल जाते थे । वहां पर उजमफई की धर्मशाला में जाकर सामायिक करते थे । मगर जब पालखी में बैठते थे तब एक तरफ सामायिक के उपकरण व एक तरफ सिक्के भरे हुए बटवे रखते थे । दान देते-देते प्रतिदिन सामायिक करने जाते थे । इश द्रश्य का चित्र झवेरीवाड अजितनाथ जिनालयक में विद्यमान है ।

51. गंगा मां की खुमारी

➠ वि.सं. 1921में दलपतभाईने शत्रुंजय का संघ निकाला उसमें दलपतभाई की पत्नी गंगा मांने साधु-साध्वीजी की बहोत भक्ति की थी । वि.सं. 1967में अमदावाद में सभी जिनमंदिरो के दर्शनार्थे चैत्यपरिपाटी का कार्यक्रम रखा था । उस समय नेमि सूरिजीने प्रवचन में समेतशिखर की बात निकाली कि अब जिनशासनमें एसे कोई विरल व्यक्ति नहि रहे जो शिखरजी के पहाड पर जाकर अंग्रेजो द्वारा निर्माण होने वाले शिकार एवं सहेलाणीओ हेतु गेस्ट हाउस बंध करवा सके । बीस बीस तीर्थंकरो की निर्वाणभूमि शृंगारभूमि बन जायेगी, जागो ! जैनो जागो ! कल्याणक भूमि को अपवित्र बनने न दो ।

इस बात को गंगा मां ने सुनि हृदयमें भारी आघात लगा तुरंत घर जाकर लालभाई जब भोजन करने आये तब थाली में चुडी रख दी और कहा यदि तुम्हारे में ताकात न हो तो यह चूडी पहन लो। उसी समय लालभाई शिखरजी में जाकर विरोध करके गेस्ट हाउस बंध करवाये।

➠ **पूजा बिना नहि चलेगा :** कस्तुरभाई के पिता को मील में एकबार ज्यादा काम होने पर लेट आये और सीधा भोजन करने बैठ गये। मां जब पुरसने गयी तब मस्तक और देखा अरे ! आज केसर का तिलक क्यों नहि ? आज लेट हो गया। मां ने कहा पहले पूजा करके आओ फिर भोजन मिलेगा। पूजा नहि की तो में पालीताणा चली जाउंगी। पूजा करने के बाद मां ने प्रेम से गरम भोजन कराया।

52. दानवीर जगडूशा का दान

➠ वि.सं. 1913 / 1914 / 1915 में तीन साल का भयंकर दुष्काल पडा उस समय जगडुशाहने बडे राजाओ को भी अनाज दिया था।

देश	राजा	कितना मण	कितना किलो
गुजरात	विसलदेव राजा	चार लाख मण	80 लाख कीलो
सिंध देश	हमीरदेव राजा	'छ' लाख मण	1 करोड 20 लाख कीलो
मालवा	मदनवर्म राजा	9 लाख मण	1 करोड 80 लाख कीलो
मेवाड	-	16 लाख मण	3 करोड 20 लाख कीलो
काशी	प्रतापसिंह राजा	16 लाख मण	3 करोड 20 लाख कीलो
कदहारदेश	-	60,000 मण	12 लाख कीलो
दिल्ली	नसरुद्दीन बादशाह	10 लाख 50 हजार मण	2 करोड 50 लाख कीलो
कुल	-	**52 लाख 10,000 मण**	**12 करोड 50 लाख कीलो**

53. पाठशाला का शब्दार्थ

पा - पाप को छुडाने वाली शाला पाठशाला

ठ - ठट्ठा-मश्करी को दूर कराने वाली शाला - पाठशाला

शा - शासन की शोभा बढाने वाली शाला - पाठशाला

ला - लालच को दूर कराने वाली शाला - पाठंशाला

शि - सम्यग्ज्ञानकी शिक्षा प्रदान करे वो शिक्षक

क्ष - क्षमा रखकर क्षमा का पाठ शिखाये वो शिक्षक

क - कर्म को तोडने वाली क्रिया शिखाये वो शिक्षक

54. गुरुदेव का शब्दार्थ

गु - अज्ञान रुपी अंधकार को दूर करनेवाले - गुरुदेव

रु - ज्ञान रुपी प्रकाश को फैलाने वाले - गुरुदेव

दे - देव तत्त्व की पहचान कराने वाले - गुरुदेव

व - व्रत का आरोपण कराने वाले - गुरुदेव

55. सातवें गुणठाणे आवश्यक क्रिया नियत नहि

नहय प्रमत्त साधूनां, क्रियाप्यावश्यकादिका ।
नियत्ता ध्यान शुद्ध त्वाद्य, दन्यैरप्यदः स्मृतम् ।।5।।

भावार्थ : सातवे गुणठाणे पर रहनेवाले अप्रमत साधु को आवश्यक क्रिया आवश्यक नहि है क्योंकि वो साधु ध्यान से आत्मस्वरुप में शुद्ध है सिर्फ उनका ध्यान धर्म ध्यान में से शुक्लध्यान की और आगे बढकर निरतिचार शुद्ध चारित्र का पालन करते है । अतिचार का अभाव होने

से अप्रमत्त कहलाते है वो कर्तव्य की बुद्धि में हंमेशा सावधान रहते है।

(अध्यात्मसार)

56. शंखेश्वर पार्श्वनाथ की प्राचीनता

➠ गत चोवीशी के नवमे तीर्थंकर दामोदरस्वामी के समवसरण में अषाढी श्रावक ने प्रभु को प्रश्न किया है प्रभु ! मेरा मोक्ष कब होगा ! तब प्रभुने कहा वर्तमान चोवीशी में तेवीसवें तीर्थंकर ने शासन में आर्यघोष नामके गणधर बनकर मोक्ष में जाओगे । इस बात को सुनकर अषाढी श्रावक ने शंखेश्वर पार्श्वनाथ परमात्मा की मूर्ति भरवाकर अपने गृह जिनालय में रखी । प्रतिदिन पूजा से वैराग्य-दीक्षा पालकर प्रथम देवलोक में देव बने । अवधिज्ञान से जानकर मूर्ति को देखकर देवलोक में मंगाकर पूजने लगे ।

➠ **शंखेश्वर दादा की प्रतिमा कहां कहां पूजायी ?**

⇨ प्रथम देवलोक में असंख्याता साल तक ।

⇨ भवनपति के आवास में संख्याता साल तक ।

⇨ व्यंतरदेव के नगर में संख्याता साल तक ।

⇨ पुनः प्रथम देवलोक में असंख्याता साल तक ।

⇨ ईशान देवलोक में असंख्याता साल तक ।

⇨ गिरनार के कंचन बलाहक टुंक में संख्याता साल तक ।

⇨ पुनः प्रथम देवलोक में असंख्याता साल तक ।

⇨ पुनः प्रथम देवलोक में असंख्याता साल तक ।

⇨ नागकुमार देवलोक में धरणेन्द्र-पद्मावती द्वारा संख्याता साल तक ।

⇨ नमि-विनमि द्वारा संख्याता साल तक ।

⇨ दशवे देवलोक में असंख्याता साल तक ।

⇨ पुनः प्रथम देवलोक में 54 लाख साल तक ।

⇨ गंगा नदी में देवो के द्वारा संख्याता साल तक ।

⇨ लवण समुद्र में देवो द्वारा संख्याता साल तक ।

⇨ रामचंद्रजी द्वारा संख्याता साल तक ।

⇨ पुनः गिरनारजी टुंक में संख्याता साल तक ।

⇨ बारवे देवलोक में असंख्याता साल तक

➡ इस तरह 18 कोडाकोडी सागरोपम से ज्यादा काल तक इस मूर्ति की पूजा हुयी । नेमिनाथ परमात्मा के शासन में जब कृष्ण व जरासंघ का युद्ध हुआ उस समय जराकुमार ने जराविद्या डाली । जिसके कारण कृष्ण का समस्त **सैन्य मूर्छित बन गया** । तब नेमिनाथ परमात्मा के आदेश से कृष्ण महाराजा ने अट्ठम तप द्वारा मूर्तिको प्राप्त करके स्नात्र जल सैन्य पर डालने पर समस्त सैन्य जीवित हो गया । विजय प्राप्त करके शंखनाद द्वारा शंखपुर बसाया । और उसी स्थान पर शंखेश्वर पार्श्वनाथ नाम से मूर्ति की स्थापना की । 86,500 साल के पश्चात् सिद्धराज जयसिंह का मंत्री सज्जनसिंह ने देवचंद्रसूरि के उपदेश से वि.सं. 1155 में प्रतिष्ठा करायी । 13 वी शताब्दि में वर्धमानसूरिजी निश्रा में वस्तुपाल तेजपाल प्रतिष्ठा कराते है । दुर्जनशल्य राजाने परमदेव सूरिजी की प्रेरणा से देवविमान सम जिनमंदिर का निर्माण कराया । उसके पश्चात् मुसलमानो के आक्रमणो द्वारा जिनालय का नाश होता है ।

वि.सं. 1760 में विजयसेनसूरि के द्वारा प्रतिष्ठा हुयी । जिसका संचालन जीवणदास गोडीदास पेढी संचालन करती है । लाखो लोको की भीड लगती है । लाखो मण में चढावे प्रभु पूजा के जाते है । शास्त्रकार ने

बताया है कि समकित प्राप्ति व कर्म निर्जरा हेतु व मोक्ष लक्ष को सामने रखकर प्रभु के दर्शन पूजा-यात्रा-चढावे बोले जाय तो अवश्य मोक्ष मार्ग पास में आ सकता है ।

57. पूज्य वीरविजयजी का जीवन चरित्र व रचना

⇨ जन्म - वि.सं. 1829 आसो सुद-10 शांतिदास पाडा की पोल
⇨ पिता - जज्ञेश्वर औदित्य ब्राह्मण
⇨ माता - वीर कोर बाई
⇨ पुत्र - केशवराम ⇨ पुत्रवधु - रलियात

पिता के अवसान पश्चात् केशवनाथ ने घर छोडकर भीमनाथ गये । वहां से वापिस घर आये तब माता ने पुत्र केशव को उपालंभ दिया कि पिता भी चले गये व तुं भी चला गया ... वो सुनते ही केशव भाग कें वापिस मामा के घर गया । वहां पर केशव को शुभ विजय का मिलन हुआ और माता को पुत्र भागने का समाचार मिला आघात लगा व स्वर्गवास हो गया । केशव अब शुभविजय के साथ शत्रुंजय तीर्थ में दादा को भेटकर खंभात के पास पानसर गांव मे दिक्षा स्विकार की । वि.सं. 1848 में दीक्षा वि.सं. 1867 में पंन्यासपद वि.सं. 1893 में मोतीशा शेठ के प्रतिष्ठा में हाजरी वि.सं. 1865 में लालभाई कीकु, भवानचंद, गमानचंद, हरखचंद, गुलाबचंद, जेचंद श्रावको द्वारा अमदावाद भट्टी की बारी में वीरविजयजी नाम से उपाश्रय का निर्माण । जो आज भी वहां पर विशाल उपाश्रय, चांदी समवसरण, त्रिगडा, हस्तलिखीत भंडार, बडेबडे चौदस्वप्न व वीरविजयजी की गुरुमूर्ति बिराजमान है । वि.सं. 1908 भा.व. 3 अमदावाद में काल धर्म । **(वीरविजयजी जीवन च.)**

58. पू. वीरविजयजी द्वारा पूजा की रचना

- ⇨ वि.सं. 1858 – अष्टप्रकारी पूजा
- ⇨ वि.सं. 1874 – चोसठ प्रकारी पूजा
- ⇨ वि.सं. 1884 – नवाणुं प्रकारी पूजा
- ⇨ वि.सं. 1885 – पिस्तालीस आगम पूजा
- ⇨ वि.सं. 1887 – बारव्रत की पूजा
- ⇨ वि.सं. 1889 – पंचकल्याणक पूजा
- ⇨ वि.सं. 1853 – गोडी पार्श्वनाथ ढालीया
- ⇨ वि.सं. 1889 – कुंतासर खाडी का वर्णन
- ⇨ वि.सं. 1865 – चातुर्मासिक देववंदन
- ⇨ वि.सं. 1893 – मोतीशा टुंक व शेठ के ढालीये
- ⇨ वि.सं. 1903 – शेठ हठिसिंग के ढालीये
- ⇨ वि.सं. 1901 – प्रभुवीर के 27 भव का स्तवन

(वीर विजयजीवन च.)

59. धनजीशूरा-पनजीशूरा-रतनजीशूरा

➠ **पनजीसूरा** ने राजनगर (अमदावाद) से समेतशिखर महातीर्थ का छ'रि पालित संघ निकाला था । जिसमें 1,80,000 सुवर्णमुद्रा का खर्च हुआ था ।

➠ **धनजीसूरा** ने उपाध्याय यशोविजयजी को काशी में पढाने का खर्च किया था । उस समय संस्कृत-प्राकृत-न्याय पढाने वाले को प्रतिदिन एक चांदी का सिक्का दिया जाता था । तीन साल में षड्दर्शन के विजेता बने थे ।

➠ **रतनजी सूरा** ने वि.सं. 1687 में भयंकर दुष्काल में दानशाला खोलकर उदार हाथो से दान दिया था। व शत्रुंजय महातीर्थ के 18 संघ निकाले थे। विजयप्रभसूरि के गणि अनुज्ञा महोत्सव के समय वि.सं. 1711 में धनजीसूराने 8900 महमुद्रिक का खर्च किया था।

(यशो वि. उपा. जीवन चरित्र)

60. तामली तापस

➠ बहोत सुखी व समृद्ध परिवार वाला तामली था। अपने घर में धन धान्य के ढेर लगे हुए थे तो भी संसार को छोडकर तापस को वेश धारण किया। झोंपडी में रहकर दो उपवास के पारणे दो उपवास का तप 60,000 साल तक किया। पारणे के अन्तर्गत अंत-प्रांत आहार को लाकर 21 बार पाणी से धोकर पारणां करतां था। एक बार नदी में से स्नान करके बहार निकलता था सामने से साधु भगवंत को आते देखा। उनकी नीचे देखकर चलने की प्रवृत्ति को देखकर आश्चर्य हुआ। 'अहो शोभनोऽयं श्रमण धर्मः' कितना सुंदर साधु धर्म है उनकी अनुमोदना करते दूसरे देवलोक में इशानेन्द्र बनकर समकित भी प्राप्त किया। साधु का आचार समकित तक पहोंचा सकता है। **(उपदेशमाला)**

61. तीर्थंकर का वर्षीदान

➠ तीर्थंकर परमात्मा का जब जन्म होता है तब उनके पास तीन ज्ञान होते है मगर जब दीक्षा लेते है उसके एक साल पहले पांचवे देवलोक के नव लोकांतिक देव विनंती करने आते है कि आप दीक्षा लेकर धर्मतीर्थ प्रवर्तन करो। उस समय तीर्थंकर वर्षीदान का प्रारंभ करते है उनके पिता

चारो दिशा में चार द्वारवाली दान शाला खोलते है प्रथम द्वार में भोजन, द्वितीय द्वार में वस्त्र, तृतीय द्वार में आभूषण चतुर्थद्वार में रोकड नाणां।

⇨ प्रतिदिन सूर्योदय के बाद दोपहर तक एख करोड आठ लाख सोनैया का दान देते है ।

⇨ इन्द्र की आज्ञा से धनद लोकपाल देव सिर्फ 8 क्षण में 16 माषा प्रमाण परमात्मा के नाम से सिक्के तैयार करते है ।

⇨ सिक्के सुवर्ण के होते है जिसके उपर माता-पिता व अपना नाम होता है।

⇨ 80 रति भार प्रमाण वाला सिक्का होता है ।

⇨ 40 मण का एक गाडा एसे 225 गाडे भर् के दान रोज दिया जाता है।

⇨ प्रतिदिन 9000 मण सुवर्ण दान का होता है ।

⇨ इस तरह एक साल में 32,40,000 मण सुवर्ण दान का होता है ।

⇨ एक वर्ष तक दान चलता है उसके लिये वर्षीदान कहलाता है ।

⇨ एक साल में 3 अबज, 88 करोड, 80 लाख सुवर्ण दान में जाता है।

(उपदेशप्रासाद-वैराग्य मंजरी)

➠ **वर्षीदान सिक्का का प्रमाण दो रीत से**

प्रथम रीत		**द्वितीय रीत**	
40 रति	- 1 सौनेया	100 रति	- 1 रुपैया
96 रति	- 1 तोला	24 रुपये	- 1 शेर
6 सोनैया	- 5 तोला	30 सोनैया	- 1 शेर
48 सोनैया	- 1 रतल	1200 सोनैया	- 1 मण
1,920 सोनैया	- 1 मण	900 मण	- 10,80,000 सोनैया
10,80,000 सोनैया	- 5,625 मण	40 मण	- 1 गाडा
25 मण	- 1 गाडा	40 मण	- 48,000 सोनैया
48,000 सोनैया	- 25 मण	225 गाडा	- 9000 मण

62. तीर्थंकर वर्षीदान के 'छ' अतिशय

(1) **प्रथम अतिशय :** जब परमात्मा वर्षीदान देते है, तब सौधर्मेन्द्र परमात्मा के हाथ में सिक्के भरते है उसके कारण परमात्मा को दान देने में श्रम नहि पडता है ।

(2) **द्वितीय अतिशय :** जब परमात्मा वर्षीदान देने ते तब इशानेन्द्र सुवर्ण की लकड़ी लकर खडे रहते है । 64 इन्द्रो को छोडकर दूसरे देवो को भी दूर करते है ।

(3) **तृतीय अतिशय :** परमात्मा जब दान देते है तब चमरेन्द्र व बलीन्द्र देव लेने वाले के भाग्यानुसार कम-ज्यादा करते है ।

(4) **चतुर्थ अतिशय :** भवनपतिदेव भरतक्षेत्र के मानव को दानहेतु लाकर इक्कट्ठे करते है ।

(5) **पंचम अतिशय :** देव याचक को वापिस उस स्थान पर रखते है ।

(6) **छट्ठा अतिशय :** आगे से आगे विद्याधर देव जाकर वर्षीदान का समाचार देते है ।

63. वर्षीदान का प्रभाव

- परमात्मा के वर्षीदान को ग्रहण करने वाले 64 इन्द्र में परस्पर क्लेश नहि होता ।
- सुवर्णदान के प्रभाव से 12 साल तक भंडार अक्षय रहता है ।
- वर्षीदान जो ग्रहण करते है उनके वहां 12 साल तक रोग नहि होता ।
- जो वर्षीदान को ग्रहण करता है वो जीव अवश्य भव्य बनकर मोक्ष जाता है ।
- मंदबुद्धिवाला तेज बनता है । **(उपदेश प्रासाद)**

64. वर्षीदान कौन सा दान ? कौन ले सकता है ?

अनुकंपादानंपिय, अनुकंपा गोचरेसु सत्तेसु ।
जायइ धम्मोवग्गहहेउ, करुणा पहाणस्स ॥17॥

ता एवि पसत्थं, तित्थयरेणावि भयवया गिहिणा ।
सयमाईन्नं दिय देवदूस दाढेण गिहिणोवि ॥18॥

भावार्थ : अनुकंपावाले जीव को करुणाप्रधान जीव का अनुकंपा दान धर्म की पुष्टि करनेवाला होता है परमात्मा ने दीक्षा लेने के बाद ब्राह्मण को जो देवदूष्य वस्त्र दिया वो अनुकंपा दान था । इसलिये श्रावक-श्राविका वर्षीदान को ग्रहण नहि कर सकते । इस में दान लेने का अधिकार पुरुष का है स्त्री का नहि । क्योंकि जिस समय परमात्मा वर्षीदान देते थे उस समय ब्राह्मण बहार गांव गया था व ब्राह्मणी घर होने पर भी दान लेने न गई । ब्राह्मण के आने के बाद भगवान के पीछे भेजा । **(दानवींशीका)**

65. परमात्मा के समवसरण में 363 पाखंडी

क्रियावादी	-	180	अक्रियावादी	-	84
अज्ञानंनवादी	-	67	विनयवादी	-	32

इस तरह **363** पाखंडी प्रभु की देशना में आते थे ।

66. दस प्रकार के तिर्यग्जृंभक देव

1. अन्नजृंभकदेव
2. पानजृंभकदेव
6. फलजृंभकदेव
7. पुष्पफलजृंभकदेव

3. वस्त्रजृंभकदेव 8. शयनजृंभकदेव

4. लेणजृंभकदेव 9. विद्युत्जृंभकदेव

5. पुष्पजृंभकदेव 10. अवियतजृंभकदेव

ये सभी देव वैताढ्य पर्वत में रहते है उनका आचार जमीन में से धन लाने का है ।

67. साधु धर्म की दस सामाचारी ।

(1) **ईच्छाकार :** दीक्षा पर्याय मे छोटे साधु के पास भी यदि कार्य करवाना है तो उनकी इच्छा को पूछ के कार्य करवाना और शिष्य को वडील की इच्छा अनुसार कार्य करना चाहिए ।

(2) **मिथ्याकार :** प्रमाद के कारण दर्शन-ज्ञान-चारित्र की आराधना में विराधना हो जाय तो मिच्छामि दुक्कडम् देना ।

(3) **तथाकार :** गुरु की आज्ञा को श्रद्धा के साथ स्विकार करके तहति कहना ।

(4) **आवश्यकी :** आवश्यकक्रिया हेतु उपाश्रय-जिनालय से बहार नीकलते समय 'आवस्सहि' शब्द संयम धर्म के पोषण हेतु बोलना चाहिए ।

(5) **नौषधिकी :** आराधना मार्ग को केन्द्र में रखकर, सभी अशुभयोग के त्याग के लिये उपाश्रय-जिनालय में प्रवेश करते 'निसीहि' शब्द अवश्य बोलना ।

(6) **आपृच्छना :** दर्शन-ज्ञान-चारित्र की आराधना में देव-गुरु-वडील की आज्ञा का उपयोग अवश्य करना ।

(7) **प्रतिपृच्छना :** आज्ञा लेने के बाद कार्य प्रारंभ करने से पूर्व वापिस देव-गुरु वडील की आज्ञा लेना ।

(8) **छंदना :** अपने लिये लाये हुए आहार-पाणी में से भक्ति हेतु श्रमणों को अवश्य प्रार्थना करना ।

(9) **निमंत्रणा :** अपने आत्मा को कृतार्थ करने के लिये समस्त श्रमणवर्ग को थोड़ा थोड़ा आहार-पाणी देना चाहिए ।

(10) **उपसंपदा :** दर्शन-ज्ञान-चारित्र की वृद्धि हेतु स्वच्छ को छोडकर दूसरे गच्छ को विधीपूर्वक स्वीकारना ।

साधु-साध्वीजी जो अपनी श्रमणधर्म की सामाचारी से चलने जाए तो संयमजीवन में कीसी भी प्रकार का क्लेश का वातावरण उत्पन्न नहि होता । **(सामाचारी प्रकरण)**

68. पडिलेहन की विधी

➠ यथाजात मुद्रा में बैठकर वस्त्र के तीन भाग करना, आदि, मध्य, अंत इस तरह नौ भाग में द्रष्टि करके फिर हाथ उपर कपडे को ढंढोलते 25 बोल बोलना । वस्त्र-शरीर का स्पर्श नहि होना चाहिए । पडिलेहन कीये हुए वस्त्र अलग रखना । वह नहि कीये हुए वस्त्र अलग रखना ।

➠ **पडिलेहन के 16 दोष :**

(1) **नर्तन :** शरीर व वस्त्र को नचाना ।

(2) **वलन :** शरीर व वस्त्र को ज्यादा घुमाना ।

(3) **अनुबंध :** अक्खोडा - पक्खोडा प्रमाण से ज्यादा करना ।

(4) **मोसली :** खांडणी में सांबेला की तरह वस्त्र कूटना ।

(5) **अरभट :** मर्यादा से विपरीत तुरंत पडिलेहन करना ।

(6) **रयमर्द :** वस्त्र को खोले बिना पडिलेहन करना ।

(7) **प्रस्कोटन :** वस्त्र को जोर से झाटकना ।

(8) **विक्षेप :** वस्त्र को फैंकना या अद्धर रखना ।

(9) **वेदिका :** (पांच प्रकार की)

1. उर्ध्व वेदिका - घुटने के उपर हाथ रखना
2. अधो वेदिका - घुटने के नीचे हाथ रखना
3. द्विघात वेदिका - दो हाथ के बीच में पैर रखना
4. तिर्यञ्च वेदिका - दोनों हाथ टेडे रखना
5. अंगत वेदिका - एक हाथ अंदर एक हाथ बहार रखना ।

(10) **प्रशीथील :** वस्त्र को ढीला पकडना ।

(11) **प्रलंब :** वस्त्र को लटकते रखना ।

(12) **लोल :** वस्त्र को जमीन से स्पर्श करना ।

(13) **एकामर्श :** वस्त्र को एक तरफ से पकड़कर हिलाना ।

(14) **अनेकरुपधूनन :** एक साथ सभी कपडे को पकडकर हिलाना ।

(15) **शंकित गणना :** अक्खोडे - पक्खोडे को अंगुली पर गिनना ।

(16) **वितथकरण :** कथा, स्वाध्याय, पच्चक्खाण वि. द्वारा बोलना

(ओघनिर्युक्ति)

पडिलेहणं कुणंतो, मिहोकहं कुणइ जावय कहं वा ।
देइ व पच्चक्खाणं, वाएइ सचं पडिच्छईवा ॥
पुढवी आउक्काए, तेउवाउ वणस्सइ तसाणं ।
पडिलेहणापमत्तो, छण्हंपि विराहणो होइ ॥273॥

➠ **भावार्थ :** पडिलेहण के समय मैथुन संबंधी, जनपद संबंधी, कथा करे या पच्चक्खाण देवे, साधु को पाठ देवे, या खुद बोले तो पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय जीव की विराधना वाला कहा है । मगर सिर्फ पडिलेहन में एकाकार बननकर उपयोग रखे तो वो छकाय का रक्षणहार (आराधक) कहां है । **(ओघनि. 273.275)**

69. साधु के उपकरण के नाम

1. कांबली	8. पात्रबंधक	15. उतरपटा
2. कपडा (दो)	9. चरवली	16. निषेधीयां
3. रजोहरण	10. पडला	17. ओघारिया
4. मुहपत्ति	11. रजस्त्राण	18. दोरी
5. मात्रक	12. गुच्छा	19. दांडो
6. पात्रक	13. पात्रस्थापक	20. दंडासन
7. चोलपट्टा	14. संथारा	21. आसन

इनके अलावा दर्शन-ज्ञान-चारित्र के उपयोगी उपकरण प्रमाण से रख सकते है । **(ओघनिर्युक्ति)**

70. प्रत्येक उपकरण का प्रमाण

उवगरणं मि धरिज्जा, जेण न रागस्स होइ उप्पत्ति ।
लोगम्मि अ परिवाओ, विहिणाय पमाण जुत्तं ॥769॥

जिस सामग्री के राग उत्पन्न न हो, जिसकी लोग में निंदा न हो विधि प्रमाण से युक्त हो ऐसे उपकरण धारण करना चाहिए ।

बत्तीसंगुलदीहं, चउवीसं अंगुलाइ दंडो से ।
सेसदसापडिपुण्णं, रयहरणं होइ माणेणं ॥815॥

रजोहरण का प्रमाण 32 अंगुल है और उसकी दंडी 24 अंगुल व दशी में आठ अंगुल का प्रमाण बताया है ।

आयाणे निक्खेवे ठाण निसीअण तुअट्ट संकोए ।
पुव्विं पमज्जणट्ठा, लिंगट्ठा चेव रयहरणं ॥816॥

लेने में, रखने में, खडे होने में, बैठने में, शरीर फैलाने में, शरीर संकोचने में इन सभी क्रिया में प्रथम रजोहरण से प्रमार्जन करना चाहिए ।

चउरंगुल विहत्थी, एअ मुहणंतगस्स पमाणं ।
बीआवि आएसो, मुहपमाणओ निप्फणं ॥817॥

एक बालीस चार अंगुल मुहपति का प्रमाण है और दूसरा अपना मुख बराबर ढक सके एसी मुहपत्ति प्रमाण से रखना चाहिए । (**पंचवस्तुग्रंथ**)

- **झोली (पात्र बंधक) :** इस में गांठ लगाने के बाद चारों तरफ चार-चार अंगुल प्रमाण भाग बहार होना चाहिए ।
- **गुच्छा-चरवली :** शास्त्र में 16 अंगुल का प्रमाण है वर्तमान जो पात्रक वो प्रमाण से रखना चाहिए ।
- **पडला :** चातुर्मास में पांच, शीतऋतु में, चार व ग्रीष्मऋतु मे - तीन पडला रखना, पडला इक्कट्ठा होने के बाद सूर्यप्रकाश अंदर न जाना चाहिए । **पडला का प्रमाण :** ढाई हाथ लंबा व 36 अंगुल चौडा चाहिए ।
- **रजोहरण :** कुल - 32 अंगुल उसमें दंडी-24 अंगुल व दशी-8 अंगुल प्रमाण की, दशी व ओघारिया गरम होना चाहिए । निषेधीया व ओघारिया के तीन आंटे होने चाहिए व रजोहरण बांधने के बाद अंगुठा के प्रथम पर्व तर्जनी अंगुली रहे इतना जाडा चाहिए ।
- **कपडा :** साधु-साध्वीजी को दो कपडा अवश्य रखना एक ओढने को व एक गरम कांबली के अन्दर रखना । कपडे बिना कांबली नहि ओढनी चाहिए ।
- **संथारा-उतरपटा :** अपने अंगुल के प्रमाण से ढाई हाथ लम्बा व एक हाथ 4 अंगुल चौडा चाहिए ।
- **दांडा :** कान या नासिका के अग्रभाग तक आवे इतना लम्बा चाहिए।

➠ **आसन :** अपनी काया बराबर समा शके एसा होना चाहिए ।

➠ **मुहपत्ति :** एक बालीस चार अंगुल, दोरा-भरत बिना की, एक तरफ किनारी व तीनों तरफ खुल्ली चाहिए । **(शास्त्र के अंश)**

71. अधिकरण यानि क्या ?

जं वट्टइ उवगारे, उवकरणं तं सि होइ उवगरणं ।
अइरेगं अहिगरणं, अजओ अजयं परिहरंतो ॥184॥

➠ जो उपकरण साधु की क्रिया में उपकारक बनते है वो उपकरण कहलाते है उशसे जो अधिक रखते है वो अधिकरण क्योंकि ज्यादा रखने का मन हुआ तो मूर्च्छाभाव भी बढेगा । अयतना वाला अयतनापूर्वक जो धारण करता है वो उपकरण भी अधिकरण बन जाता है ।

(व्यवहार भाष्य-ठाणांग सूत्र)

72. प्रतिक्रमण में अवग्रह का प्रमाण

➠ तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहन फिर दो वांदणा देने के बाद तस्सधम्मस्स शब्द जब वंदिता का आता है तब बहार नीकलना ।

➠ दूसरी बार वांदणा आवे तब अवग्रह में अब्भुट्ठिओ खमाकर वांदणा लेकर **आयरिय उवज्झाय** में बहार नीकलना ।

73. 'छ' आवश्यकका प्रमाण

(1) **सामायिक :** प्रतिक्रमण में पंचाचार की आठ गाथा आवे तब तक ।

(2) **चउवीसत्थो :** पंचाचार की आठ गाथा के बाद लोगस्स पूरा होवे तब तक ।

(3) **वांदणा :** तीसरे आवश्यककी मुहपत्ति के बाद वांदणा आवे तब तक।

(4) **पडिक्कमणु :** आयरिय उवज्झाय सूत्र पूरा होवे तब तक ।

(5) **काउस्सग्ग :** आयरिय उवज्झाय के बाद जो जो काउसग्ग आवे तब तक।

(6) **पच्चक्खाण :** नमोऽस्तु वर्धमानाय के पूर्व पच्चक्खाण लो तब तक ।

74. श्रावक की सात धोती

➠ कुमारपाल राजा के समय में व उसके बाद भी बहोत समय तक श्रावक को 'सात' धोती रखने का विधान था ।

(1) सामायिक - पौषध हेतु (2) परमात्मा की पूजा हेतु (3) स्नान करते समय (4) भोजन करते समय (5) वडीनीति जाते समय (6) रात को सोते समय (7) परदेश जाते समय

इस तरह सात धोती की परंपरा थी । (उपदेश कल्पवली)

75. गरणा का प्रमाण

षट्त्रिशदंगुलायामं, विंशत्यंगुल विस्तृतम् ।

दृढं गलनकं कार्य, भूयो जीवान् शोधयत ॥ (सांख्यमत)

➠ **भावार्थ :** छत्तीस अंगुल लंबा, बीस अंगुल चौडा, व जाडा (द्रढ) एसे गरणे के द्वारा बारबार पाणी छानना या शोधन करना । (उपदेश प्रासाद)

शुद्धे सावय गेहे हवई, गलणाइ सत्त सविसेसं ।

जलमिट्ठ खार आछण, तक्कं घी-तिल्ल चुण्णयं ॥ (आत्मप्रबोध)

➠ (1) मीठा पाणी छानने हेतु (2) खारा पाणी छानने हेतु (3) दूध छानने हेतु (4) छास छानने हेतु (5) घी छानने हेतु (6) तेल छानने हेतु (7) आटा छानने हेतु । (आत्मप्रबोध)

76. श्रावक के घर सात चंदरवा का प्रमाण

(1) चैत्यशाला (जिनालय में)

(2) पौषधशाला (या जहां सामायिक-पौषध करे वहां)

(3) चूले के उपर (4) भोजन स्थान के उपर

(5) पाणीयारा के उपर (6) वलोणा के स्थान उपर

(7) खांडने के स्थान उपर

एक चन्द्रवा बांधने से पांचतीर्थ की यात्रा का लाभ मिलता है ।

(उपदेश कल्पवल्ली)

78. अंतिम आचार्य दुष्प्रभसूरि व संघ

➠ इस पंचम काल में 2004 युगप्रधानाचार्य बनने वाले है उसमें पांचवे आरे के अंत में दुष्प्रभसूरि नामक अंतिम युगप्रधानाचार्य बनेंगे । जिनका शरीर दो हाथ का, अट्ठम का तप, 12 साल गृहस्थावस्था में, 4 साल मुनि अवस्था में, 4 साल सूरिपद पर, दशवैकालिक आगम का अध्ययन, समुद्र शारदाचार्य का पद, इन की निश्रा में साध्वीजी श्री फल्गुश्री, श्रावक-नागिल, श्राविका-सत्यकी नामका चतुर्विध संघ होगा । अंतिम समय में अट्ठम का तप करके प्रथम देवलोक में जायेंगे । 1 सागरोपम का आयुष्य पुर्ण करके भरतक्षेत्र में जन्म पाकर मोक्ष प्राप्त करेंगे ।

(उपदेश कल्पवल्ली)

79. 18 देशाधिपति कुमारपाल राजा के देश के नाम

➠ 1. कर्णाट देश 2. गुर्जर देश 3. लाट देश

4. सौराष्ट्र देश 5. राष्ट्र देश 6. मालव देश

7. मारव देश	8. कच्छ देश	9. भंभर्य देश
10. सिंधु देश	11. सपादलक्ष देश	12. उच्च देश
13. दीव देश	14. काशीतट देश	15. कोंकण देश
16. मेदपाट देश	17. केर देश	18. जालंधर देश

➠ कुमारपाल महाराजा इन अढार देश के अधिपति थे। इन्हों ने अढारा देशो में पाणी छान के पीने की व्यवस्था करवायी थी।

(उपदेश कल्पवल्ली)

80. धर्मदूत का द्रष्टांत

➠ सोमचंद्र राजर्षि की पटराणी धारिणी एक बार राजर्षि के बाल को ठीक कर रही थी। उस समय राणी के हाथ में सफेद बाल आया, तब राणी ने कहा दूत आया दूत। राजा ने पूछा कहां है दूत ? तब राणीने राजा के हाथ में सफेद बाल दिया और कहा लो राजर्षि यह धर्मदूत आ गया। तब राजाने विचार किया की राजसिंहासन के उपर आज दिन तक कोई सफेदबाल वाला बैठा नहि है और मैं बैठा हूँ एसी भावना के साथ राजर्षि राजपाट छोड़कर निकल गये। राणी भी साथ में गई दोनों ने राजमहेल के सुखो को छोडकर जंगल की और चले।

(प्रसन्नचंद्र राजर्षि के पिता सोमचंद्र राजर्षि थे।)

81. परमात्मा की भक्ति अंलकारो के द्वारा

➠ भरतचक्री ने शत्रुंजयतीर्थ का संघ निकाला। दादा के दरबार में स्नात्र महोत्सव करने के बाद रत्न, माणके, मोती द्वारा अग्रपूजा की। उसके पश्चात चक्री की राणीओंने किमती माणेक के द्वारा परमात्मा की नवांगी

पूजा की कीसी राणीने रत्न का मुगुट चडाया, कीसी राणी ने माणेक का तिलक चढाया । सुग्रीव की पत्नी ने कंठाभरण, वत्सराजा राणीने श्रीवत्स, व कीसी राणीने दिव्यहार दिव्यमुगुट चडाया ।

इस तरह भरतचक्री के परिवार द्वारा परमात्मा की भक्ति को सुनकर वस्तुपाल की पत्नी ललितादेवी ने अपने गले में से 36 लाख मूल्यवाला हार वि. निकालकर सभी अलंकार परमात्मा को पहना दिये । उसके पश्चात् तेजपाल की पत्नी अनुपमादेवी ने 36 लाख मूल्यवान अलंकार उतारकर परमात्मा को समर्पित किये । इन दोनो राणीओ की उदारता देखकर उनकी दासी भूपला ने अपने गले में से लाख मूल्यवाला हार उतारकर प्रभु को पहना दिया । इस तरह अलंकारो द्वारा (आभूषण पूजा) उल्लास के साथ भक्ति की गई । **(वस्तुपाल चरित्र)**

82. पर्द-संपदा की पहचान

(1) **पद :** सूत्र बोलते समय थोड़ा रुककर बोलना ।

(2) **संपदा :** सूत्र बोलते समय थोडा ज्यादा रुककर बोलना ।

(3) **आदान नाम :** सूत्र के प्रथम शब्द से जो नाम प्रसिद्ध बनता है ।

(4) **गौण नाम :** सूत्र के गुण एवं विषय के नाम से प्रसिद्ध बनता है ।

(5) **गुरु अक्षर :** थोडे परिश्रम के साथ जो शब्द बोला जाता है व जोडाक्षर होता है ।

(6) **लघु अक्षर :** अल्प प्रयत्न से जो शब्द बोला जाता है जिसकी एक मात्रा होती है ।

(7) **सर्वाक्षर :** ह्रस्व, दीर्घ, जोडाक्षर, आधा अक्षर सभी साथ में गिना जाता है ।

➟ **जिस तरह नमस्कार महामंत्र**

- आदान नाम - नमस्कार महामंत्र
- गौण नाम - श्री पंचमंगल महाश्रुत स्कंध
- पद - 9 (नौ)
- संपदा - 8 (आठ)

- गुरु अक्षर - 7
- लघु अक्षर - 61
- सर्वाक्षर - 68

(उपधान तप विधी)

83. जाप के तीन प्रकार

(1) **मानस जाप :** सहज भाव से होठ बंध करके एक-दूसरे दांत का स्पर्श किये बिना, सिर्फ स्वयं सोच कर सके इस तरह मानस जाप होता है। उत्तमकार्य एवं शांति हेतु यह जाप किया जाता है।

(2) **उपांशु जाप :** सिर्फ होठो का कंपन सीमीत हो, दूसरो कीसी को सुनाना नहि चाहिए, मौन पूर्वक जाप करना वो मध्यम कक्षा का उपांशु जाप।

(3) **भाष्य जाप :** तालबद्ध, शुद्ध उच्चारण, दूसरा सुन सके, इस तरह का जाप मन के विचारो को रोकता है और स्वकार्य के लिये अति उपयोगी है।

(आवश्यक क्रिया)

84. दूसरी रीत से जाप के तीन प्रकार

(1) **धारणा जाप :** हाथ और माला की सहाय बिना मानसिक संकल्प पूर्वक कराता हुआ जाप। जाप ध्यानस्थ मुद्रा में बैठकर कीसी भी पदार्थ के सहाय बिना परमात्मा का ध्यान धरना।

(2) **कर जाप :** अंगुली के पर्व उपर तरह तरह के आवर्त्त द्वारा जाप करना। जैसे नंदावर्त, शंखावर्त, उंकारवर्त, ह्रौंकारवर्त, नवपदावर्त आदि। एक निश्चित आवर्त द्वारा जाप करने से श्रेष्ठ फल प्राप्त होता है बाएँ हाथ में

12 की संख्या व दाहिने हाथ में 9 की संख्या धारणे से 108 का जाप पूर्ण होता है। करजाप में अंगूठा अखंडित रुप से घूमना चाहिए। बीच में से उठना नहि चाहिए।

(3) **मालाजाप :** नवकारवाली सूतर की माला हाथ से गुंथी व कोटन दोरे की होने से शुद्ध व अति उत्तम फल देने वाली है। शांति एवं शुभकार्य हेतु सफेद रंग की माला अच्छी कही जाती है। माला को गुरु भगवंत के पास मंत्राना चाहिए। जाप समय सफेद आसन होना चाहिए। मणके को नख का स्पर्श नहि होना चाहिए। शरीर के या वस्त्र के कीसी भी भाग का स्पर्श नहि होना चाहिए। मेरु का उल्लंघन नहि करना। नवकारमंत्र व तीर्थंकर माला एक चलती है मगर देव देवी जाप यदि करना है तो उसकी माला अलग रखना चाहिए। **(आवश्यकक्रिया साधना)**

85. पंचाचार के 36 भेद का विवरण।

ज्ञानाचार के आठ भेद

(1) **कालाचार :** कालवेला के समय को छोड़कर जो समय बताया है उस समय सूत्र को अर्थ को याद करना।

(2) **विनयाचार :** ज्ञान व ज्ञानी दोनों का विनय करना। गुरुवंदन, प्रणाम आदि।

(3) **बहुमानाचार :** अंतर के भाव से ज्ञान व ज्ञानी का बहुमान करना।

(4) **उपधानाचार :** देशविरति व तप के साथ गुरु के पास सूत्र की वाचना लेना।

(5) **अनिहनवाचार :** पढाने वाले गुरु-शिक्षक आदि को कभी भी छुपाना नहि।

(6) **वंजणाचार :** ह्रस्व-दीर्घ-व्यंजन-अनुस्वार आदि का ध्यान रखकर सूत्र बोलना ।

(7) **अत्थाचार :** गुरु के पास सूत्र के अर्थ को सिखना ।

(8) **तदुभयाचार :** सूत्र बोलते समय अर्थ की विचारना साथ में करना ।

➠ **दर्शनाचार के आठ भेद**

(1) **नि:संकिअ :** वीतराग के वचन उपर कभी भी संदेह नहि रखना ।

(2) **निक्कंखिअ :** वीतराग के मत बिना अन्य मत की इच्छा भी नहि करना ।

(3) **निव्वितिगिच्छा :** महात्मा के मलिन वस्त्र देखकर दुर्गंछा नहि करना ।

(4) **अमूढदिट्ठि** - मिथ्याद्रष्टि के ठाठ माठ को देखकर सत्यमार्ग से चलित न होना ।

(5) **उपबृंहणा :** समकित धारी के गुणों की प्रशंसा अवश्य करना ।

(6) **थिरिकरणे :** धर्म कम करते हो, धर्म में मन न लगता हो तो उनको स्थिर करना ।

(7) **वात्सल्य :** साधार्मिक व्यक्ति के हित का चिंतन करके भक्ति करना ।

(8) **प्रभावना :** अन्यधर्मवाले जैनधर्म की अनुमोदना करे एसा कार्य करना ।

➠ **चारित्राचार के आठ भेद :**

(1) **इर्या समिति :** साढे तीन हाथ नीचे द्रष्टि रखकर चलना ।

(2) **भाषा समिति :** हितकारी, मितकारी व प्रियकारी वचन बोलना ।

(3) **एषणा समिति :** शुद्ध-दोष बिना के आहार-उपधि ग्रहण करना ।

(4) **आदानभंड-मत्त निक्खेवणा समिति :** वस्त्र-पात्र आदि उपकरण प्रथम दृष्टि से देखकर फिर (पूंजकर) प्रमार्जन करके लेना व रखना ।

(5) **पारिष्ठापनिका समिति :** मल-मूत्र-श्लेष्म-थूंक आदि निर्दोष भूमि पर परठवना ।

(6) **मनगुप्ति :** मन में अशुभ विचार न करना ।

(7) **वचनगुप्ति :** निरवद्य वचन भी बिना कारण से नहि बोलना । (मौन रखना)

(8) **कायगुप्ति :** शरीर द्वारा जो भी क्रिया करो वो प्रमार्जन करके करना।

➠ **तपाचार के बार भेद (छ बाह्य तप)**

(1) **अनशन तप :** उपवास - आंबिल - एकासणा आदि तप करना ।

(2) **उणोदरी तप :** जो अपन भोजन करते है उसमें कुछ कम खाना ।

(3) **वृत्ति संक्षेप तप :** जितने द्रव्य खाते है उसमे कम द्रव्य खाना व संतोष रखना ।

(4) **रस त्याग तप :** घी, दूध, दही, तेल, ज्युस आदि रसो का त्याग करना।

(5) **कायक्लेश तप :** लोच, विहार आदि क्रिया द्वारा काया का शोषण करना।

(6) **संलीनता तप :** अंग उपांग को संकोच के विषय वासना को रोकना।

➠ **'छ' अभ्यन्तर तप**

(1) **प्रायश्चित तप :** जो दोष लगते है उनका शुद्धिकरण गुरु के पास जाकर आलोचन द्वारा करना ।

(2) **विनय तप :** देव-गुरु-धर्म-संघ-साधर्मिक आदि की विनयपूर्वक भक्ति करना ।

(3) **वैयावच्च तप :** देव-गुरु की वैयावच्च (अनुकुल सेवा) करना ।

(4) **सज्झाय तप :** वाचना, पृच्छना आदि पांच प्रकार में से कीसी भी द्वारा स्वाध्याय करना ।

(5) **ध्यान तप :** आर्तध्यान, रौद्रध्यान का त्याग करके धर्म ध्यान में आगे बढना ।

(6) **कायोत्सर्ग तप :** कर्म क्षय निमित्त कायोत्सर्ग करना । उसमे काया के मोह को कम करना । **(पंचवस्तु गा. 846/847)**

➠ **वीर्याचार :** मन-वचन-काया की समस्त शक्ति द्वारा शास्त्रानुसार प्रवृत्ति करना वो वीर्याचार । बल व वीर्य को छुपाये बिना पराक्रम करना ।

नाणे दंसणे चरणे, तवे अ अवीरीए अ भावमायारो ।
अट्ठट्ठट्ठ दुवालास-वीरीअमहाणी उ जो तेसिं ॥7॥

(निशीथ भाष्य)

86. श्रावक जीवन के नित्य करने योग्य 36 कर्तव्य

➠ आदान नाम	- मन्नह जिणाणं	● गुरु अक्षर	-	28
➠ गौण नाम	- श्रावक कर्तव्य सूत्र	● लघु अक्षर	-	162
➠ पद	- 20 (बीस)	● सर्वाक्षर	-	190
➠ संपदा	- 20 (बीस)	● उपयोग	-	पौषधमें

(1) **मन्नह जिणाणमाणं** - परमात्मा की आज्ञा को मानो

(2) **मिच्छं परिहरह** - मिथ्यात्व का त्याग करो ।

(3) **धरह सम्मतं** - सम्यक्त्व को धारण करो ।

(4) **छव्विह आवस्सयंमि सामायिक** - समतापूर्वक सामायिक करना ।

(5) **चउवीसत्थो** - लोगस्स बोलते समय 24 तीर्थंकर को नमस्कार करना ।

(6) **वांदणा** - द्वादशावर्त वंदन करना ।

(7) **प्रतिक्रमण** - पापो से पीछे हटने हेतु प्रतिक्रमण दोनों समय करना ।

(8) काउसग्ग	– कर्मक्षय हेतु–काया के मोह को तोडने हेतु कायोत्सर्ग करना ।
(9) पच्चक्खाण	– चीकने कर्म क्षय हेतु यथाशक्ति तप करना ।
(10) पव्वेसु पोसहवयं	– पर्व के दिन पौषध करना ।
(11) दाणं	– भावपूर्वक दान देना ।
(12) शीलं	– भावपूर्वक शीलधर्म का पालन करना ।
(13) तवो	– विधि पूर्वक तप की आराधना करना ।
(14) भावो	– सोलह प्रकार की उत्तम भावना का चिंतन करना ।
(15) सज्झाय	– घोष पूर्वक स्वाध्याय करना ।
(16) नमुक्कारो	– 108–नवकार महामंत्र का जाप करना ।
(17) परोवयारो	– दूसरे का उपकार करना ।
(18) जयणा	– जयणा का पालन करना ।
(19) जिणपूआ	– जिनेश्वर की विधिपूर्वक पूजा करना ।
(20) जिण थुणणं	– हाथ जोडकर मस्तक झुकाकर जिनेश्वर की स्तुति करना ।
(21) गुरुथुअ	– गुरु भगवंत की स्तुति गुणानुवाद करना ।
(22) साहम्मिंआणवच्छल्ल	– साधर्मिक के प्रति वात्सल्यभाव रखना ।
(23) ववहारस्स य शुद्धि	– व्यवहार में शुद्धि रखना (औचित्य पूर्वक रहना)
(24) रहजत्ता	– प्रभु को रथ में बिराजमान करके प्रदक्षिणा देना ।
(25) तित्थजत्ता	– तप–व्रत के साथ तीर्थ यात्रा करना ।

(26) उवसम	– उपशम भाव रखना ।
(27) विवेग	– विवेकपूर्वक विचार के कार्य करना ।
(28) संवर	– कर्म का बंध न होवे एसी प्रवृत्ति करना ।
(29) भाषा समिइ	– हित-मित-प्रियकारी भाषा बोलना ।
(30) 'छ' जीव करुणाय	– 'छ' काय जीवो के उपर करुणाभाव रखना।
(31) धम्मिअजणसंसग्गो	– धर्मीजनो का परिचय करना ।
(32) करणदमो	– इन्द्रियो का दमन करना ।
(33) चरण परिणामो	– चारित्र लेने की भावना रखना ।
(34) संघोवरि बहुमानो	– संघ के उपर बहुमान भाव रखना ।
(35) पुत्थयलिहणं	– उपयोगी पुस्तक छपवाना, आगम-ग्रंथ लिखना ।
(36) पभावणा तित्थे	– अन्यधर्मवाले भी प्रशंसा करे ऐसी शासन प्रभावना करना ।

(संबोध प्रकरण गा. 980 से 984)

87. भरहेसर सज्झाय में आनेवाले 53 महापुरुष

(1) **भरतचक्री :** अनित्य भावना का चिंतन करते केवलज्ञान हुआ ।

(2) **बाहुबली :** एक साल तक कायोत्सर्ग ध्यान मे रहे ।

(3) **अभयकुमार :** बुद्धिनिधान ने प्रभु वीर के पास संयम ग्रहण कीया ।

(4) **ढंढणकुमार :** अभिग्रह के कारण 'छ' मास तक गौचरी ग्रहण न की ।

(5) **श्रीयक :** यक्षा आर्या की प्रेरणा से भूख सहन न होते हुए भी उपवास किया ।

(6) **अर्णिकापुत्र :** गंगा नदी उतरते अप्‌काय जीवो की विराधना का पश्चाताप करते केवलज्ञान उत्पन्न हुआ ।

(7) **अईमुत्तामुनि :** छ साल की उम्र मे दीक्षा व नौ साल की उम्र में केवलज्ञान।

(8) **नागदत्त :** चोरी का माल ग्रहण न कीया दीक्षा लेकर केवली बनकर मोक्ष में गये ।

(9) **मेतारज मुनि :** मस्तके अंगारा की ज्वाला सहन करते केवलज्ञान पाया।

(10) **स्थूलभद्रमुनि :** 84 आसनो वाली चित्रशाला में चातुर्मास करके 84 चोवीशी तक नाम अमर किया ।

(11) **वज्रस्वामी :** छ मास की उम्र में 11 अंग कंठस्थ करके दसवे पूर्वधारी बने ।

(12) **नंदिषेणमुनि :** वेश्या के घर पर रहकर 12 साल तक 10 जींवो को रोज दीक्षा के भाव जगाकर दीक्षा दिलाते ।

(13) **सिंहगिरिमुनि :** प्रभु वीर की 12 वी पाट परंपरा में आनेवाले वज्रस्वामी के गुरु थे ।

(14) **कयवन्ना शेठ :** पूर्वभव में तीन बार खंडित दान देने से तीन बार खंड़ित सामग्री मिली । प्रभुवीर के पास दीक्षा लेकर देवलोक में गये ।

(15) **सुकोशलमुनि :** अयोध्या नगरी में दीक्षा लेकर जंगल में ध्यान धरके बाघण के उपसर्ग को सहन करते अंतकृत केवली बने ।

(16) **पुंडरिक मुनि :** कुंडरिक मुनि घर आने पर राज्य को सोंप के दीक्षा लेकर जब तक गुरु न मिले तब तक चारो आहार का त्याग ।

(17) **केशी मुनि :** पार्श्वनाथ परंपरा के होते हुए भी गौतम स्वामी के साथ चर्चा करते प्रभुवीर का शासन प्राप्त किया ।

(18) **करकुंडु राजर्षि :** बलवान् सांढ की वृद्धावस्था देखकर वैराग्य पाकर दीक्षा लेकर मोक्षपद प्राप्त किया ।

(19-20) **हल्ल-विहल्ल :** सेचनक हाथी खाई में गिरने से वैराग्य पाकर दीक्षा लेकर सर्वार्थसिद्ध विमान में गये ।

(21) **सुदर्शनशेठ :** 12 व्रतधारी श्रावक, पौषध में शूली का उपसर्ग, पत्नी के काउसग्ग ध्यान से शूली का सिंहासन बना ।

(22-23) **साल-महासाल :** दोनों भाई ने दीक्षा ग्रहण करके मार्ग में उत्तम भावना का चिंतन करते केवलज्ञान हुआ ।

(24) **शालिभद्र :** 32 पत्नी व 99 पेटी प्रतिदिन आने पर भी संयम लेकर अनशन करके सर्वार्थसिद्ध विमान में गये ।

(25) **भद्रबाहुस्वामी :** चौदपूर्वी श्रुतकेवली, निर्युक्ति व उवसग्गहरं स्तोत्र के कर्ता ।

(26) **दशार्णभद्र :** प्रतिदिन त्रिकालपूजा, इन्द्र द्वारा समृद्धि का भंग होने पर संयम लेकर मोक्षपद प्राप्त किया ।

(27) **प्रसन्नचंद्रराजा :** चारित्रग्रहण करके काउसग्ग करते मने में युद्ध के विचार हाथ उंचे किये । लोच देखकर पश्चाताप करते केवली बने ।

(28) **यशोभद्रसूरि :** भद्रबाहुस्वामी के गुरु, पूर्व की वाचना देने वाले ।

(29) **जंबूस्वामी :** शादी की प्रथम रात में 526 व्यक्ति को बोध देकर 527 के साथ संयम ग्रहण कीया ।

(30) **वंकचूल :** चोर का पल्लि पति, ज्ञानतुंग सूरि के पास चार नियम का दृढ रुप से पालन करके स्वर्ग में गया ।

(31) **गजसुकुमाल :** दीक्षा के दिन सोमिल ससुर द्वारा उपसर्ग सहन करके केवल पाकर मोक्ष में गये ।

(32) अवंतिसुकुमाल : 32 पत्नी का स्वामी होते हुए भी साधु के स्वाध्याय से वैराग्य पाकर दीक्षा लेकर मरणांत उपसर्ग सहन करके नलीनीगुल्म विमान में गये ।

(33) धन्यकुमार : सुभद्रा पत्नी का वचन 'बोलना सरल करना कठिन' ये शब्दो को सुनकर वैराग्य पाकर दीक्षा लेकर अनशन करके सर्वार्थसिद्ध विमान में गये ।

(34) इलाचीपुत्र : निर्विकार भाव से गौचरी वहोरते साधु को देखकर रस्सी के उपर नाचते केवलज्ञान प्राप्त किया ।

(35) चिलातीपुत्र : उपशम-विवेग-संवर तीन शब्दो के उपर विचार करते ढाई दिन तक चीटी का उपसर्ग सहन करते देवलोक में गये ।

(36) बाहुमुनि : ज्ञान पंचमी की आराधना करते चारित्र लेकर केवलज्ञान प्राप्त किया ।

(37) आर्यमहागिरि : जिन कल्पि तुलना का कठिन चारित्र पालकर गजपद तीर्थ में अनशन क़िया ।

(38) आर्यरक्षितसूरि : जैन आगम को चार भाग में विभाजित करनेवाले, साढे नव पूर्वधर ।

(39) आर्यसुहस्तिसूरि : दसपूर्वज्ञाता भिक्षुक को दीक्षा देकर संप्रति राजा बनाया। जिससे लाखो चैत्यो व करोडो प्रतिमा के दर्शन हुए ।

(40) उदायन राजर्षि : अंतिम राजर्षि, प्रभु वीर के पास दीक्षा लेकर नगरी में आए ।

(41) मनकमुनि : शय्यंभवसूरि के संसारीपुत्र, दशवैकालिक कंठस्थ करके छ मास का आयु पूर्ण करके देवलोक में गये ।

(42) कालकाचार्य : चोथ के दिन संवच्छरी करनेवाले, सीमंधर स्वामी जैसे

निगोद का यथार्थ स्वरुप कहने वाले ।

(43-44) शांब-प्रद्युम्न : कृष्ण के करोडो कुमारो में मुख्य फा.सु. 13 के दिन शत्रुंजय तीर्थ साढे आठ करोड मुनिवरो के साथ मोक्षगमन ।

(45) मूलदेव : बडे जुगारी होने पर भी दीक्षा का शुद्ध पालन करके मोक्ष में गये ।

(46) प्रभवस्वामी : जंबूस्वामी से प्रतिबोध पाकर 500 चोरो के साथ दीक्षा लेकर चौदपूर्वी बने ।

(47) विष्णुकुमार : महापद्मचक्री के भाई दीक्षा लेकर घोर तप करके अनेक लब्धि के स्वामी बने ।

(48) आर्द्रकुमार : अनार्य देश में जन्म होने पर भी प्रभु दर्शन से समकित प्राप्त करके, आर्य देश में आकर अनेक को प्रतिबोध किया ।

(49) द्रढप्रहारी : गाय, ब्राह्मण, स्त्री, बालक चार की हत्या करने के बाद जब तक पाप याद आये तब तक दीक्षा लेकर काउसग्ग ध्यान में रहे । छ मास पश्चात् केवलज्ञान हुआ ।

(50) श्रेयांसकुमार : बाहुबलीजी का पौत्र, आदिनाथ को प्रथम पारणा करानेवाले ।

(51) कुरगडुमुनि : धर्मघोष सूरि के पास दीक्षा लेकर भूख सहन न होने से संवच्छरी के दिन मटके भर के पुडी वापरते केवलज्ञान ।

(52) शय्यंभवसूरी : 'अहो कष्टं तत्त्वं न ज्ञायते' इस शब्द द्वारा प्रतिबोध पाकर वीर प्रभु के चोथी पाट में आकर दशवैकालिक ग्रंथ रचा ।

(53) मेघकुमार : आठ राजकुमारी के साथ शादी होने पर भी वीरप्रभुकी देशना से वैराग्य पाकर दीक्षा लेकर आंख को छोडकर शरीर के कीसी भी अंग का ध्यान न देना एसा अभिग्रह किया

88. भरहेसर सज्झाय में आनेवाली 47 महासतीओ के नाम

(1) **सुलसा :** प्रभु वीर की समकितधारी श्राविका, लक्षपाक तेल की तीन बोटल फूटने पर कोई पश्चाताप नहि । जिससे अंबड तापसने समकित प्राप्त किया आगामी चोवीशी में 15 वे तीर्थंकर का अवतार धारण करेंगे ।

(2) **चंदनबाला :** 36,000 साध्वीजी में मुख्य, शेडुवकभिक्षुक को संयम दिलानेवाले, प्रभुवीर के अभिग्रह को पूर्ण कराने वाली, केवलज्ञान पाकर मोक्ष में गई ।

(3) **मनोरमा :** सुदर्शन शेठ की श्राविका, काउसग्ग ध्यान के प्रभाव से शूली का सिंहासन बना ।

(4) **मदनरेखा :** युगबाहु की शीलवती पत्नी, पति को अंत समय समाधि देकर जंगल में जाकर पुत्र जन्म दिया । जो नमि राजर्षि बना । स्वयं ने दीक्षा ली ।

(5) **दमयंति :** नलराजा की राणी, अष्टापद उपर चोवीशी तीर्थंकरो के ललाट पर तिलक लगाकर, 12 साल का वनवास, चारित्र लेकर देवलोक में ।

(6) **नयमासुंदरी :** पिता-सहदेव पति-महेश्वरदत्त बुद्धि के द्वारा शील की रक्षा की अंत में दीक्षा लेकर अवधिज्ञान प्राप्त कीया ।

(7) **सीता :** जनक की पुत्री, राम की पत्नी, शील की परीक्षा हेतु अग्नि में प्रवेश किया । शील प्रभाव से सिंहासन बना । दीक्षा लेकर बारवे देवलोक में इन्द्र बने ।

(8) **नंदा :** श्रेणीक राजा की पत्नी, अभयकुमार की माता, अखंड शीयल का पालन करके देवलोक में ।

(9) **भद्रा :** शालीभद्र की माता, गोभद्र शेठ की पत्नि, पति व पुत्र वियोग में शीलधर्म का पालन करके आत्मकल्याण किया ।

(10) **सुभद्रासती :** जिनदास पिता, तत्त्वमालिनी माता, ससुराल वाले बौद्धधर्मी होने पर भी चलायमान न हुए । चंपापुरी के द्वार कुए में से कच्चे सूतर द्वारा पाणी निकाल के डाला तो दरवाजे खुल गये । शीलधर्म का जयकार हुआ ।

(11) **राजीमती :** उग्रसेन राजा की पुत्री, नेमिनाथ प्रभु के पास दीक्षा ग्रहण करके गुफा में गये रहनेमि संयम से चलित हुए । हित शिक्षा देकर स्थिर किये ।

(12) **रिसिदत्ता :** कनकरथ राजा की राणी, हरिषेण तापस की पुत्री, कर्म के कारण कलंक लगा । तो भी शील के प्रभाव से दीक्षा लेकर सिद्धपद प्राप्त किया ।

(13) **पद्मावती :** चेटकराजा की पुत्री, दधिवाहन राजा की पत्नी, पिता-पुत्र के युद्ध को रोककर, निर्मल चारित्र पालनकर आत्मकल्याण किया ।

(14) **अंजना सती :** महेन्द्रराजा की पुत्री, पवनंजय की पत्नी, 22 साल तक पति का वियोग, हनुमान पुत्र को जन्म देकर चारित्र लेकर मोक्ष में गये ।

(15) **श्रीदेवी :** श्रीधरराजा की शीलवती राणी का देवता ने अपहरण किया । शील से पतित करने कोशीश की मगर पर्वत समान निश्चल बनकर दीक्षाा लेकर पांचवे देवलोक में ।

(16) **ज्येष्ठा :** चेटकराजा की पुत्री, नंदिवर्धन राजाकी धर्मपत्नि, बारव्रतधारी श्राविका, इन्द्रे प्रशंसा की, देवने परीक्षा की, दीक्षा लेकर कर्म खपाकर मोक्ष में ।

(17) **सुज्येष्ठा :** चेटकराजा की पुत्री, दीक्षा लेकर तीव्र तपस्या करके कर्म खपाकर मोक्ष में ।

(18) **मृगावती :** चेटक राजा की पुत्री, कौशाम्बी के राजा शतानीक **की**

धर्मपत्नि, प्रभुवीर की देशना सुनकर दीक्षा, चंदनबाला श्री का उपालंभ सुनकर पश्चाताप करके केवलज्ञान हुआ व गुरु को दिया ।

(19) प्रभावती : चेटकराजा की पुत्री, उदायन राजा की धर्मपत्नी, जीवित स्वामी के जिनालय में जाकर रोज नृत्य करनेवाली, वीरप्रभु के पास दीक्षा लेकर देवलोक में ।

(20) चेल्लणा : चेटकराजा की पुत्री, श्रेणिकराजा की धर्मपत्नी, प्रभु वीरकी परम श्राविका, प्रभु के वचन से अखंड शीलवती के रुप में प्रसिद्धि प्राप्त की ।

(21-22) ब्राह्मी-सुंदरी : ऋषभदेव प्रभु की दोनो पुत्री, एक लीपी में दूसरी गणित में होशीयार, सुंदरीने 60,000 साल तक आंबिल द्वारा शरीर का शोषण किया । दोनों ने दीक्षा लेकर मोक्षपद प्राप्त किया ।

(23) रुक्मणी : एक विशुद्ध शीलवती नारी थी ।

(24) रेवती : प्रभुवीर की परम श्राविका, तेजोलेश्या वेदना के समय पर कुष्मांड पाक वहोराकर प्रभु की भक्ति की । आगामी चोवीशी में **समाधि** नामके 17 वे तीर्थंकर होंगे ।

(25) कुंती : पांचो पांडवो की माता, वनवास में भी धर्मश्रद्धा, कायोत्सर्ग ध्यान में एकाग्रता, पुत्र व पुत्रवधु के साथ दीक्षा लेकर शत्रुंजय तीर्थ में मोक्ष ।

(26) शिवादेवी : चेटक राजा की पुत्री, चंडप्रद्योत राजा की पट्टराणी, देवकृत उपसंर्ग में अचल, उज्जैनी नगरी में अग्नि प्रगट हुयी पाणी डालते शांत, अंत में चारित्र लेकर मोक्षपद प्राप्त किया ।

(27) जयंति : कौशांबी नगरी में शतानिक राजा की राणी, प्रभुवीर की प्रथम शय्यातरी, अनेक तत्व प्रश्नोत्तरी करने वाली, दीक्षा लेकर मोक्ष में ।

(28) देवकी : वसुदेव की पत्नी, कृष्ण की माता, छ पुत्र के साथ शत्रुंजये मोक्ष, खुद दीक्षा का शुद्ध पालन करके देवलोक में ।

(29) द्रौपदी : पांच पांडवो की पत्नी, पति के साथ दीक्षा ग्रहण की, शील को अखंडित रख के शत्रुंजय तीर्थे देवलोक प्राप्त किया ।

(30) धारणी : चंदनबाला की माता, जंगल में शीलरक्षा हेतु जीभ को कुचडकर प्राण का त्याग किया ।

(31) कलावती : शंखराजा की धर्मपत्नी, राजा को संदेह होने पर पत्नी के हाथ के कंडे काटकर जंगल में भेजी । शीलप्रभाव से हाथ वापिस आये । अंत में दीक्षा लेकर देवलोक प्राप्त किया ।

(32) पुष्पचूला : पुष्पचूल व पुष्पचूला दोनो भाई बहन, परस्पर शादी हुयी, स्वर्ग-नरक देखकर प्रतिबोध पाकर अर्णिकापुत्राचार्य के पास पुष्पचूला ने दीक्षा लेकर केवलज्ञान प्राप्त किया ।

(33 से 40) प्रभावती-गौरी-गांधारी-लक्ष्मणा-सुसीमा-जांबवती-सत्यभामा-रुक्ष्मणी : ये आठों कृष्ण की पटराणी, शीलरक्षा में तत्पर, नेमिनाथ के पास दीक्षा का शुद्ध पालन किया । इस में जांबवती शांब की माता व रुक्ष्मणी प्रद्युम्न की माता थी ।

(41 से 47) यक्षा-यक्षदिन्ना-भूता-भूतदिन्ना-सेणा-वेणा-रेणा : ये सातों स्थूलभद्र स्वामि की बहन है । एक को एक बार सात को सात बार बोलने से याद हो जाता था । सातो बहनो ने दीक्षा लेकर शुद्ध चारित्र का पालन किया व यक्षा आर्या ने सीमंधरस्वामी पास से चार चूलिका लाकर भरतक्षेत्र में अर्पण की ।

89. पंचवस्तु ग्रंथ की पांच वस्तु

➠ (1) प्रवज्या विधान (2) प्रतिदिनक्रिया (3) व्रतस्थापना (4) अनुयोग गणानुज्ञा (5) संलेखना ।

90. स्वाध्याय का लाभ

शतेन पुस्तके विद्या, सहस्त्रेण मुखोद्गता ।
लक्षेण जन्म पर्यन्त कोट्या जन्मान्तरे खलु ॥

➠ कीसी भी वाक्य को सो बार गोखे तो पुस्तक में रहता है । 1,000 बार गोखे तो मुख में रहता है व 1 करोड बार गोखे तो परभव में भी साथ आता है ।

91. स्वाध्याय से 7 गुणों की प्राप्ति

आयहिअ परिण्णा, भावसंवरो नव नवोअ संवेगो
निक्कंपया तवो निज्जराय, परदेसिअत्तं च ॥555॥

(1) **आयहिय परिण्णा :** आत्मा के हित की परिज्ञा यानि स्वाध्याय करने से आत्मा के हित का यथार्थ बोध होता है । जैसे जैसे स्वाध्याय बढता है वैसे वैसे आत्महित का सूक्ष्मतर बोध प्राप्त होता है ।

(2) **भाव संवरो :** आत्मा के आंतरिक स्वभाव में संवृत बनकर रहना वो भाव संवर, स्वाध्याय के कारण श्रुतज्ञान में उपयोग होने से कषाय रहित बनते है जैसे जैसे स्वाध्याय बढता है वैसे वैसे संवरभाव में वृद्धि होती है।

(3) **नवनवो संवेग :** संवेग यानि मोक्ष की इच्छा, नये नये ग्रंथ-शास्त्र-चरित्र का अभ्यास होने से मोक्ष की अभिलाषा में वृद्धि होती है । इसलिये स्वाध्याय को नव नवो संवेग कहा ।

(4) **निक्कंपया :** जैसे जैसे शास्त्र का अध्ययन होता है वैसे वैसे उपशम भाव में सुख का अनुभव होता है । उपशम भाव के कारण उपसर्ग-

परिषह में निष्कंपन पणा (सहन करने की शक्ति) उत्पन्न होता है । उससे दर्शन-ज्ञान-चारित्र की उज्जवलता में वृद्धि होती है ।

(5) **तवो :** स्वाध्याय एक 'पर' तप व 'प्रधान' तप कहलाता है । अभ्यंतर तप जो बताया है उसमें प्रधानता 'स्वाध्याय' तप की है ।

(6) **निज्जरा :** जैसे जैसे स्वाध्याय-धर्मकथा आदि में गहराई प्राप्त होती है। वैसे वैसे कर्मो की निर्जरा होती है । कर्म निर्जरा से मोक्षपद प्राप्त होता है।

(7) **परदेसिअत्तं :** खुद गीतार्थ बनकर दूसरो को बोध देना । जितना स्वाध्याय ज्यादा इतनी गीतार्थ की योग्यता बनती है । शास्त्रपाठ पढनेवाला दूसरो को अच्छी तरह बोध दे सकता है ।

(पंचवस्तु-555)

92. स्वाध्याय की महत्ता ।

बारसविहंमिवि तवे, सब्भिंतर बाहिरे कुसल दिट्ठठे ।
न वि अत्थि, न वि हो ही, सज्झाय समं तवो कम्मं ॥562॥

➠ कुशल तीर्थंकरो ने छ बाह्य व छ अभ्यंतर इस तरह 12 प्रकार के तप बताये है इसमें स्वाध्याय जैसा तप है भी नहि और होगा भी नहि ।

ते अन्नाणी कम्मं खवेइ, बहुआहिं वासकोडिहिं ।
तं नाणी तिहिं गुत्तो, खवेइ उसास मित्ते णं ॥563॥

➠ अज्ञानी व्यक्ति करोडो साल में जो कर्म खपाता है उससे भी तीन गुप्ति से युक्त स्वाध्याय करनेवाला व्यक्ति श्वास मात्र में कर्म खपाता है ।

एसो तित्थयरत्तं सव्वन्नतुं च जायइ कमेणं ।
इअ परमं मोक्खंगं, सज्झाओ होइ पायव्वो ॥566॥

➡ स्वाध्याय करने से जो गुण प्रगट होते है उससे तीर्थंकर पद या सर्वज्ञपद की पदता प्राप्त होता है क्योंकि स्वाध्याय मोक्षांग तत्त्व है ।

(पंचवस्तु)

93. बहुबेल संदिसाहु आदेश क्यों ?

➡ साधु-साध्वीजी व विरतिधर श्रावक-श्राविका पौषध में यह आदेश मांगते है।

(1) **बहुवेल संदिसाहुं :** श्वासोश्वास की क्रिया अपने गुरु को पूछ नहि सकते है।

(2) **बहुवेल करशुं :** आंख के निमेष - उन्मेष भी गुरु को पूछ नहि सकते है। इन दोनो सूक्ष्म क्रिया यह आदेश है तो इन दोनों को छोड़कर सभी कार्य गुरु को पूछना चाहिए। शास्त्राकार ने कितनी महत्ता गुरु की बतायी है। **(पंचवस्तु-553)**

94. तीर्थंकर तुल्य आचार्य भगवंत

तित्थयर समोसूरि (महानिशीथग्रंथ)

➡ हरिभद्रसूरिजीने संबोध प्रकरण नामके ग्रंथ मे तीर्थंकर की तुलना नौ प्रकार से बतायी है ।

(1) जिस तरह तीर्थंकर परमात्मा दूसरे दर्शन से डरते नहि और उनकी लघुता भी नहि होती उसी तरह सूरि भगवंत अन्यदर्शन से डरते नहि व लघुता भी पाते नहि ।

(2) जिस तरह तीर्थंकर तीर्थ की स्थापना के बाद गोचरी जाते नहि उसी तरह सूरि भगवंत गौचरी जाते नहि ।

(3) जिसं तरह तीर्थंकर अर्थ की देशना देते है उसी तरह सूरि भगवंत पंचाचार के अर्थ को विस्तार से समजाते है ।

(4) जैसे तीर्थंकर पर्षदा के मध्य में बैठकर देशना देते है उसी तरह सूरि भगवंत भी पाट के उपर सिंहासन पर बैठकर देशना देते है ।

(5) जिस तरह तीर्थंकर की आज्ञा का उल्लंघन नहि होता उसी तरह सूरि भगवंत की आज्ञा शासन को हितकारी होने से उल्लंघन नहि होता ।

(6) जिस तरह तीर्थंकर मांडली के बीच में बौठकर गौचरी नहि वापरते उसी तरह सूरी भगवंत भी अलग पाट पर बैठकर गौचरी वापरते है ।

(7) जिस तरह तीर्थंकर प्रत्येक गांव-नगर में पूजनीय बनते है उसी तरह सूरि भगवंत भी जहां जाते है वहां स्वागत से पूजनीय बनते है ।

(8) जिस तरह तीर्थंकर परिसहो उपसर्गो को सहन करते है उसी तरह सूरि भगवंत भी अनेक कष्टो को सहन करके शासन प्रभावना करते है ।

(9) जिस तरह तीर्थंकर लोक कार्य की चिंता नहि करते, अपनी प्रशंसा नहि करते, निष्कारण बोलते भी नहि उसी तरह सूरि भगवंत भी अपनी प्रशंसा कीये बिना आचार पालन के द्वारा शासन प्रभावना करते है ।

(संबोध प्र.गुरु अ.गा. 148 से 152)

95. नयचक्र ग्रंथ की दुर्लभता

➠ अति गहन टीका को खोलनेवाले मल्लवादी सूरिने नयचक्र ग्रंथ की रचना की थी । मगर वो ग्रंथ मिलता नहि था । उपा. यशोविजयजीने इस ग्रंथ को एक ब्राह्मण के पास देखा, मगर वो पंडित देते नहि थे । एक बार पंडितजी कथा हेतु बहार गये तब ब्राह्मणी को खुश करके वो ग्रंथ लाकर वि.सं. 1710 मे, पोषमास मे, पाटण नगर में उपा. यशो वि. आदि 7

मुनिवरो ने रात दिन महेनत करके 18,000 श्लोक को अपने अपने अक्षर मे लिखा । भिन्न भिन्न अक्षरवाला नयचक्र ग्रंथ आज भी प्राप्त होता है ।

96. कोडाय का ज्ञानमंदिर

कच्छ प्रदेश के 72 जिनालय के पास कोडाय गांव है । मनसुखलाल ज्ञान उपार्जन हेतु मंडली तैयार की, वहां पर ज्ञान मंदिर का निर्माण, घुम्मट, शिखर आदि तैयार करके बीच में सिंहासन के उपर गणिपिटक (आगमो की पेटी) रखी । प्रतिदिन शिखरबद्ध ज्ञान मंदिर में खमासमणा, काउसग्ग, चैत्यवंदन आदि विधि होती थी । प्रतिदिन पंडित लालन, पं. शिवजीभाई आदि ज्ञानाभ्यास कराते थे । आज भी वहां पर हस्तलिखित ग्रंथ मौजूद है । **(ज्ञानपद भजीये रे पुस्तक मे से)**

97. श्रावक द्वारा श्रुतलेखन

सुरत में 16वीं शताब्दी में एक श्रावक ने एसा अभिग्रह किया था कि जब पौषधशाला में पौषध ग्रहण करे तब 500 श्लोक व घर पर रहे तब 100 श्लोक लिखना । इस तरह आवश्यक अवचूर्णी ग्रंथ संपूर्ण लिखा जो आज भी सुरत के ज्ञान भंडार में हैं ।

(ज्ञानपद भजीये रे पुस्तक मे से)

98. पेथडमंत्री की श्रुत भक्ति

मांडवगढ के आसपास के 84 गांव का पेथड मंत्रीश्वर था । तो भी दोनों समय प्रतिक्रमण करने का नियम था । उसमें भी साधु का संयोग मिले

तो दो योजन तक और चौदस के दिन चार योजन जा कर भी साधु की निश्रा में प्रतिक्रमण करना। क्योंकि साधु बिना पक्खी सूत्र सुनाने वाला कोई नहि।

इसी पेथडमंत्रीने जब विगई का त्याग कीया तब श्राविका प्रथमणी देवीने पूछा क्यों विगई बंध की ? तब मंत्रीश्वर ने बताया राज्य में कार्य ज्यादा होने से समय नहि मिलता है। तब श्राविका ने कहा एसे नहि चलेगा, स्वाध्याय करना पडेगा। जब राजमंदिर पालखी में बैठकर जाओ तब गाथा कंठस्थ करना व वापिस आओ तब पुनरावर्तन करना। इस तरह श्राविका की प्रेरणा से पेथडमंत्रीने उपदेशमाला की 544 गाथा कंठस्थ की थी।

भगवती सूत्र सुनते समय 36,000 सुवर्ण मोहर रखकर श्रुतभक्ति की थी। (सुकृत सागर)

99. कुमारपाल राजा के बार व्रत की झांखी

(1) **प्राणातिपात विरमण व्रत :** अढार देशो में अमारिपडह बजाया व बाकी के 14 देशो में द्रव्य द्वारा जीवरक्षा का पालन कराया। अपने घर 11 लाख घोडे, 80,000 गायो व 80,000 हाथी आदि पशुओ को भी छाण के पाणी पीलाते थे। और सभी हाथी-घोडे पर पूंजणी बांध के रखी थी। 18 देश में पाणी छाण के पीलाने की व्यवस्था की थी। 'मारी' शब्द बोलने पर दंड दिया जाता था।

(2) **मृषावाद विरमण व्रत :** अपने मुख से असत्य वचन यदि निकल जाए तो आंबिल तप करना।

(3) **अदत्तादान विरमण व्रत :** जिसको पुत्र-पति-आदि न हो उसके घर का धन जो ग्रहण करते थे वो प्रथा बंध की। प्रतिसाल एक करोड

द्रव्य साधर्मिक के पीछे खर्च करते थे। इस तरह 14 साल में 14 करोड सोनामहोर खर्च की।

(4) **मैथुन विरमण व्रत :** अपनी आठ राणी को छोड़कर अन्य राणी के साथ मन-वचन-काया से ब्रह्मचर्य का पालन, यदि मन में बुरे विचार आ जाए तो उपवास करना और राणी का स्वर्गवास होने बाद जीवनभर ब्रह्मचर्य का शुद्धरुप से पालन।

(5) **परिग्रह परिमाण व्रत :** परिग्रह के अन्तर्गत छ करोड सुवर्णमोहर, 10 तोला रत्न मणी, 32,000 मण घी, तेल, तीन लाख मुढा धान्य, 11 लाख घोडे, 80 हजार गाये, 80 हजार हाथी, 500 नावडी, 50 हजार रथ, 18 करोड पायदल। इससे ज्यादा कुछ नहि।

(6) **दिग्परिमाण व्रत :** चातुर्मास में कैसा भी कारण आ जाए मगर पाटण छोड के नगर के बहार नहि जाना। इस तरह दसे दिशाओं में यह व्रत रखा था।

(7) **भोगापभोगविरमण व्रत :** मांस, मदिरा, मध, मक्खन यह चार महाविगई का संपूर्ण त्याग। दूसरे देशो में भी त्याग कराने हेतु अथाग प्रयत्न। बावीस अभक्ष्य व बत्रीस अनंतकाय का भी त्याग, चातुर्मास में परिमित द्रव्यो से एकासणा।

(8) **अनर्थदंड विरमण व्रत :** सातो व्यसनो के सात लोहे के पुतले बनाकर 18 देशो में घूमाकर समुद्र में गिराये थे। जुगार-शिकार-चोरी-परस्त्रीगमन-वैश्यागमन-मांसभक्षण-मदिरा ये सात व्यसन छोडाने का प्रयत्न कराया।

(9) **सामायिक व्रत :** दोनो समय का प्रतिक्रमण व प्रतिदिन सामायिक करना। सामायिक मे गुरु को छोडकर कीसी के साथ बात नहि करना।

प्रतिदिन वीतरागस्तोत्र के 20 व योगशास्त्र के 12 एसे **32** प्रकाश का स्वाध्याय करना ।

(10) **देशावगासिक व्रत :** चातुर्मास में कभी कभी 8 सामायिक व दो प्रतिक्रमण करते । लडाई करने आये तो भी नहि जाना । सुलतान मौका देखकर लडने आया तो गुरु ने चमत्कार बताकर बोध पाया ।

(11) **पौषधव्रत :** अष्टमी-चतुर्दशी के एक दिन पूर्व ढंढेरा पीटाते थे कि अष्टमी...चतुर्दशी का पौषध करने जाना है । और पौषध में अनेक सामंतो के साथ जाकर पौषध करते । एक बार काउसग्ग ध्यान मंत्र ।

(12) **अतिथि संविभाग व्रत :** जो राजा के साथ पौषध करने जाते उन सभी का प्रथम पारणा कराके फिर-खुद एकासणा व्रत करते व सभी को अलंकार आदि की भेट कराता । पौषधशाला व उपकरणो का ध्यान-पडिलेहण रखनेवाले व्यक्ति को 500 घोडा व सात गांव करवेरा की आमदानी भेट की । **(उपदेशकल्पवल्ली)**

100. सम्यग्दर्शन निर्मल हेतु 10 प्रकार की रुचि

(1) **निसर्ग रुची** - अपनी बुद्धि से तत्त्वो के उपर श्रद्धा रखना

(2) **उपदेश रुचि** - नवतत्त्व का उपदेश सुनकर श्रद्धा करना ।

(3) **आज्ञा रुचि** - सर्वज्ञ के वचन को सुनकर श्रद्धा करना ।

(4) **सूत्र रुचि** - गणधर प्रणीत सूत्रो के उपर रुचि रखना ।

(5) **बीज रुचि** - जैसे बीज अनेको को उत्पन्न करता है एसे एक शब्द द्वारा अनेक अर्थ सुनकर रुचि करना

(6) **अधिगम रुचि** - चौदपूर्व के रहस्य को सुनकर श्रद्धा करना ।

(7) **विस्तार रुचि** - द्रव्य-नय-प्रमाण आदि का विस्तार सुनकर श्रद्धा करना ।

(8)	**क्रिया रुचि**	-	पांच प्रकार के आचार का पालन देखकर रुचि करना।
(9)	**संक्षेप रुचि**	-	त्रिपदी सुनकर द्वादशांगी के विस्तार पर रुचि करना।
(10)	**धर्म रुचि**	-	श्रुतधर्म का महिमा सुनकर श्रुतधर्म में रुचि करना।

(सम्यकत्व प्रकरण)

101. वस्तुपाल मंत्री के बिरुद

(1) प्राग्वाटजाति अलंकरण
(2) सरस्वती कंठाभरण
(3) सचित चूडामणी
(4) कूर्चाल सरस्वती
(5) धर्मपुत्र
(6) दाताचक्री
(7) अतीजायबुद्धि तुल्य
(8) लघुभोज राजा
(9) रुचि कंदर्प
(10) चतुर चाणाक्य
(11) ज्ञात वराह
(12) ज्ञाति गोवाल
(13) सैयद वंश
(14) सांखालारायमानमर्दन
(15) सर्वजनश्लाघनीय
(16) परनारी सहोदर
(17) ऋषी पुत्र
(18) उत्तम जन माननीय
(19) निर्विकार पुरुष
(20) धीरगंभीर

(वस्तुपाल बिरुदावली)

102. वांदणा के 25 आवश्यक

दोवणय महाजायं, आवत्ता चउसिर तिगुतं ।

दुपवेसिग निक्खमणं, पणवीसावसय किइकम्मे ॥18॥

2 - दो अवनत - खडे खडे दो बार मस्तक झुकाना

1 - एक यथाजात मुद्रा - उभडग पैर बैठना

12 - बार आवर्त - 12 बार मुहपत्ति व मस्तक का स्पर्श
4 - चार शिरोनमन - बैठे बैठे चार बार मस्तक झुकाना
3 - तीन गुप्ति - मन-वचन काया की गुप्ति से गुप्त बनना
2 - दो प्रवेश - दो बार चरवले से पूंजकर अवग्रह में प्रवेश करना ।
1 - एक निष्क्रमण - एकबार आवस्सहि बोलते समय बहार निकलना । (गुरुवंदन भाष्य)

103. नगरशेठ की पोल में गोडीजी पार्श्वनाथ

सुरत के शेठ डाह्याभाई लालभाई नवलखा परिवारने सुरत से मोरवाडा के गोड़ीजी पार्श्वनाथ दर्शनार्थे संघ निकाला । उस समय शेठाणी का गर्भ काल पूर्ण होने की तैयारी पर शेठाणी संघ में ज़ा न सके । संघ प्रयाण होने के पश्चात शेठाणी अपनी आत्मा की निंदा करने लगे, अरे रे ! कैसा मेरा कर्म का उदय आया । मुझे संघ मे जाने को न मिला । परमात्मा व साधु-साध्वीजी के भक्ति का लाभ मुझे न मिला । पश्चाताप के कारण आंश में से आंसू गिरने लगे । तीव्र पश्चाताप के कारण शेठाणी का भाग्योदय जगा । संघ में रहे हुए प्रतिमाजी ने शेठाणी को दर्शन दिये। उस समय हर्ष विभोर बनकर शेठाणीने अपना सुवर्णहार प्रभु को पहना दिया । प्रतिमाजी हार के साथ मोरवाड में प्रगट हुए । शेठ आश्चर्य मे गिरे संघ पूर्णता के बात सुरत जाकर शेठने सभी बात की जानकारी ली ।

सुरत में नगर शेठ की पोल के अन्तर्गत वि.सं. 1882 में गोड़ीजी पार्श्वनाथ जिनालय का निर्माण किया । जो आज भी मौजूद है इसी जिनालय में पित्तल का समवसरण है जो अजारी से लाया हुआ है ।

(जैन परंपरा का इतिहास)

104. नवसारी में चिंतामणी पार्श्वनाथ

700 साल पूर्व नवसारी की जोरदार जाहोजहाली थी । तेजपाल मंत्री एकबार सोपारक तीर्थ की यात्रा करके वापिस आ रहे थे तब बीच में नवसारी आने पर वहां बावन जिनालय का निर्माण किया । और उसमे चिंतामणी पार्श्वनाथ दादा की प्रतिष्ठा करवायी उसके बाद मुसलमानो का आक्रमण हुआ मंदिर मस्जिद बन गए । अभी जो मूर्ति है वो स्वप्नानुसार भूगर्भ में से प्राप्त हुयी है । **(तीर्थ दर्शन)**

105. आज्ञा में धर्म की प्रधानता

आणाए तवो आणाए संयमो, तध्य दाण माणा ए ।
आणारहिओ धम्मो, मुणिणं भणिओ तहा असारो ॥155॥
जह तुस खंडण मय मंडणाणि, रुइयाणि सुण्णरणंमि ।
विहलाइ तहा जाणसु, आणारहिअं अणुट्ठाणं ॥156॥

भावार्थ : आज्ञा के अनुसार तप है आज्ञा में संयम है आज्ञा में दान है । आज्ञा बिना का धर्म मुनिओ को असार बताया है । जिस तरह फोतरे को खांडना, मृतक को सजाना, जंगल में जाकर रोना निरर्थक है । उसी तरह आज्ञा बिना का अनुष्ठान निष्फल है । **(संबोध प्रकरण)**

106. उणोदरी तप का वर्णन

अप्पाहार अवड्ढा-दुभाग पत्ता तहेव किं चूणा ।
अट्ठदुवालस सोलस, चउवीस तहेक्क तीसाय ॥

(दश.नि.गा.47 टीका)

- 1 से 8 कवल का आहार - अल्पाहार
- 9 से 12 कवल का आहार - अपार्द्ध
- 13 से 16 कवल का आहार - द्विभाग
- 17 से 24 कवल का आहार - प्राप्त
- 25 से 31 कवल का आहार - किंचिन्यून आहार कहलाता है ।

31 कवल तक का आहार उणोदरी तप कहलाता है । कुकडी के इंडे प्रमाण कवल पुरुष को 32 कवल व स्त्री को 8 कवल का आहार निश्चित से बताया है । **(दश नि.गा. 47 टीका)**

107. 'छ' प्रकार की अप्रशस्त भाषा

(1) **हिलीता** - अनादर पूर्वक किसी को बुलाना हे साधु ।

(2) **खींसीता** - सामने व्यक्ति का अयोग्य वर्तन देखकर निंदापूर्वक बुलाना हे चोर !

(3) **पुरुष** - अपशब्द द्वारा बुलाना हे दुष्ट हे बदमाश !

(4) **अलीक** - जूठा आरोप लगाकर बुलाना, उंघणशी !

(5) **गार्हस्थी** - गृहस्थ की भाषा बोलना, काका, मामा, अंकल, आंटी आदि

(6) **उपशमकलह प्रवर्तिनी** - झघडा शांत हो जाने पर वापिस निमित्त देकर झघडा कराना ।

108. छ प्रकार के शब्दो का अवाज

(1) **तत** - मृदंगादि से उत्पन्न होने वाला अवाज ।

(2) **वितत** - वीणा आदि से उत्पन्न होने वाला आवाज ।

(3) **धन** - कांसा की थाली उफर डंके का आवाज ।

(4) **शुषिर** - बांसुरी-पावा आदि से उत्पन्न होने वाला आवाज ।

(5) **संघर्ष** - लकडे के उपर करवत के द्वारा उत्पन्न होने वाला आवाज ।

(6) **भाषा** - प्राणी अपने मुख के द्वारा उत्पन्न होने वाला आवाज ।

(तत्वार्थ सभाष्य)

109. पांच प्रकार की निद्रा

(1) **निद्रा :** सुख पूर्वक उठ सके या एक ईशारा से जाग्रत हो सके ।

(2) **निद्रानिद्रा :** थोडे मुश्केली से जाग्रत होना ।

(3) **प्रचला :** बैठे बैठे या खडे खडे झोका खाना ।

(4) **प्रचलाप्रचला :** चलते-चलते नींद लेना ।

(5) **थीणद्धि :** दिन मेंचिंतन किया हुआ कार्य रात को नींदमें करना । इस निद्रा में वासुदेव से आधी ताकात होती है जो मर के नरक में जाता है ।

(कर्मग्रन्थ)

110. धर्मकथा के चार प्रकार

(1) **आक्षेपणी :** साधु या श्रावक एसी धर्मकथा करे जिसके कारण श्रोता के कान व मन दोनो प्रसन्नता के साथ धर्म सन्मुख आगे बढे ।

(2) **विक्षेपणी :** दूसरे दर्शन (धर्म) का त्याग करके मिथ्यात्व से विमुख बनना ।

(3) **संवेदनी :** नरकादि दु:खो का वर्णन, पाप कर्म का बंध कैसे होता है। संसार का सुख कैसे कम करना एसी ईच्छा उत्पन्न होनी ।

(4) **निर्वेदनी :** महापुरुष के जीवन चरित्र को सुनकर संसार प्रति निर्वेद उत्पन्न होवे और संयम लेकर मोक्ष मार्ग प्राप्त करने इच्छा उत्पन्न होवे ।

111. तीर्थ किसको कहना ?

तित्थं भंते ! तित्थं ? तित्थयरे तित्थं ? गोयमा ! अरिहा ताव नियमा तित्थयरे, तित्थं पुण चाउव्वण्णे समणसंघे पढमगणहरे वा ॥

➠ **भावार्थ :** गौतम स्वामीने प्रभु महावीर को प्रश्न पूछा हे परमात्मा ! तीर्थ किसको कहते है ? परमात्माने कहा हे गौतम !

(1) **प्रथम तीर्थ :** तीर्थं की स्थापना करनेवाले तीर्थंकर परमात्मा ।

(2) **द्वितीय तीर्थ :** तीर्थंकर जिस संघ की स्थापना करते है वो चतुर्विघ संघ !

(3) **तृतीय तीर्थ :** तीर्थंकर जिसको प्रथम दीक्षा देते है । वो प्रथम गणधर ! इस तरह तीर्थंकर ने तीनो को तीर्थ की उपमा दी है इसलिये परमात्मा भी नमो तित्थस्स बोलकर नमस्कार करते है । **(भगवतीसूत्र-683)**

112. सच्चा सम्यक्त्व

मन्नइ तमेव सच्चं, निसंकं जं जिणेहिं पन्नतं ।
सुहपरिणामा सम्मं, कंखाइ विसुत्ति आराहिओ ॥1॥

➠ परमात्मा ने जो कहा वो ही सच्चा है इस तरह संदेह बिना मानना अन्य धर्म की इच्छा कीये बिना सच्चा मानना वोही आत्मा का शुभ परिणाम है । **(छठी वींशीका गा.14)**

113. कौन सी तिथी मे कौन सी आराधना

(1) **अजुआली बीज** - ज्ञान की आराधना

(2) **अजुआली पांचम** - ज्ञान की आराधना

(3) **अजुआली अष्टमी** - चारित्र की आराधना

(4) **अजुआली एकादशी** - ज्ञान की आराधना

(5) **अजुआली चौदस** - चारित्र की आराधना

इन पांच तिथि में पौषध की आराधना करनी चाहिए उसमें जब ज्ञान की तिथी हो उसी दिन ज्ञान की आराधना व चारित्र के दिन चारित्र की आराधना करनी चाहिए । **(संबोध प्रकरण)**

114. पांच समिति का स्वरुप

इर्याभाषैषणाऽऽदान निक्षेपोत्सर्गाः समितयः ॥9-5॥

(1) **भाष्यम्** - तत्रावश्यकायैव संयमार्थ सर्वतो युगमात्र निरीक्षणा युक्तस्थ शनैर्न्यस्तपदा गतिरीर्यासमिति ॥1॥

➠ **भावार्थ :** आवश्यक कार्य हेतु चारों तरफ युग प्रमाण भूमि का निरीक्षण करते करते धीरे धीरे पैर रखते रखते चलना वो इर्यासमिति ।

(2) **भाष्यम्** - हितमित्तासंदिग्धानवद्यार्थनियतभाषणं - भाषासमिति ॥2॥

➠ **भावार्थ :** हित-मित-अशंकित-निरवद्य भाषा बोलना वो भाषा समिति ।

(3) **भाष्यम्** - अन्न - पान - रजोहरण - पात्र - चीवरादिनां - धर्मसाधनानामाश्रयस्य - चौद्गमोत्पादनैषणादोष वर्जनमेषणासमितिः ॥3॥

➠ **भावार्थ :** आहार-पाणी-रजोहरण-पात्र-वस्त्र आदि धर्म साधन के आश्रय में रहे हुए उद्गम के **16** दोष, उत्पादन के **16** दोष व एषणा के **10** दोष इस तरह **42** दोषो का वर्जन यानि 42 दोष रहित आहारादि की गवेषणा करना वो एषणासमिति ।

(4) **भाष्यम्** - रजोहरण पात्र चीवरादिनां पीठफलकादीनां चावश्यकार्थं निरीक्ष्य प्रमूल्य चादान निक्षेपौ आदान निक्षेपणासमितिः ॥4॥

➡ **भावार्थ :** रजोहरण:पात्र-वस्त्र-पाट-पाटला आदि आवश्यक कार्य हेतु उपकरणो को देखकर एवं प्रमार्जना करके लेना-रखना वो है आदान-भंड-मत्त-निक्खेवणा समिति ।

(5) **भाष्यम्** - स्थण्डिले - स्थावर जंगम जन्तु वर्जिते निरीक्ष्य प्रमुख्य च मूत्र पुरीषा दीनामुत्सर्ग उत्सर्ग समितिरिति ॥5॥

➡ **भावार्थ :** स्थावर व सजन्तु जीवो के बिना की भूमि को देखकर वडीनीति लघुनीति परठवना वो है उत्सर्ग समिति ।

(तत्त्वार्थसभाष्या भाषांतर)

115. तीन गुप्ति का स्वरुप

सम्यग् यौगनिग्रहोगुप्ति - अच्छी तरह योग का निग्रह करना वो गुप्ति

(1) भाष्यम् - **सावद्य संकल्प निरोधः कुशलासंकल्पः कुशलाकुशल संकल्प निरोध एव वा मनोगुप्तिरिति ।**

➡ **भावार्थ :** सावद्य (पापमय) विचार को रोककर, कुशल संकल्प यानि कुशल अकुशल संकल्प को रोकना वो मनोगुप्ति ।

(2) **भाष्यम् - याचन पृच्छन् प्रश्न व्याक्रणेषु वाङ्‍िनेयमो मौनमेववा. वाग्गुप्तिः**

➡ **भावार्थ :** मांगना-पूछना आदि प्रश्नों के जवाब देने में वाणी का नियमन रखना यानि मौन रखना वो वचन गुप्ति

(3) **भाष्यम् - तत्र शयनाऽसनाऽऽदाननिक्षेप स्थान चंक्रमणेषु कायचेष्टा नियम कायगुप्ति ।**

➡ **भावार्थ :** शयन, आसन, लेना, रखना, खडा रहना, गमन करना उसमें काय गुप्ति का नियमन रखना वो काय गुप्ति । **(तत्त्वार्थसभाष्य)**

प्रवचनस्य द्वादशांगस्थ तदाधारस्य वा संघस्य मातर इव-जनन्य इव प्रवचनमातरः इर्यासमित्यादयो

भावार्थ : द्वादशांगी के आधार से ही इन समितिओ का निर्माण हुआ उसके लिए इर्यासमिति आदि आठमाता संघमाता कहलाती है ।

(समवायांग टीका)

116. सिद्धचक्र यंत्र किसने निकाला ?

बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामी के शासन में जब मयणा की शादी उंबर राणा के साथ हुयी तब शादी के प्रथम दिन जिनालय में जाकर फिर गुरु के पास जाते है तब मयणा गुरु को विनंती करती है आप एसा उपाय बतावो जिससे जिनशासन की हीलना न होवे । उस समय पूर्व के ज्ञाता मुनिसुंदरसूरिने 'विद्याप्रवाद पूर्व में से शुद्ध आराधना हेतु सिद्धचक्र यंत्र की विधी निकालकर मयणा को अर्पण की । मध्यबिंदु में अरिहंत परमात्मा को स्थापन कीया । सिद्धपद आदि आसपास स्थापना करके शाश्वते दिनों में शाश्वते पद की आराधना करनी चाहिए । मयणा व उंबरराणा ने आसोमास के शाश्वते दिन में आंबिल तप के साथ आराधना का प्रारंभ किया । अपना घर न होने पर दूसरे घर जाकर आराधना की । नौ दिन में सुवर्ण जैसा शरीर हो गया ।

(श्रीपाल-मयणा रहस्य)

117. कायोत्सर्ग का प्रभाव

मयणासुंदरी शादी के पश्चात् उंबर राणा के साथ लेकर प्रभु के जिनालय में दर्शन-पूजा करने जाते है । चैत्यवंदन विधी पूर्ण होने के पश्चात् मयणा

काउसग्ग ध्यान में खडी है और उंबर राणा हाथ जोडके खडा है। उस समय कायोत्सर्ग के प्रभाव से परमात्मा के गले में रही हुयी पुष्पमाला व हथेली मे रहा हुआ बीजोरा दोनों अद्रश्य रुप से उंबर राणा के गले व हाथ में आते है यह है कायोत्सर्ग का प्रभाव।

➡ पांच पाडव, द्रौपदी व कुंती माता सातो व्यक्ति 12 साल तक वनवास में घूमते घूमते एक स्थान पर बैठते है उस समय विद्याधर मुनि वहां पर आते है तब माता ने पूछा ओ मुनिवर ! हमारे दुःख का अंत कब आयेगा। मुनिवर ने कहा आठ दिन में एसा कहकर मुनिवर अद्रश्य हो गये। उस समय पांचो पांडव आदि सातव्यक्तिने उपवास करके कायोत्सर्ग ध्यान में खडे रहे जब तक उपद्रव दूर न होवे तब तक।

इस तरफ दुर्योधन ने पांचो पांडवो को मारने हेतु राक्षसी की साधना की और राक्षसी मारने भी गई मगर कायोत्सर्ग के प्रभाव से कुछ कर न सकी। आठ उपवास के बाद नौंवे दिन पारणे के समय मुनिवर पधारे दान दिया। पंचदिव्य प्रगट हुए। सभी दुःख दूर हो गये।

(पांडव चरित्र)

118. श्रीपाल राजा द्वारा उद्यापन।

➡ मयणा सुंदरी व श्रीपालराजा ने तप की पूर्णाहुती पर उद्यापन कीया था।

(1) अरिहंत परमात्मा के 34 अतिशय हेतु - 34 हीरे (सफेद रंग के)

(2) सिद्ध परमात्मा के 31 गुण हेतु - 31 कर्केतन रत्न (लाल रंग के)

(3) आचार्य भगवंत के 36 गुण हेतु - 36 पुखराज (पीले रंग के)

(4) उपाध्याय भगवंत के 25 गुण हेतु - 25 नीलम पन्ना (हरे रंग के)

(5) साधु भगवंत के 27 गुण हेतु - 27 रिष्ट रत्न (काले रंग के)

(6) दर्शनपद के 67 गुण हेतु - 67 मोती (सफेद रंग के)
(7) ज्ञानपद के 51 गुण हेतु - 51 मोती (सफेद रंग के)
(8) चारित्र पद के 70 गुण हेतु - 70 मोती (सफेद रंग के)
(9) तप पद के 50 गुण हेतु - 50 मोती (सफेद रंग के)

119. शत्रुंजय महातीर्थ में मोक्ष जाने वाले महात्मा

	मोक्ष मे जाने वाले	कितने मुनिवर साथ
(1)	द्राविड-वारिखिल्ल	10 करोड मुनि
(2)	नमि - विनमि	दो करोड मुनि
(3)	शांब - पद्युम्न	साढे आठ करोड मुनि
(4)	पुंजरिक गणधर	पांच करोड मुनि
(5)	अजितनाथ के साधु	10,000 मुनि
(6)	नमि विद्याधर की पुत्री	64 पुत्री
(7)	पांच पांडव	बीस करोड मुनि
(8)	नारद मुनि	91 लाख मुनि
(9)	राम भरत	3 करोड मुनि
(10)	सोमयशा राजा	13 करोड मुनि
(11)	भरतमुनि	1000 मुनि
(12)	वासुदेव की पत्नी	35,000
(13)	शांतिनाथ भ. के चोमासे मे	1,52,55,777 मुनि
(14)	सागर मुनि	1 करोड मुनि
(15)	भरतमुनि	5 करोड मुनि
(16)	अजितसेन मुनि	17 करोड मुनि

(17)	शांतिनाथ के साधु	10,000 मुनि
(18)	प्रद्युम्न प्रियावैदर्भी	4400 साध्वीजी
(19)	आदित्ययशा	1 लाख मुनि
(20)	बाहुबली के पुत्र	1008 मुनि
(21)	दमितारी मुनि	14,000 मुनि
(22)	थावच्चा गणधर	1000 मुनि
(23)	शुक्राचार्य	1000 मुनि
(24)	कालिकमुनि	1000 मुनि
(25)	कदंब गणधर	1 करोड मुनि
(26)	सुभद्र मुनि	700 मुनि
(27)	शैलक मुनि	500 मुनि
(28)	सुर राजा	3000 मुनि
(29)	वीरराजा	बहोत साधु के साथ
(30)	शुक राजा	एक करोड मुनि
(31)	दंडवीर्य राजा	सात करोड स्त्री-पुरुष
(32)	धर्मघोष मुनि	2 करोड मुनि
(33)	बाहुबल्ली पुत्र	1 करोड मुनि
(34)	मरुदेव यतीश्वर	500 मुनि
(35)	भगीरथ राजा	कोटाकोटि साधु
(36)	सोमदेव राजा	1 लाख मुनि
(37)	वीर राजा	3 लाख मुनि
(38)	स्वयंप्रभ देव ने प्रथम दिन	1 लाख साधु
(39)	स्वयंप्रभ देव ने दूसरे दिन	1 करोड साधु

(40)	स्वयंप्रभ देव ने तीसरे दिन	5000 साधु
(41)	स्वयंप्रभ देव ने चोथे दिन	105 साधु
(42)	स्वयंप्रभ देव ने पांचवे दिन	10 साधु
(43)	स्वयंप्रभ देव ने छठे दिन	800 साधु
(44)	स्वयंप्रभ देव ने सातवे दिन	638 साधु
(45)	रणवीर राजा	3 लाख साधु
(46)	धरापाल के संघ में	1 लाख साधु
(47)	कदंबसूरि	1 लाख साधु
(48)	ऋषभसेन जिनेश्वर	बहोत साधु
(49)	चंद्रधन जिनेश्वर	बहोत साधु
(50)	आदिनाथ की हाजरी में	1 लाख साधु
(51)	आदिनाथ की हाजरी में	50,000 साधु
(52)	अजितनाथ की हाजरी में	3 लाख साधु
(53)	सुमतिनाथ की हाजरी में	दो लाख साधु
(54)	धर्म केवली	1000 साधु
(55)	काल वणिक	1000 साधु
(56)	विमलनाथ पधारे तब	1 लाख साधु
(57)	धन मंत्री	500 सुभट साथ
(58)	मल्लीनाथ पधारे तब	8000 साधु
(59)	मुनिसुव्रतस्वामी पधारे तब	3 लाख साधु
(60)	पार्श्वनाथ पधारे तब	300 साधु
(61)	चंद्रवेग जिनेश्वर	दो क्रोड साधु
(62)	श्रेयांस कुमार के	15 पुत्रो दीक्षा लेकर

(63) वीर्यसार राजा 1 करोड मुनि

(64) पांडवपुत्रो के बाद 550 राजपुत्रो

(65) निष्प्रयक यति 1 लाख साधु

120. नवपद जाप का प्रभाव

➡ श्रीपाल व मयणा के रोम रो¯ में नवपद बसे थे, जब श्रीपाल राजा परदेश जाता है तब मयणा अभिग्रह करती है, जब तक मेरे स्वामी घर नहि आयेंगे तब तक एकासणा का व्रत, सचित का त्याग, भूमि पर संथारा, शणगार का त्याग, सिर्फ प्रभु भक्ति को छोडकर स्नान का त्याग, नवपद का जाप ।

इस तरफ श्रीपाल परदेश जाता है मगर धवलशेठ लोभ के कारण वैशाख शुक्ल-नवमी के दिन समुद्र में डालते है उस समय श्रीपाल नमोअरिहंताणं बोलता है समुद्र में गिरने के बाद नवपद का जाप चालू है जाप के प्रभाव से दूसरे दिन गांव मिल जाता है । वैशाख शुक्ल-10 के दिन थाणा नगर में हाथी पर बैठ के प्रवेश कर रहे है मदनमंजरी कन्या व अढलक संपत्ति का स्वामी बनता है ।

(श्रीपाल मयणा के रहस्य)

121. श्रावक की अग्यार प्रतिमा

➡ **दंसण वय सामाइय पोसइ, पडिमा कायोत्सर्ग अबंभ सचित्ते ।**
आरंभ पेस उद्दिट्ठवज्जए समण भूएय ॥1093॥ (संबोधप्रकरण)

(1) **सम्यग्दर्शन प्रतिमा :** शम-संवेग-निर्वेद-अनुकंपा-आस्तिक्य इन पांच गुणो से युक्त, शंका-काक्षा दोषो से रहित, शुश्रुषा, धर्मराग, समाधिभाव

एवं देव-गुरु की सेवा करनेवाला - 1 मास की प्रथम प्रतिमा स्वीकार सकता है ।

(2) **व्रत प्रतिमा :** श्रावक-श्राविका के जो बार व्रत बताये है वो ही 12 व्रतो का धारन करने वाला दो मास तक द्वितीय प्रतिमा स्वीकार सकता है।

(3) **सामायिक प्रतिमा :** प्रतिदिन एक सामायिक स्वाध्याय के साथ अवश्य करना । इसका प्रमाण तीन मास का है ।

(4) **पौषध प्रतिमा :** पांच तिथि अवश्य पौषध करना । यह प्रतिमा चारमास की है ।

(5) **कायोत्सर्ग प्रतिमा :** संपूर्ण रात्रि कायोत्सर्ग कर्ना । साथ में पौषध करना। यह प्रतिमा पांच मास की है ।

(6) **अब्रह्म प्रतिमा :** स्नान का त्याग, प्रकाश में भोजन, धोती के कछोटी का त्याग। दिवस में संपूर्ण ब्रह्मचर्य पालन, रात्रि में परिमाण, शृंगार कथा, स्त्री कथा, शरीर विभूषा का त्याग, यह प्रतिमा छ मास की होती है ।

(7) **सचित त्याग प्रतिमा :** सचित्त का सर्वथा त्याग यह प्रतिमा सात मास की है ।

(8) **आरंभ वर्जन प्रतिमा :** आठ मास तक स्वयं द्वारा आरंभ-समारंभ का त्याग । गरम पाणी से स्नान व परमात्मा की पूजा ।

(9) **प्रेष्यवर्जन प्रतिमा :** नव मास तक दूसरे के पास कोई कार्य नहि करवाना समस्त कार्य जयणा के साथ स्वयं करना ।

(10) **रुद्दीष्ट वर्जन प्रतिमा :** दश मास तक मस्तक मुंडाना, अपने लिया बनाया हुआ आहार का त्याग, स्वाध्याय ध्यानमें मस्त रहना ।

(11) **श्रमणभूत प्रतिमा :** लोच कराना, साधु के उपकरण पास में रखना, घर घर् से भिक्षा प्राप्त करना, भिक्षा जाते समय "**प्रतिमा प्रतिपन्नाय**

श्राद्धाय भिक्षा देहि'' प्रतिमाधारी श्रावकको भिक्षा दीजिए । इस तरह बोलना, मुनि की वसति से दूर रहना, प्रमाद का त्याग करके विभिन्न स्थानो में विचरना ।

यह श्रावक धर्म की उत्कृष्ट आराधना है । 1 मास मे लगाकर 11 मास तक की आराधना है । प्रथम प्रतिमा में जो आराधना है वो ही आराधना दूसरी में होनी चाहिए । तीसरी प्रतिमा में प्रथम द्वितीय साथ में इस तरह 66 मास तक धारण करने की है भाव द्वारा सर्व विरती के परिणाम लाने का है वीरप्रभु के दसो श्रावको ने यह प्रतिमा धारण की थी । **(उपासक दशांगसूत्र)**

122. साधु की 12 प्रतिमा

मासाई सत्तंता पढमा बि तइअ सत्तराइदिणा ।
अहराइ एगराइ भिक्खू पडिमाणं बारसंग ॥139॥ (आ.भा. पञ्चाशक)

आवश्यक सूत्रस्य चतुर्थेऽध्ययने बारसहिं भिक्खू पडिमाहिं इत्यस्य हरिभद्रयां वृत्तौ ।

➠ **साधु की प्रतिमा कौन स्वीकार सकता है ?**

(1) वज्रऋषभनाराय संघयणवाला, धैर्यवान्, महासत्ववान, भावितात्मा, तप एवं पंच भावो से युक्त, गुरु आज्ञा से गच्छ में रहने वाला है । उत्कृष्ट से न्यूनदश पूर्व एवं जघन्य से नवमे पूर्व की तीसरी आचारवस्तु का ज्ञान हो वो ही साधु भिक्षु प्रतिमा स्वीकार सकता है ।

(1) प्रथम प्रतिमा : 1 मास की - एक दत्ति भोजन एकदत्ति पाणी

(2) द्वितीय प्रतिमा : दो मास की - दो दत्ति भोजन दो दत्ति पाणी

(3) तृतीय प्रतिमा : तीन मास की - तीन दत्ति भोजन तीन दत्ति पाणी

(4) चतुर्थ प्रतिमा : चार मास की - चार दत्ति भोजन चार दत्ति पाणी

(5) पंचम प्रतिमा : पांच मास की - पांच दत्ति भोजन पांच दत्ति पाणी

(6) छठ्ठी प्रतिमा : छ मास की - छ दत्ति भोजन छ दत्ति पाणी

(7) सातवी प्रतिमा : सात मास की - सात दत्ति भोजन सात दत्ति पाणी

(8) आठवी प्रतिमा : प्रथम के सात रात्रि दिन चोविहारा एकांतरा उपवास् गांव के बहार रहना । पारणे दत्ति द्वारा आंबिल तप । मुख उंचा करके सोना गांव के बहार रहकर उपसर्ग सहन करना ।

(9) नवमी प्रतिमा : सात अहोरात्रि की, चोविहारा एकांतर उपवास, पारणे दत्ति वाला आंबिल, यथाजात मुद्रा, पैर की पानी सिर्फ भूमि पर स्पर्श करे परंतु बीच का भाग न स्पर्शे । राज को दंड की तरह सोना व उपसर्ग सहन करना ।

(10) दशवी प्रतिमा : सात अहोरात्रिकी मगर इसमें गोदोहिका मुद्रा में बैठना कुर्सी पर बैठकर कुर्सी ले लेना एसी मुद्रा में बैठना । दाये पैर को बाये साथल पर व बाये पैर को दाये साथल पर रखना । दोनो हाथ को इक्कट्ठा करके नाभि के पास रखकर ध्यान करना ।

(11) अग्यारवी प्रतिमा : सिर्फ एक रात दिन की चोविहारा छठ करना । गांव के बहार जाकर लम्बे हाथ करके काउसग्ग मुद्रा में खडा रहना । इस तरह तीन दिन परिपूर्ण होने पर वापिस छठ तप करना ।

(12) बारवी प्रतिमा : यह प्रतिमा एक अहोरात्रि की है अंतिममें अट्ठम तप करना वो भी चोविहार, गांव की बहार काउसग्ग ध्यान में खडे रहना। शरीर को कुछ नीचा झुकाकर एक पुद्‌गल पर निश्चल द्रष्टि रखकर ध्यान धरना । दोनो पैर के बीच में चार अंगुल रखकर काउसग्ग ध्यान में रहना ।

(पंचाशक - 18/20)

123. सप्तस्वर यानि क्या ?

अक्खरसमं पयसमं तालसमं लयसमं गहसमं च ।
नीससिउससियसमं सञ्चारसमं सरासत्त ॥5॥

➡ **भावार्थ :** अक्षरसम । पद सम । लय सम । ग्रह सम । निश्वसित्तोच्छवसित सम । संचारसम ये सात प्रकार के स्वर है ।

(1) **अक्षर सम :** जिसमें दीर्घ स्वर में दीर्घ, हृस्व स्वर में हृस्व करना व श्रुत अनुनासिक का बराबर ध्यान रखना वो अक्षर सम ।

(2) **पद सम :** जो गेयपद नामिक आदि अभ्यंतर बंध द्वारा बांध के जो स्वर में मिश्रित होता है उसके द्वारा गीत में गाना वो पदसम ।

(3) **ताल सम :** परस्पर स्वर के अनुसार हस्तताल आदि बजाना वो तालसम ।

(4) **लय सम :** शृंग, लकडा, बांस आदि में से एक अंगुलि कोशिक द्वारा घसाया हुआ तंगी के स्वर का प्रकार का लय उसके अनुसार गानेवाला का गीत वो लय सम ।

(5) **गृह सम :** पहले से वंसतंत्री आदि द्वारा जो स्वर ग्रहण किया उनके जैसा गाने वाला ग्रह सम ।

(6) **निश्वास उच्छ्वास सम :** जो अपन श्वास ले रहे है और श्वास छोड रहे है उन श्वासोच्छवास के साथ गाना वो निच्छवासोच्छ्वास सम ।

(7) **संचार सम :** जे वंशतंत्री आदि द्वारा अंगुली संचार एक साथ चले वो संचार सम ।

ये सभी सातो स्वर गीत-स्तवन-स्तोत्र गाते समय एक साथ चले तब सप्तस्वर बनता है । **(अनुयोग द्वारा 260/10)**

➡ जब अष्टापद तीर्थ पर रावण और मंदोदरी ने प्रभु भक्ति की थी। उस समय मंदोदरी सप्तस्वर के साथ गाती व नृत्य करती। रावण उन सप्तस्वर में स्वर पूरने हेतु वीणा बजाता था। **(पउमचरियम्)**

124. काम की दश दशा

(1) **प्रथमदशा :** सामने जो व्यक्ति है उनकी चिंता उत्पन्न होना।

(2) **द्वितीय दशा :** उस व्यक्ति को देखने की इच्छा होनी।

(3) **तीसरी दशा :** व्यक्ति को देखते ही लंबे लंबे श्वास लेना।

(4) **चतुर्थ दशा :** ताव-खांसी आदि रोग के चिह्न उत्पन्न होते है।

(5) **पांचवी दशा :** कामदाह से जलने लगता है।

(6) **छठी दशा :** भोजन झेर जैसा लगता है।

(7) **सातवी दशा :** उस व्यक्ति के नाम का प्रभाव यानि बोल बोल करता है।

(8) **आठवी दशा :** पागल व्यक्ति की तरह इधर उधर घूमता रहता।

(9) **नवमी दशा :** अतिशय चिंतित बनकर मूर्च्छा खाता है गिरता है।

(10) **दशवी दशा :** यदि मनोरथ पूर्ण न हो तो मरने का भी मन होता है।

(पउमचरियम्)

125. राणकपुर तीर्थ की विशिष्टता

➡ धरणाशा पोरवाल ने गिरिराज के उपर गंधारीया चोमुखजी टुंक का निर्माण किया था।

➡ 30 साल की उम्र में ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया था।

➡ सोमसुंदरसूरिजीकी प्रेरणा पाकर 50 शिल्पीओ के पास जिनालय का नक्सा बनाया था। अंतिममें देपाल सलाट का नक्सा रखनेका तय किया।

- देपालसोमपुराने जो नक्सा बनाया उनके अनुसार मंदिर निर्माण कराया।
- 50 साल तक इस जिनालय का कार्य चला ।
- प्रतिदिन 2,500 कारीगर मंदिर का निर्माण कार्य करते थे ।
- 1444 थंभे का निर्माण तरह तरह की कारीगरी द्वारा कीया था ।
- 84 देवकुलिका चार बडे मेघनाद मंडप, नीचे बडे भोयरे का निर्माण।
- वि.सं. 1496 में सोमसुंदर आदि 500 साधुओ की निश्रामा प्रतिष्ठा ।
- जंगल में होने के कारण बहोत समय पश्चात् जंगली पशु व चामाचीडीया का घर बन गया ।
- आणंदजी कल्याणजी पेठी ने 11 साल तक जीर्णोद्धार कराया ।
- प्रथम से पुजारी थाली रखते थे । आज भी वो परंपरा चालू है ।
- धरणाशा पोरवाल ने 99 लाख द्रव्य का खर्च उस समय कियां था ।
- पुजारी, सोमपुरा, चोकीदार व धरणाशेठ चारो की परंपरा (पेढी) आज भी है ।

यानि उनके पेढी के व्यक्ति आज भी विद्यमान है ।

गढ आबू फरस्यो नहि, न सुण्यो हीर रास ।
राणकपुर नवि गयो, त्रणे रह्या गरभावास ॥

126. अनुपमा देवी द्वारा उद्यापन

- वि.सं. 1292में तेजपाल मंत्री की धर्मपत्नी अनुपमा देवी ने ज्ञानपंचमी की आराधना हेतु उद्यापन किया था। उसमें शत्रुंजय की तलेटी में वामदेव सलाट द्वारा नंदीश्वर दीप जिनालय का निर्माण, 25 समवसरण की रचना। बत्रीस वाडी का निर्माण, गिरनार तीर्थ में 16 वाडी का निर्माण,

तेजलपुर में जिनालय का निर्माण और साधु के उपकरण के नाम वाले गांव बसाये थे ।

127. रोहिणैय चोर की परंपरा

परमात्मा महावीर की हाजरी में वैभारगिरि के उपर 108 दरवाजे वाली गुफा में रोहिणैय चोर निवास करता था । पांच पेढी से चोरी का व्यापार चलता था ।

प्रथम पेढी	- रत्नखुर चोर	- रत्न की मोजडी पहनता था
द्वितीय पेढी	- सुवर्णखुर चोर	- सुवर्ण की मोजडी पहनता था ।
तृतीय पेढी	- रुपखुर चोर	- चांदी की मोजडी पहनता था ।
चतुर्थ पेढी	- लोहखुर चोर	- लोहे की मोजडी पहनता था ।
पांचवी पेढी	- रोहिणैय चोर	- मोजडी बिना का चोर था

लोहखुर पिता ने एकबार अपने पुत्र रोहिणेय को अंतिम शिक्षा देते समय कहा कि अपने बांप-दादा की पेढी से चोरी का व्यापार चालू है तो कभी भी प्रभुवीर के वचन को सुनना नहि, नहि तो अपना व्यापर बंध हो जाएगा । पिता का स्वर्गवास हों जाने के बाद एक बार समवसरण से आगे होकर चल रहा था । प्रभुवीर को देशना चालूथी पिता के वचन याद आये दोनों अंगुली कान में डालकर चलने लगा । मगर बीच में पैर के अन्दर कांटा लगा । एक अंगुली से कांटा निकालने गया तब नीचे का श्लोक सुना ।

अणिमिसनयणा, माणकज्झसाहणा, पुप्फदामअमिलाणा ।
चउरंगुलेन भूमिं न च्छिबिंत, सुरा जिणा बिंति ॥

➡ **भावार्थ :** जिसके आंख में पलकारे होते नहि, जो इच्छानुसार कार्य कर सकते है । जिनकी पुष्पमाला करमाती नहि, जो जमीन से चार अंगुल उंचे रहते है तो देवता कहलाते है ।

अभयकुमार मंत्रीने चोर को पकडने हेतु बहोत प्रयत्न किया अंत में पकडके देवलोक का स्वरुप खडा करके बताया उससे प्रतिबोध पाकर प्रभु वीर के पास दीक्षा लेकर चोरी की परंपरा बंध की । **(रोहिणै रास)**

128. लव और कुश के छ भव

➡ जैन रामायण में रामचंद्रजी के पुत्र **अनंगलवण** व **मंदनांकुश** नाम था।

(1) **प्रथम भव :** वामदेव ब्राह्मण पिता, शामला माता, वसुनंद-सुनंद नाम के पुत्र काकंदीनगरी में मासक्षमण के तपस्वी साधु पधारे, उनके तप एवं आचार की अनुमोदना करते करते बोधिबीज की प्राप्त की ।

(2) **द्वितीय भव :** दोनो भाई काल करके युगलिक मनुष्य बने ।

(3) **तृतीय भव :** दोनो भाई देवलोक में मित्र बने ।

(4) **चतुर्थ भव :** काकंदीनगरी में वसुदेव राजा के प्रियंकर हितंकर नाम के पुत्र बने । राज्य प्राप्त करके वैराग्य पाने पर संयम ग्रहण किया ।

(5) **पंचम भव :** दोनो भाई काल करके नव ग्रेवेयक में उत्पन्न हुए ।

(6) **छट्ठा भव :** दशरथराजा के पुत्र रामचंद्रजी की धर्म पत्नी सीता की कुक्षी में नव ग्रैवेयक में से च्यवन होकर जन्म धारण किया । श्रावण सुद पूर्णिमा के दिन श्रवण नक्षत्र में पुंडरिकीणी नगरी में जन्म हुआ । बडे होकर पिता के साथ युद्ध किया अंत में लक्ष्मण की मृत्यु से वैराग्य पाकर अमृतरस अणगार के पास संयम का शुद्ध पालन करके मोक्ष में गये । **(पउमचरियम्)**

129. सीता का पूर्व भव

मृणालकुंड नगर, श्रीभूति पुरोहित, सरस्वती पत्नी, वेगवती पुत्री, एक बार प्रतिमाधारी मुनि गांव के बहार काउसग्ग ध्यान मे खडे थे। नगरवासीओने मुनिवर की प्रशंसा सत्कार कीया। उस समय पुरोहित की पुत्री वेगवती को ईर्षा जगी ओर ब्राह्मणधर्म का महत्त्व बढाने हेतु जैनधर्म के मुनि पर कलंक लगाया कि इस मुनिवर को वेश्या के साथ मैंने देखा है। पूरे नगर में यह बात फैला दी - उस समय मुनिवर ने अभिग्रह धारण किया जब तक यह उपद्रव दूर न होवे तब तक कायोत्सर्ग ध्यान में रहना। काउसग्ग के प्रभाव से अधिष्ठायक देव ने वेगवती की वाचा बंध कर दी व उनके शरीर में कलतर उत्पन्न होने लगी तब उसको मालूम पडा कि मैंने जो बुरा कार्य किया उसका यह फल है फिर मुनिवर के पास जाकर क्षमा मांगी। जैन धर्म का स्विकार कीया। प्रथम देवलोक में गई। वहां से च्यवन होकर जनकराजा की पुत्री सीता हुयी। पूर्वभव में मुनि की निंदा के कारण सीता को भी कलंक लगा। मगर सती होने के कारण जय जयकार हुआ। दिव्य परीक्षा में अग्नि का सिंहासन बना। अंत मे चारित्र लेकर 60 साल तक चारित्र का पालन करके 33 दिन का अनशन करके बारवे देवलोक में सीता साध्वीजी अच्युतेन्द्र बने।

(उपदेश प्रासाद)

130. गिरनारजी के नेमिनाथजी की प्राचीनता

गत उत्सर्पिणी के प्रथम आरे के 21,000 वर्ष, दूसरे आरो के 21,000 वर्ष तीसरे आरे के 84,250 वर्ष। फिर **सगर** नामके तीसरे तीर्थंकर

हुए । यानि 1,26,250 वर्ष पश्चात् ब्रह्मेन्द्र देव ने नेमिनाथ परमात्मा की प्रतिमा भरायी । गत उत्सर्पिणी के 10 कोडाकोडी सागरोपम में से 1,26,250 वर्ष न्यून अवसर्पिणी काल के 10 कोडाकोडी सागरोपम में से 21,000 वर्ष छठे आरे के एवं 18,484 वर्ष पांचमा आरे के कम करने से । 1,26,250 वर्ष न्यून, कोडाकोडी सागरोपम 39,250 न्यून कोडाकोडी सागरोपम यानि 65,375 वर्ष न्यून 20 कोडाकोडी सागरोपम प्राचीन मूर्ति है ।

वर्तमान काल में नेमिनाथ परमात्मा के निर्वाण से 2,000 वर्ष पश्चात् इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा हुयी थी । इनके बाद इनके शासन में 82,000 वर्ष, पार्श्वनाथ के 250 वर्ष व महावीर स्वामी के 2538 वर्ष यानि 84,788 वर्ष प्राचीन प्रतिमा नेमिनाथ की है । छठे आरे में अंबिकादेवी पाताल लोक में इस प्रतिमा की पूजा करेगी ।

(निखालस)

131. अनुपमा देवी का सुपात्र दान

एक बार साधु भगवंत अनुपमा देवी के घर वहोर ने गये अनुपमा देवी ने घी (धृत) से संपूर्ण पात्र भर दिया । हाथ में लेते समय मुनिवर से चूक गया व साडी पर ढुल गया । उस समय तेजपालने गुस्सा किया अरे यह क्या किया ? तब अनुपमा देवी ने कहा हे नाथ ! गुस्सा मत करो ! यदि घांची के घर जन्म होता तो क्यां हालत होती रोज कपडे बिगडते । यह तो पंच महाव्रतधारी के हाथो से गिरा संयमरुपी धृत का अभिषेक कभी कभी होता है । अपने भव सुधर जायेंगे ।

(प्रबंध चिंतामणी)

132. बालाशा की टुंक पालीताणा

उज्जैनी नगरी के पास छोटे से गांव में माता एवं पुत्र बाला दोनो निर्धन अवस्था में रहते थे। माताप्रतिदिन पास के नगर में से नमक-मिर्च आदि लाकर बेचकर अपना गुजरान चलाती थी। एक दिन माता अस्वस्थ होने के कारण पुत्र को भेजती है पुत्रने विचार करके माता की स्वस्थता हेतु खाट ले लीया। खाट लेकर घर जाता है मगर घर छोटा खाट बडा। खाट खोलने गये तो अन्दर से रत्न नीकले चारो पायो में से चार थेली भर गई। देखो ! माता की सेवा का प्रभाव।

एक बार समराशा ओसवाल संघ लेकर पालीताणा जा रहे थे। माता-पुत्र दोनो संघ में गये। रत्नो की थेली साथ में लेकर गये। पालीताणा पहोंचकर दादा की प्रथम पूजा 9 रत्नो द्वारा की, दूसरे दिन 18 रत्नो द्वारा व तीसरे दिन 36 रत्नो द्वारा की। चोथे दिन सभी रत्न संघवीं को देकर माता पुत्र चले गये। संघवीने तीन दिन पूजा न होने से तीन उपवास किये। चोथे दिन रत्न द्वारा पूजा करके खर्च हुए रत्नो में से जिनालय बनवाकर **बालाशा** की टुंक नाम रखा। जिसमें **270** पाषाण प्रतिमा व **458** धातु प्रतिमा है। **(शत्रुंजयकल्पवृत्ति पीघेकाभाग)**

133. गच्छ के नाम

(1) **निर्ग्रन्थगच्छ :** सुधर्मास्वामी से आर्य महागिरि की परंपरा तक।

(2) **कोटिगच्छ :** सुस्थितसूरि एवं सुप्रतिबद्धसूरि ने काकंदी नगरी में एक करोड बार सूरिमंत्र का जाप कीया इसलिये कोटिगच्छ नाम पडा।

(3) **चंद्रगच्छ :** वज्रसेनसूरि के शिष्य चंद्रसूरि के नाम से चन्द्रगच्छ हुआ।

(4) **वनवासी गच्छ :** 16वीं पाट पर सामंतभद्रसूरि वन में रहे उससे बनवासी गच्छ ।

(5) **वडगच्छ :** 35 वीं पाट पर उद्योतनसूरिने सर्वदेव आदि 8 शिष्य को वड के नीचे सूरिपद दिया ... उससे वडगच्छ ।

(6) **तपागच्छ :** 44वीं पाट पर आने वाले जगच्चंद्र सूरिने आंबिल तप द्वारा आतापना ली उसके कारण उदयपुर के जैत्रसिंह राणा ने **तपा** का बिरुद दिया उससे तपागच्छ । **(उपा. यशोवि. कृत 350 गाथा स्तवन)**

134. सारणा-वारणा यानि क्या ?

(1) **सारणा :** शिष्य को कोमल शब्दो द्वारा कर्तव्य को याद कराना ।

(2) **वारणा :** शिष्य को अकर्तव्य से दूर हटाना ।

(3) **चोयणा :** शिष्य को कठोर शब्दो द्वारा समजाना ।

(4) **पडियोचणा :** शिष्य को तर्जन-ताडन-मारण द्वारा समजाना ।

(ज्ञानपंचमी स्तवन)

135. पुष्पपूजा का प्रभाव

➡ पार्श्वनाथ प्रभुने स्वमुख से वर्णन किया कि पुष्पपूजा निर्मल अध्यवसाय के प्रभाव से एक व्यक्तिने बार बार मानवभव प्राप्त किया । हेल्लूर नामका माली एक बार गृह जिनालय में प्रवेश किया । परमात्मा को देखते ही उनकी भक्ति बढ गई । फुल बेचने के बाद जो भी फूल बचते थे वो सभी परमात्मा को चढाते थे । अपने द्रव्य द्वारा परमात्मा की भक्ति करने से ...

(1) प्रथमभव : हेल्लुर गाम का माली था बढे हुए फुल प्रभु को चढाता था।

(2) दूसरा भव : एलपुर नगर में 9 लाख द्रम्म का स्वामी बना ।

(3) तीसरां भव : एलपुर नगर में 9 करोड द्रम्म का स्वामी बना ।

(4) चोथा भव : स्वर्णपथ नगर में 9 लाख सुवर्ण का स्वामी बना ।

(5) पांचवा भव : स्वर्णपथ नगर में 9 करोड सुवर्ण का स्वामी बना ।

(6) छठा भव : रत्नपुर नगर में 9 करोड सुवर्ण का स्वामी बना ।

(7) सातवा भव : रत्नपुर नगर में 9 लाख रत्न का स्वामी बना ।

(8) आठवा भव : वाटिका पुरी में 9 लाख रत्न का स्वामी बना ।

(9) नवमां भव : नवनिधी का स्वामी बना ।

(10) दसवा भव : अनुत्तर विमान के सुख का स्वामी बना ।

(त्रिषष्ठि पर्व-9)

136. मुंबई में सर्व प्रथम साधु कौन ?

➡ विक्रम संवत **1947** चैत्रवद-6 के दिन मोहनलालजी महाराज ने सर्व प्रथमबार बम्बई में प्रवेश किया था । भूलेश्वर व लालबाग में एतिहासिक चातुर्मास करके उपाश्रय व जिनालय की प्रेरणा दी थी । जो मोहनमुनि के नाम से प्रसिद्ध हुए । **(मोहन शताब्दि)**

137. पौषध पारते समय छ महापुरुष के नाम

(1) **सागरचंद्र राजा :** कृष्ण के भाई बलदेव उनका पुत्र निषध उसका पुत्र सागरचंद्रराजा, धनसेन की पुत्री कमलामेला राणी से साथ शादी हुयी । मगर शादी होने से पहले कमला मेला नभसेन को दी गई थी । नभसेन ने नारदजी का सत्कार न किया व स्वयं की शादी मे तैयार हो गये । तब नारदजी ने कमलामेला का चित्र सागरचंद्र को बताया । सागरचंद्र

पागल हो गया । शांब ने गुप्तरुप से लाकर कमलामेला के साथ शादी करवा दी । नभसेन को मालूम होते ही वैर का भाव बढ गया । कब मोका मिले कब सामरचंद्र को मारु ? एसा वैर लेकर घूमने लगा । इधर नेमिनाथ परमात्मा विचरे सागरचंद्रने देशना सुनि वैराग्य हुआ । 12 व्रत का स्वीकार किया । पौषध लेकर कायोत्सर्ग प्रतिमाध्यान में रहा । नभसेनने सागरचंद्र को पौषध में देखा । वेर के कारण मिट्टि के कांडे में अंगारे भर के मस्तक पर लगाये । मस्तक की नस फूटने लगी मगर सागरचंद्रने पौषध न पारा न कायोत्सर्ग पारा – ऐसे काल करके स्वर्ग में गया । **(उपदेशमाला)**

(2) **चंद्रावतसंकराजा :** एक बार राजा अपने अंतपुर में गया । आज राणीवास खाली होने से राजाने विचार किया आज कुछ धर्म साधना कर लुं । एसा विचार करके शाम को सूर्यास्त के समय अंतपुर में छोटा सा दीपक जल रहा था तब राजाने अभिग्रह किया जब तक दीपक जलता रहे तब तक काउसग्ग ध्यान में रहना । एसा करके काउसग्ग चालू किया ... एक प्रहर होते ही दीपक बुझने की तैयारी थी । उस समय दासी को विचार आया कि आज राजा अकेले ही है कहीं गिर जायेंगे तो मैं थोडा तेल दीपक में पूर लूं एसा विचार करके दासी तेल पूरने गई... मगर राजाने कायोत्सर्ग न पारा एसे करते दासीने 4 प्रहर तक (यानि 12 घंटे तक) तेल पूरती रही । राजा का शरीर जकड गया । खून जमा हो गया । जैसे सूर्योदय हुआ दीपक बुझा । कायोत्सर्ग पारते ही राजा गिर गया मृत्यु पाकर स्वर्ग में गया । मगर राजा ने काउसग्ग नहि पारा एसे द्रढ प्रतिज्ञावाला चंद्रावतसंक राजा हो गया ।

(उपदेश माला)

(3) **सुदर्शन शेठ :** मनोरमा पत्नी, बार व्रत धारी सुदर्शन शेठ एक बार सुदर्शन शेठ ने पौषध धारण किया । मित्र की पत्नी कपिला ने भोग की मांगणी की मैं नपुंसक हूं एसा जवाब दिया । कपिला को गुस्सा आया और अभया राणी को चडाया । अभयाराणीने गुप्तचरो द्वारा पौषधधारी सुदर्शन शेठ को उठा के राजमहेल में लाया । अभयाराणी ने प्रथम चलायमान करने की कोशीश की मगर न चले तब गुस्से में आकर कलंक लगाया । राजाने शूली पर चढाने का हुकम दिया । मनोरमा पत्नीने जाते हुए देखा, उसी समय अभिग्रह लिया जब तक पति का उपद्रव दूर न होवे तब तक घर मंदिर में काउसग्ग ध्यान में रहना । कायोत्सर्ग के प्रभाव से शूली का सिंहासन बना । इस तरह सुदर्शन शेठ अपनी पौषध प्रतिमा में द्रढ रहे अंत में पाटलीपुत्र में दीक्षा लेकर केवलज्ञान पाकर मोक्ष में गये । **(उपदेश प्रासाद)**

(4) **सुलसासती :** परमात्मा महावीर की हाजरी में समकित धारी श्राविका अंबड तापस द्वारा धर्मलाभ का संदेश सुनते सुलसा के साढे तीन करोड रुआटे खडे हो गये । सुलसा की प्रसन्नता देखकर अंबड तापस समकित पाया । एक बार हरिणैगमेषी देवने साधु का वेष धारण करके लक्षपाक तेल की मांगणी की । तीन बार टूटने पर भी कीसी प्रकार का पश्चाताप नहि । साधु की भक्ति का लाभ न मिला वो दुःख भरहेसर की सज्झाय में प्रथम नाम । आगामी चोवीशी में **निर्मम** नामके **15वे तीर्थंकर** बनेगें ।

(उपदेश प्रासाद)

(5) **आनंद श्रावक :** भ. महावीर का प्रथम श्रावक, पति-पत्नी दोनो 12 व्रतधारी, 14 साल तक श्रावक धर्म की आराधना करते पुत्र को भार सोंप के पौषधशाला में जाकर प्रतिमा धारण की, वृद्धावस्था तक पौषध

किया । अंतिम संलेखना करके अवधिज्ञान उत्पन्न हुआ । एक बार गौतमस्वामी गणधर वहोरने गये । आनंद श्रावक के पास गये तब श्रावक ने कहा 500 योजन प्रमाण अवधिज्ञान हुआ । प्रथम नरक व प्रथम देवलोक में क्या होता है वो सब देख सकता हूं तब गौनमस्वामी ने कहा इतना उत्कृष्ट अवधिज्ञान श्रावक को नहि हो सकता । आनंद ने कहा मेरे को हुआ है तो में भगवान को पूछ के आता हूँ । भगवान को पूछने गये तब भगवानने कहा आनंद सही बोल रहा है तुं गलत है तुरंत गौतमस्वामी आनंद को मिच्छामि दुक्कडम् देने जाते है चौदपूर्वी, श्रुतकेवली, प्रथमगणधर, 50,000 केवली के गुरु भी मिच्छामि दुक्कडम् देने जाते है तो अपन को क्या करना चाहिए जरा सोचना ?

(उपासक दशांग सूत्र)

(6) **कामदेव श्रावक :** प्रभु महावीर के दूसरे श्रावक कामदेव-भद्रा श्राविका दोनों **12** व्रतधारी । पुत्र को जवाबदारी सोंप के पौषधशाला में पौषध करने गये । अभिग्रह कीया पुरी रात्रि कायोत्सर्ग प्रतिमा ध्यान में रहना वो चंपानगरी के चोटे के बीच में इन्द्र महाराजा ने प्रशंसा की, मिथ्यात्वी देव ने परीक्षा हेतु एक ही रात्रि में राक्षस-सर्प-हाथी-भद्रा शेठाणी के रुप बनाकर प्रतिकुल व अनुकुल घोर उपसर्ग किये । हाथी व राक्षस ने उठा उठाकर गिराया तो भी न पौषध पारा न कायोत्सर्ग पारा । सुबह सूर्योदय पश्चात् पौषध पारके प्रभुवीर की देशना में गये । प्रभुने कहां हे ! श्रमण भगवंतो सुनो ! इस श्रावकने पूरी रात्रि घोर उपसर्ग सहन किये। श्रावक के उपसर्गो को सुनकर श्रमण भी अपने व्रत में द्रढ हुए । ऐसे द्रढव्रतधारी श्रावक की प्रशंसा प्रभु महावीर ने की थी ।

धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा आणंद कामदेवाय

जास पसंसई भयवं, द्रढवयतं महावीरो ॥

वो महापुरुष धन्य है वो प्रशंसनीय है द्रढव्रत वाले श्रावक श्राविका की प्रशंसा भगवान महावीर भी करते है। **(उपासक दशांग)**

138. दृष्टिवाद व उसके भेद

➡ **दृष्टिवाद :** यहां बारवां अंग है गणधर भगवंत ने इसकी रचना की है इसके पांच भेद है। परिकर्म / सूत्र / पूर्वगत / अनुयोग / चूलिका।

(1) **प्रथमभेद (परिकर्म) :** सिद्ध श्रेणी आदि विविध प्रकार की श्रेणी जिसमें बतायी है प्रथम श्रेणी के - 14 प्रकार, द्वितीय श्रेणी के - 14 प्रकार, तृतीय श्रेणी के - 11 प्रकार, इन सभी श्रेणीओंमें नय-नैगम-संग्रह-व्यवहार-ऋजुसूत्र आदि का विचार किया है।

(2) **द्वितीय भेद (सूत्र) :** द्रव्य-नयभंग-पर्याय आदि 88 प्रकार के सूत्र बनाये है। पूर्वगत सूत्रार्थो का संग्रह इसमें हैं।

(3) **तृतीय भेद (पूर्वगत) :** इसमें 14 पूर्व के नाम आते है इसके भी 14 प्रकार है।

1. **उत्पादपूर्व :** प्रत्येक प्रकार के द्रव्य पर्याय-उत्पत्ति का कारण।
2. **अग्रायणी पूर्व :** प्रत्येक प्रकार के द्रव्य - पर्याय का परिमाण (प्रमाण)
3. **वीर्यप्रवाद पूर्व :** जीव-अजीव-सकर्म-अकर्म-वीर्य आदि का स्वरुप।
4. **अस्तिनास्ति पूर्व :** धर्मास्तिकाय आदि का सविस्तृत विवरण।
5. **ज्ञानप्रवाद पूर्व :** मतिज्ञान आदि पांच ज्ञान का विस्तृत विवरण।

6. **सत्यप्रवाद पूर्व :** सत्य एवं निरवद्य वचन (भाषा) का विस्तृत विवरण ।
7. **आत्मप्रवाद पूर्व :** आत्मा व जीव का संबंध कैसा कितना ? विस्तृत विवरण ।
8. **कर्मप्रवाद पूर्व :** आठो कर्म व कर्म थीयरी का संपूर्ण स्वरुप।
9. **प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व :** पच्चक्खाण-आगार आदि का सविस्तृत विवरण ।
10. **विद्याप्रवाद पूर्व :** अनेक प्रकार की विद्या मंत्र-तंत्र-रुप परावर्तन आदि का भंडार ।
11. **कल्याणप्रवाद पूर्व :** ज्ञान-तप-क्रिया आदि के शुभ-अशुभ फल का विवरण ।
12. **प्राणवाय पूर्व :** इस प्रकार के प्राणो के प्राणो का भेद-प्रभेद का विस्तृत विवरण ।
13. **क्रिया प्रवाद पूर्व :** करणसित्तरी-चरणसित्तरी, 25 क्रिया आदि का विस्तृत विवरण ।
14. **बिंदुसार पूर्व :** श्रुतज्ञान में बिंदु का महत्त्व है सर्वज्ञ लब्धि आदि का स्वरुप

समाइअमाइअं सुअनाणं, जाव बिंदु साराओ ।
तस्सं वि सारो चरणं, सारो चरणस्स निव्वाणं ॥

➡ **भावार्थ :** सामायिक से लगाकर चौदवे पूर्व बिंदुसार तक का श्रुतज्ञान श्रुतज्ञान का सार चारित्र व चारित्र का सार निर्वाण है ।

वाचक उमास्वातिजी का वचन है "**ज्ञानस्य फलं विरतिः**"

(4) **चतुर्थ भेद (अनुयोग) :** मूल अनुयोग-तीर्थंकर परमात्मा का समकित से लगाकर मोक्ष तक संपूर्ण स्वरुप और प्रत्येक के पूर्वभव का वर्णन। **गंडिकानुयोग :** एकार्थ अर्थ से युक्त ग्रंथ को गंडिका कहते है दोनो योग का आर्य कालिकसूरिने उद्धार किया था । कुलकर-चक्री-दशाई-बलदेव-वासुदेव-गणधर-हरिवंश-उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी-चारो गति आदि का विस्तृत वर्णन ।

(5) **पंचमभेद (चूलिका) :** चूला यानि शिखर पूर्व के अनुयोग में नहि कहे हुए अर्थ को संग्रह करने की पद्धति वो चूलिका । चौद पूर्व में से चार पूर्व की चूलिका भी बतायी है । प्रथम पूर्व से चार पूर्व तक 4-12-8-10 एसे 34 चूलिका है पूर्व सभी संस्कृत भाषा में है आगम प्राकृत भाषा में है । सबसे प्रथम रचना पूर्व की होती है इसलिये पूर्व कहलाते है ।

➠ **दृष्टिवाद के 10 नाम :**

1. दृष्टिवाद
2. हेतुवाद
3. भूतवाद
4. तथ्यवाद
5. सम्यग्वाद
6. धर्मवाद
7. भाषाविचय
8. पूर्वगत
9. अनुयोग गत
10. सर्व प्राण भूत जीव सत्त्व सुखाकारी । **(ठाणांग सूत्र)**

139. दृष्टिवाद पद का प्रमाण

एगवन्न कोडि लक्खा, अट्ठेव सहस चुलसीय ।
सय छक्कंनायत्वं, सट्ढाइ इगवीस समयम्मि ॥

➠ **भावार्थ :** एकावन करोड 8 लाख, 84 हजार, 600 साढेइक्कीस श्लोक का प्रमाण बताया है । यानि एक पद के इतने अक्षर होते है ।

(प्रवचन किरणावली)

- प्रथम अंग के 18,000 पद है। उसी तरह 11 अंग के 3,68,46,000 पद होते है इन सभी पदो का संक्षेप देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण ने किया है।
- 32 अक्षर का एक श्लोक होता है।
- विवक्षित अधिकार से लगाकर अंतिम अलावा तक का एक पद होता है। **(प्रवचन किरणावली)**

140. सूरिमंत्र पीठीका के नाम व जाप

नाम	देवी	जाप	दिन	उप.	आबिल	नीव
1. विद्यापीठ	वाणीदेवी	12,000	21	2	3	16
2. महाविद्यापीठ	त्रिभुवनस्वामिनी	16,000	14	2	5	7
3. लक्ष्मीपीठ	श्रीदेवी	12,000	5	2	1	5
4. मन्त्रपीठ	गणिपीटकयक्ष	12,000	25	2	6	17
5. मन्त्रजापीठ	ग्रहदिक्पाल	1 लाख	16	-	16	-

- सूरि भगवंत सूरिमंत्र की साधना योग्यस्थाने योग्यविधि द्वारा करने से शासन प्रभावक बनते है।

141. गुणानुराग के सात लक्षण

(1) **प्रथम लक्षण :** ज्ञानादि गुण को करने वाली दुष्ट प्रवृति का त्याग।

(2) **द्वितीय लक्षण :** दूसरे के बड़े दोषो की उपेक्षा करके छोटे गुण की प्रशंसा।

(3) **तृतीय लक्षण :** अपने गुणों की उपेक्षा करके अपने दोषो की निंदा करना।

(4) **चतुर्थ लक्षण :** अपन को जो ज्ञानादि गुण प्राप्त हुये है उनकी रक्षा करना।

(5) **पंचम लक्षण :** गुणीजनो का संग होते ही हृदय में आनंद उत्पन्न होना।

(6) **षष्ठ लक्षण :** गुणों को प्राप्त करने के लिये पुरुषार्थ करना ।

(7) **सातवा लक्षण :** गुणों के प्रति राग व दुर्गुणो की प्रति उपेक्षाभाव रखना।

(संबोध प्रकरण)

142. भाव श्रावक के सात लक्षण

(1) **मार्गानुसारी क्रिया :** आगम नीति एवं गीतार्थ परम्परा अनुसार जो क्रिया करते है। उसमें जो उत्सर्ग-अपवाद बताये है उसका उपयोग गुरु परंपरा अनुसार करना ।

(2) **धर्म में उत्कृष्ठ श्रद्धा :** उसके चार लक्षण है

1. **विधि सेवा :** क्रिया विधी-विधान के प्रति संपूर्ण बहुमानभाव रखना यदि अविधि हो जाय तो दुःख
2. **अतृप्ति :** दर्शन-ज्ञान-चारित्र की आराधना में कभी तृप्त नहि होना। सद्भावना के साथ प्रयत्न चालू रखना ।
3. **शुद्ध देशना :** आगम के रहस्य को सुनकर योग्यतानुसार आगम सामाचारी की शुद्ध प्ररुपणा करें ।
4. **स्खलित परिशुद्धि :** व्रत आदि में जो अतिचार लगते है उसकी आलोचना लेकर शुद्ध होना ।

(3) **प्रज्ञापनीयता :** भूल को स्विकार करके भूल सुधरने का प्रयत्न करना। कोई भी वडील, गुरु अपनी भूल बताये तो सुधारने का पुरुषार्थ करना।

(4) **क्रिया में अप्रमाद :** मद्य-विषय-कषाय-निद्रा-विकथा आदि पांच प्रकार के प्रमाद का त्याग करके शुद्ध क्रिया करने का आग्रह करना ।

(5) **शक्यानुष्ठानआरंभ :** परमात्मा की आज्ञानुसार कम आरंभ-समारंभ वाले मोक्ष लक्ष हेतु अनुष्ठान करे । जिसमें दोष ज्यादा आडंबर ज्यादा एसे अनुष्ठान नहि करना ।

(6) **गुणानुराग :** आत्मा के अन्तर्गत जब गुणो का राग प्रगट होता है तब मोक्ष लक्ष्य प्राप्त होता है इसलिये गुणों के प्रति अनुराग प्रगट करना । गुणानुराग इस भवमें क्या आगे के भव में भी नये गुणों की प्राप्ति कराता है ।

(7) **गुर्वाज्ञाराधना :** गुरुं आज्ञा सभी गुणों में श्रेष्ठ आराधना है गुरु आज्ञा में तीर्थंकर-गणधर-केवली-भगवंत की आराधना का फल प्राप्त होता है ।

(संबोध प्रकरण 1084)

143. ज्ञाता धर्म कथा आगमका प्रमाण

➠ वर्तमान में 45 आगम में छठा आगम ज्ञाताधर्म कथांग नाम का है । गणधर भगवंतो ने इस आगम की रचना की है । जिस समय रचना की उस समय 5,76,000 (पांच लाख छोतेर हजार) पद थे । जिसमें सूर्यचन्द्र आदि 56 इन्द्रो एवं 206 पटराणी के पूर्वभव बताये है । इस आगम के अभी 19 अध्ययन है, 10 वर्ग है सूत्र के मूल श्लोक 5500 है । टीका 3,800 श्लोक है । इस सूत्र की टीका अभयदेवसूरिने वि.सं. 1120 में विजयादशमी के दिन पाटणमें रची थी ।

(1) **प्रथमश्रुतस्कंध :** 9 अध्ययन बताये है । प्रत्येक अध्ययन की 500 आख्यायिका उसकी 500 आख्यिका और 500 उपआख्यायिका यानि 9 को 500 × 500 × 500 गुणाकार करते 1 अबज 21 करोड 50 लाख कथा होती है ।

(2) **द्वितीय श्रुतस्कंध :** 500 आख्यायिका उसकी 500 उप आख्यायिका उसकी 500 आख्या-उपआख्यायिका उसके 10 अध्ययन जाणना । इस तरह 10 से 500 × 500 × 500 गुणाकार करते 1 अबज 25 करोड कथा होती है ।

अभी वर्तमान में 19 अध्ययन की 19 कथा विद्यमान है । उसमें भी सभी कथा का उपनय व गंभीर अर्थ साधु-साध्वीजी के आचारो पर बताया है । वर्तमान काल में ज्ञाताधर्म कथांग के 19 अध्ययन के नाम

1. उत्क्षिप्त अध्ययन
2. संघाड अध्ययन
3. अंड अध्ययन
4. कुर्म अध्ययन
5. शैलक अध्ययन
6. तुंबक अध्ययन
7. रोहिणीज्ञात अध्ययन
8. मल्ली अध्यनय
9. माकंदीय अध्ययन
10. चंद्राख्य अध्ययन
11. दावद्रव्य अध्ययन
12. उदक ज्ञात अध्ययन
13. दर्दुरज्ञात अध्ययन
14. तेतली पुत्र अध्ययन
15. नंदीफल अध्ययन
16. द्रौपदी अध्ययन
17. अश्वज्ञात अध्ययन
18. सुषमा ज्ञात अध्ययन
19. पुंडरिक अध्ययन

(ज्ञाताधर्म कथांग)

144. संमूर्च्छिम जीवोत्पति के 14 स्थान

1. मल मे
2. कफ में
3. वमन में
4. परु में
5. वीर्य में
6. मृतकलेवर में
7. नगर की गटर में
8. मूत्र में
9. लींट में
10. पित्त में
11. खून में
12. स्त्री-पुरुष के संयोग में
13. जूठे भोजन पाणी में
14. सभी अशुचि स्थान में

(जीवाजीवाभिगम सूत्र)

145. मूरख के आठ लक्षण

1. टेन्सन बिना जीवन
2. भोजन की मात्रा ज्यादा
3. शरम लाज बिना का
4. रात दिन नींद ज्यादा
5. अच्छे-बुरे का विचार न करो
6. मान अपमान में समान
7. काया में किसी प्रकार का रोग नहि
8. शरीर जाडा व मजबूत बांधा

(ज्ञानपंचमी कथा)

146. उपधान आचार में तप का प्रमाण

पढम दुई उवहाणे, दुवालसं अंबिलट्ठ अट्ठमगं ।
उववासतिगं आंबिल, बत्तीसा तइय उवहाणे ।।28।।
तुरिए चउत्थमंबिलतिगं, तहा पंचमे चउत्थतिगं ।
पणवीसामंबिलाणीय, चउत्थ पंचांबिल छठं ।।29।।

(1) श्री पंचमंगल महाश्रुत स्कंध - 5 उप. 8 आंबिल 3 उप. - 16 दिन
(2) श्री प्रतिक्रमण श्रुत स्कंध - 5 उप. 8 आंबिल 3 उप. - 16 दिन
(3) श्री शक्रस्तवाध्ययन - 3 उप. 32 आंबिल - 35 दिन
(4) श्री चैत्यस्तवाध्यनन - 1 चोथभक्त 3 आंबिल - 4 दिन
(5) श्री नामस्तवाध्ययन - 3 उपवास 25 आंबिल - 28 दिन
(6) श्री श्रुतस्तव-सिद्धस्तव - 1 चोथभक्त 5 आंबिल - 6 दिन

(धर्मविधि प्रकरण)

वीर संवत 1350 में भगवान महावीर की तेत्रीसवी (33) पाट पर आनेवाले मानदेव सूरिने उपधान विधी का स्त्रोत बनाकर प्रगट किया। वि.सं. 1253मे श्रीप्रभसूरि ने धर्मविधि प्रकरण रचा। है गौतम ! जितना

जितना तप होता है उतना उतना सूत्र का अभ्यास गुरु पास करना। जब संपूर्ण नवकार मंत्र पूर्ण होता है फिर स्वाध्याय करना। उपधान विधि स्तोत्र नमस्कार स्वाध्याय ग्रंथ में है। **(महनिशीथसूत्र)**

147. मांडला क्यों करने का ?

मांडला करने से पूर्व पारिष्ठानिका भूमि व स्थंडिल भूमि का निरीक्षण अवश्य करना चाहिए ? निरीक्षण करने के पश्चात् इरियावहिया करके इच्छाकारेण संदिसह भगवन् स्थंडिल पडिलेहु ? इच्छं बोलकर मांडला करना।

प्रथम मांडला - संथारे के स्थान पर करे।

दूसरा मांडला - उपाश्रय के दरवाजा पास करे।

तीसरा मांडला - उपाश्रय के दरवाजा बहार करे।

चतुर्थ मांडला - 100 कदम तक निर्दोष भूमि देखकर करे।

(वर्तमान में चारो दिशा में करने का प्रणालिका है।)

आगाढे - यदि स्थंडिल जाने का आगाढ कारण हो।

आसन्ने - बहोत पास के स्थान में जाना हो।

उच्चारे - वडीनीती जाने के लिये जाना है।

पासवणे - लघुनीति जाने के लिये जाना है।

अणहियासे - यदि सहन न हो सके तो।

अहियासे - यदि सहन कर सके तो।

आणागाढे - यदि आगढ कारण नहि हो तो।

बारस बारस तिन्निय, काइय उच्चार काल भूमिउरो।
अंतो बर्हि च अहियासी, अणहियासे न पडिलेहे ॥375॥

(उपदेशमाला)

➠ लघुनीति परठने के लिये 12 निर्दोष भूमिओ, वडीनीति परठने के लिये 12 निर्दोष भूमि और काल ग्रहण लेने के लिये तीन भूमि इस तरह 27 भूमि पडिलेहन की बतायी है। यदि समर्थ है तो दूर जाना चाहिए और असमर्थ है तो पास में जाना। इस तरह भूमि को उपयोग पूर्वकजो देखते नहि है पडिलेहन करता नहि है वो पासत्था जाणना। यह भूमि जघन्य से हाथप्रमाण उत्कृष्ट से चार अंगुल प्रमाण अचित्त जानना और जब परठवना है तब जमीन से चार अंगुल उंची कुंडी रख के परठवना। इस तरह भूमि का निरीक्षण करने के बाद मांडला करना।

(उपदेशमाला)

148. अजित शांति स्तवन की रचना कब हुयी ?

नेमि वयणेण जत्तां गएण, जहिं नंदिषेण जइ वयणा।
विहिओ अजिअसंतियओ, जयउ तयं पुंडरीअ तित्थं ॥21॥

➠ नेमिनाथ परमात्मा की आज्ञा लेकर नंदिषेण मुनि शत्रुंजय यात्रा के समय अजितशांति की रचना हुयी वो पुंडरीकगिरि जय पामो।

(शत्रुंजय कल्पवृत्ति)

कथा : नंदिषेण नामका राजा, नेमिनाथ प्रभु की देशना सुनकर वैराग्य पाया, पुत्र को राज्य सोंपकर अष्टान्हिका महोत्सव करके दीक्षा ग्रहण की। ज्ञान में योग्य बनकर सूरि बने। एकबारनंदिषेण सूरिने नेमनाथ प्रभु को पूछा प्रभु ! मेरा मोक्ष कब होगा ? परमात्मा ने गिरिराज के उपर भावपूजा का महत्त्व बताया। गिरिराज का महत्त्व सुनकर नंदिषेण सूरि शत्रुंजय तीर्थ की यात्रा करते करते चंदन तलावडी के पास पहोंचे। वहां पर अजितनाथ-शांतिनाथ प्रभु की देरी आमने सामने थी। यदि एक का

दर्शन करे तो एक को पुंठ पडे इस तरह आशातना का भय देखकर भावोल्लास के साथ अनेक छंदमय अजितनाथ-शांतिनाथजी का स्तोत्र बनाया और उस स्तोत्र के प्रभाव से आमने सामने जो देरी थी वो आस पास हो गई । स्तोत्रपूजा का जोरदार प्रभाव पडा ।

- उस समय चंद्रसेन राजा सुगंधी फुलो द्वारा पूजा करते केवली बने ।
- उसके पश्चात् कलापुर नगर के भीमराजा को भी देरी पास केवलज्ञान हुआ।
- मेघवाहन राजा भी अजित-शांतिनाथ का ध्यान धरके केवली बने ।
- नंदिषेण सूरिने भी 700 मुनिओ के साथ अनशन करके मोक्षपद प्राप्त किया ।
- उसके पश्चात् 700 मुनिवरो को भी केवलज्ञान व मोक्ष प्राप्त किया ।

(शत्रुंजय कल्पवृत्ति)

149. आत्मअंगुल आदि का प्रमाण

8 यव	-	1 उत्सेधांगुल
400 उत्सेधांगुल	-	1 प्रमाणांगुल (चोडाई ढाई उत्सेधांगुल जितनी)
आत्म अंगुल	-	अपने अंगुल प्रमाण
उत्सेधांगुल	-	शरीर की अवगाहना व शाश्वती प्रतिमा मापने हेतु
प्रमाणांगुल	-	सिर्फ शाश्वते क्षेत्रो को नापने हेतु
आत्मअंगुल	-	वो वो नाप को निश्चित करने के लिये

(बृहत्संग्रहणी)

150. तमस्काय का स्वरुप

जंबूद्वीप के असंख्यात् द्वीप-समुद्र जाने के बाद अरुणवर नाम का द्वीप आता है। उस द्वीप की वेदिका से 42,000 योजन समुद्र की गहराई में जाने के बाद अरुणवर समुद्र में पाणी के तल विभाग से उपर के तल से उंचा अप्काय मय अंधकारमय तमस्कायमय (काले रंग का पाणी) समुद्र में से 1,721 उंचा उडकर पिंजर के आकार का बनकर तिर्च्छा विस्तार करता है। वो पाणी पांचवे देवलोक के रिष्ट विमान तक पहोंचकर पिंजरे के आकार का बनकर नीचे गिरता है। तमस्काय का विस्तार 3,16,227 योजन (3 कोष 128 धनुष साढेतेर अंगुल) से ज्यादा होता है तमस्काय के विस्तार का यदि पार करना है तो कोई देव चंडागति यानि एक चुटकली बजाते 21 बार जंबूद्वीप को प्रदक्षिणा दे सकता है इस तरह वो छ मास तक प्रदक्षिणा देने जाय तो इसका अंत आता है इतना बडा विस्तार तमस्काय का है तमस्काय का वर्ण भयंकर काला है उसके 13 नाम भगवती सूत्र में है। (इसी तमस्काय का पाणी यहां पर आने से कांबली ओढी जाती है और जब सूर्य का प्रकाश बीच में आता है तब जीवो का नाश होता है तो उतने समय वो पाणी नहि गिरता। इसलिये सूर्योदय के पूर्व व सूर्यास्त के बाद जो भी समय ऋतु के अनुसार बताया है उस समय गरम कांबली ओढकर तमस्काय के जीवो की रक्षा करनी चाहिए। (बृहत्संग्रहणी)

151. कृष्णराजी कहां पर है ?

पांचवे ब्रह्म देवलोक के अरिष्ट विमान पाथडा के नीचे आठ कृष्णराजी आयी हुयी है जो षट्कोण चतुष्कोण, त्रिकोण के आकार की है। ये

सभी कृष्णराजी भयंकर काले वर्ण की घोर अंधकार मय है इसमें भी देव चंडागति से 15 दिन तक जंबूद्वीप की प्रदक्षिणा करे तब इन कृष्णराजी का अंत आता है पृथ्वीकाय ये आठ कृष्णराजी है ।

(1) कृष्णराजी (2) मेघराजी (3) मघा (4) माघवती (5) वातपरिघा (6) वातक परिओभा (7) देवपरिघा (8) देवपरिक्षोभ (बृहत्संग्रहणी) .

152. नौ लोकांतिक देव का स्वरुप

➡ भयंकर काले वर्ण की कृष्णराजी के बीच में 9 विमान 9 लोकांतिक देव के बताये है उसमें से 9 लोकांतिक देव जब परमात्मा दीक्षा लेने जाते है उससे 1 साल पूर्व आकर विनंती करते है । हे प्रभु ! आप धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करो । इस तरह प्रभु को विनंती करते है ।

➡ **नौ लोकांतिक देव का परिवार**

विमान नाम	देवनाम	स्वामी	देवपरिवार
1 अर्ची	सारस्वत	7	700
2 अर्चीमाली	आदित्य	7	700
3 वैरोचन	वहिन	14	14,000
4 प्रभंकर	वरुण	14	14,000
5 चन्द्राभ	गर्दतोय	7	7,000
6 सूर्याभ	तुषित	7	7,000
7 शुकाभ	आग्नेय	9	900
8 सुप्रतिष्ठान	अव्याबाध	9	900
9 रिष्ट	रिष्ट	9	900

➠ लोकांतिक देवो का समस्त परिवार 2,26,377 देवो का बताया है। इसमें भी विनंती करने वाले देव एकावतारी होते है। त्रसनाडी के अंत मे रहनेवाले होने से लोकांतिक कहलाते है उसकी स्थिति 8 सागरोपमकी है। **(भगवती)**

153. वज्रलेप यानि क्या ?

➠ वज्रलेप एक एसा लेप है जिसको लगाने से यदि करोडो साल चले जाए तो भी लेप चलायमान नहि होता। एसे लेप के द्वारा प्रतिमाजी-जिनमंदिर कभी चलायमान नहि होता। क्योंकि वज्रलेप में नीचे की सामग्री आती है।

कच्चाटींबरु, कच्चा कोठा, शाल्यली पुष्प, शल्कली के बीज, घामणवृक्ष की छाल, घोडावज इन सभी को एक साथ मिलाकर 1024 तोला प्रमाण पाणी में डालकर बराबर गरम करके जब आठवां भाग बाकी रहे तब उतारना। फिर उसमें सरुवृक्ष का गुंदर, हीरा बोल, गुगल, भिलामा, देवदार गुंद, राल, अलसी, बिह्वल का चूर्ण डालकर वज्रलेप तैयार करना। वास्तुसार ग्रंथ में इसका प्रमाण भी है। **(बृहत्संहिता ग्रंथ)**

154. राजीया वाजीया खंभात बंदरे गाजीया

➠ मूलवतन - गंधार पारेख परिवार, श्रीमाली शेठ

व्यवसाय - खंभात, गंधार, गोवा

सन्मान - दिल्ली के बादशाह ने एवं गोवा के कालयशाह ने दोनो भाईओ को अच्छा सन्मान दिया था।

संघ - आबूजी, राणकपुर, गोडी पार्श्वनाथ आदि तीर्थ के संघ निकाले थे ।

प्रतिष्ठा - वि.सं. 1645 जेठ सुद-12 के दिन खंभात में चिंतामणी पार्श्वनाथ जिनालय की भव्य प्रतिष्ठा

भोयरुं - चिंतामणी जिनालय में भोयरा बनाया। जिसमें उतरने की 14 सीडी छ दरवाजे, बीस द्वारपाल, पांच प्रतिहार, 12 स्तंभ, 7 देरी, 25 प्रतिमा ।

गंधार तीर्थ - सं. 1645 में विजयसेन सूरिजी को गंधार ले जाकर पल्लवीया पार्श्वनाथ की प्रतिष्ठा वचातुर्मास भी कराया था।

दुष्काल - 1661में भयंकर दुष्काल गिरने से 4000 मण अनाज का वितरण ।

पदारोहण - सं. 1706 अ.व. 13 के दिन विजयराजसूरि को आचार्य पद व भट्टारक पद देकर सभी को परवाला की माला अर्पण की थी ।

नियम व प्रायश्चित - एक बार दोनो भाईओने प्रवचन में सुना कि लोहे का व्यापार श्रावक से नहि होता क्योंकि इससे शस्त्र बनते है वो अधिकरण होने से भयंकर पाप बंध का कारण बन जाता है। उस समय दोनो भाईयो ने वहाण में भयंकर जो लोहा आया था वो समुद्र में डलवा दिया व जो व्यापार किया उसका प्रायश्चित कीया और जो श्रावक-श्राविका नवकार का जाप करेंगे उनको जब तक जीउं तब तक परवाला की माला बांटते रहना व श्रावक के 12 व्रत स्वीकार कीये । **(वीरवंशावली-पट्टावली स.)**

155. चार प्रकार के दोष क्रिया के

(1) **दग्ध दोष** - माया, नियाण, मिथ्यात्व शल्य से युक्त क्रिया करना।

(2) **शून्य दोष** - उपयोग बिना क्रिया करना।

(3) **अविधि दोष** - जो विधी शास्त्र में है उससे विपरीत क्रिया करना।

(4) **अतिप्रवृत्ति दोष**- शक्ति-परिणाम भाव बिना की क्रिया करना।

चार दोष किरिया छंडाणी, योगावंचक प्राणी रे एतीरथ तारुं...

(पं.वीर विजयकृत 99 प्रकारी पूजा)

156. प्रायश्चिततीर्थ भरुच

➡ **'भरुअच्छहिंमुणिसुव्वय'** - भरुच में मुनिसुव्रत स्वामी जब घोडे को प्रतिबोध देने गये तब ब्राह्मणो को देने हेतु प्रायश्चित शास्त्र पढे थे। वीरप्रभु ने भी अपने साधु को प्रायश्चित लेने भरुच भेजा था। वहां जाकर परंमात्मा की मूर्ति सामने बैठकर ध्यान द्वारा तप करके पाप प्रगट करता है उसको अधिष्ठायक देव आलोचना देते है। भद्रबाहु श्रुतकेवलीभी पाटलीपुत्र संघ की आज्ञान मानने से प्रायश्चित लेने भरुच गये थे। सामुद्रिक शास्त्र में इसका उल्लेख है। **(मुनि सुव्रत कथा)**

157. रोने का कब चालु हुआ

शक्रः महता आक्रन्देन कृत्वा स्वयं रोदिति स्म। तत्पृष्टतः सर्व देवा अवि रुरुदुः। तत दृष्ट्वा भरतेशोऽपि रोदनकर्मणि अभिज्ञोऽभूत।

➡ ऋषभदेव प्रभु के निर्वाण को सुनकर भरतचक्री मूर्च्छित हो गये और भय से कांपने लगे। तब इन्द्र ने आकर जोर से बूम लगाकर रोने लगे। बाद में सभी देवता भी रोने लगे ... तब भरतजी भी रोने लगे, मरुदेवी

माता भी पुत्र वियोग से झरमर झरमर रोकर आंख में छारी छा गई। हर्षाश्रु से पटल दूर हो गये व केवलज्ञान पाया... (**शत्रुंजय माहात्म्य**)

158. पुंठ देकर जाने मे नुकसान है।

➡ ब्रिटीश सरकार के समय में इग्लेण्ड से वाईसराय भारत में आए। उस समय एसा नियम था जिस समय आए तब राजशाही ठाठ से स्वागत करना। और जब जाए तब वापिस रखने जाना। उस समय भी वो जाने के बाद पुंठ न गिरे एसे वापिस आना। वडोदरा गायकवाड ने उसका एसा स्वागत न कीया व पुंठ देकर आ गये तो राज्य में उनका तीसरा नंबर लगा।

प्रथम नंबर निझाम राज्य का, दूसरा नंबर मैसूर, तीसरा नंबर गायकवाड का लगा। यदि औचित्य बराबर किया होता तो प्रथम-द्वितीय नंबर आसकते थे। (**श्राद्ध दिनकृत्य प्र.**)

159. गौशाला के भव

➡ भगवान महावीर के शिष्य गौशाला ने प्रभु वीर के उपर तेजोलेश्या डालकर जैसे ही जाता है वैसे ही वो तेजोलेश्या गौशाला के उपर लगती है और सात दिन में मृत्यु प्राप्त करता है।

➡ गौशाला के भव में मृत्यु पाकर 12वे देवलोक में जाता है।

➡ वहां से च्यवन होकर विमलवाहन राजा बनेंगे।

➡ राजा बनकर साधु के उपर रथ चलायेगें।

➡ विमलवाहन राजा तेजोलेश्या द्वारा मृत्यु प्राप्त करेंगे।

➡ विमलवाहन राजा मरकर सातवी नरक में जायेगें।

- वहां से बडे महामच्छ बनकर शस्त्र द्वारा मरेंगे ।
- वहां से वापिस सातवी नरक में जायेगें ।
- वहां से महामच्छ बनकर शस्त्र द्वारा मरेगें ।
- वहां से छठी नरक में जायेगे ।
- वहां से महिला का अवतार धारण करेंगे ।
- वहां से पांचवी नरक में जायेंगे ।
- वहां से बडे सर्प का अवतार धारण करेंगे ।
- वहां से चोथी नरक में जायेंगे ।
- वहां से वापिस सर्प का अवतार धारण क़रेंगे ।
- वहां से वापिस चोथी नरक में जायेगें ।
- वहां से विकराल सिंह का रुप धारण करेंगे ।
- वहां से वापिस चोथी नरक में जायेगें ।
- वहां से बडे जलाशय में कछुआ बनेगें ।
- वहां से दूसरी नरक में जायेगें ।
- वहां से संज्ञी जीव का अवतार धारण करेंगे ।
- वहां से प्रथम नरक में जायेंगे ।
- वहां से पक्षी के एक लाख भव करेंगे सभी जगह पक्षी का मृत्यु शस्त्रघात द्वारा होगा ।
- वहां भुजपरिसर्प के लाख भव में शस्त्र द्वारा मृत्यु होगा ।
- वहां से पशु (जानवर) के भी लाख भव करेंगे ।
- वहां से कछुआ व महामच्छ के लाख भव केरेंगे ।
- वहां से चउरिन्द्रिय के लाख भव करेंगे ।
- वहां से तेइन्द्रिय के लाख भव करेंगे ।

- वहां से बे इन्द्रिय के लाख भव करेंगे ।
- वहां से वेश्या का अवतार धारण करेंगे ।
- वहां से कन्या का भव करेंगे ।
- वहां से देवलोक में देव बनेंगे ।
- वहां से मानव बनकर दीक्षा धारण करेंगे ।
- दश बार दीक्षा लेकर दशबार विराधना करेंगे ।
- वहां असुरकुमार आदि के 10 भव करेंगे ।
- वहां वापिस मानव बनकर दिक्षा लेंगे ।
- वहां से 12 बार मानव जन्म धारण करके शुद्ध चारित्र का पालन करेंगे ।
- वहां से अनुक्रम से 1 से 12 देवलोक तक जायेंगे ।
- वापिस मानव ज़न्म धारण कर दीक्षा लेगें ।
- वहां से चारित्र पालकर अनुत्तर विमान में जायेगें ।
- वहां से महाविदेह क्षेत्र में मानव बनकर दीक्षा धारण करेंगे ।
- दीक्षा लेकर **दृढ प्रतिज्ञ** नाम के केवली बनेंगे ।
- केवली बनकर देशना के समय गुरु की आशातना कभी नहि करनी, नहि तो एसी हालत होगी एसा स्वरुप समजायेंगे ।

(भगवती सूत्र श.15)

160. वाणीया शब्द की प्रसिद्धि ।

- नगरशेठ जगतशेठ की मुख्यपेठी मुर्शिदाबाद में थी । उस समय नगरशेठ के 64 सदाव्रत चलते थे । प्रतिदिन पांच पकवान बनते थे । नात-जात के भेदभाव बिना सभी को भोजन कराया जाता था । उन शेठ का देश-विदेशमें वहाण के द्वारा व्यापार चलता था । उसके लिये वो वहाणीया

कहलाते थे । शब्द का अपभ्रंश होते वहाणीया मे से "वाणीया" शब्द प्रसिद्ध हुआ । इसी नगरशेठ के परिवार द्वारा समेतशिखरजी के उपर तीर्थंकरो के चरणपादुका की स्थापना हुयी थी ।

161. शिबीका को प्रदक्षिणा

यत्र चन्द्रप्रभा शिबिका तत्रागच्छति, ततस्तां प्रदक्षिणी कृत्य समारो हन्ति ।

➠ **भावार्थ :** प्रभु वीर प्रथम चन्द्रप्रभा नाम की शिबिका को प्रदक्षिणा देते है फिर अंदर बिराजमान होकर दीक्षा के लिये जाते है । (नि.गा.)

162. विधि बहुमान के लक्षण

(1) **जिज्ञासा :** सच्ची विधी को जानने की इच्छा ।

(2) **हर्ष :** सच्ची विधी जानने के बाद मनमें हर्ष उत्पन्न होना ।

(3) **पुरुषार्थ :** सच्ची विधि करने हेतु पुरुषार्थ करना ।

(4) **पश्चाताप :** अविधी करते मन में दुःख उत्पन्न होना वो पश्चाताप

(5) **बहुमान :** जो सच्ची विधी करते है उसके प्रति बहुमान भाव जगाना ।

(श्राद्ध दिनकृत्य)

163. पूनमीयागच्छ

➠ वि.सं. 1149 में पाटण में एक श्रावक ने आचार्य मुनिचंद्रसूरि के कर कमलो द्वारा प्रतिष्ठा करवायी । उस समय वहां पर बिराजमान चंद्रप्रभसूरिने विरोध किया । क्योंकि पूर्णिमा के दिन साधु प्रतिष्ठा नहि करा सकते । इस दिन पाखी पालने की होती है उन दिन से पूनमीया

गच्छ प्रारंभ हुआ । उस समय मुनि चंद्रसूरिने "आवस्सत्तरि" नामका ग्रंथ बनाकर संघ को सन्मार्ग बताया ।

164. सुपात्रदान का प्रभाव

(1) **धन्ना सार्थवाह :** धृत का दान करने से भगवान आदिनाथ बने ।

(2) **श्रेयांसकुमार :** गन्ना का रस वहोराने से सुपात्र दानधर्म प्रगट हुआ ।

(3) **शंखराजा :** द्राक्ष का धोवण वहोराने से नेमिनाथ बने ।

(4) **नयसार :** जंगल में साधु को दान देने से प्रभु महावीर बने ।

(5) **रेवती :** प्रभुवीर के लिये औषध वहोराने से तीर्थंकर नाम कर्म बांधा।

(6) **देवकी :** सिंह केशरिया लड्डुं वहोराने से पुत्र सौभाग्यशाली हुए ।

(7) **श्रीकृष्ण :** साधु को वस्त्र-पात्र देने से तीर्थंकर नाम कर्म बांधा ।

(8) **संगमभरवाड :** खीर का दान देने से शालीभद्र शेठ बने ।

(9) **जीरणशेठ :** सुपात्र दान से 12 वें देवलोक में गये ।

(10) **चंदनबाला :** उडद बाकुला के दान से प्रभु वीर के प्रथम साध्वीजी बने ।

165. चार प्रकार के कर्म बंध

(1) **स्पृष्ट बंध :** जिस तरह दो सोय पास में पडी है और हाथ लगाने से दूर हो जाती है उसी तरह कुछ कर्म एसे होते है पश्चाताप करते ही कर्म का नाश हो जाता है वो स्पृष्ट बंध ।

(2) **बद्धबंध :** सोय मे दोरा डालने के बाद निकालते समय थोडा समय लगता है उसी तरह थोडी धर्म आराधना द्वारा कर्मनाश होता है ।

(3) **निधत्तबंध :** सोय में दोरा डालने के बाद यदि उसको दबा दिया जाय तो दोरा निकालते बहोत समय होता है उसी तरह कुछ कर्म एसे होते है। जो तोडने के लिये उत्कृष्ट आराधना करनी पडती है।

(4) **निकाचित बंध :** दोरे के साथ यदि सोय को जोर से दबा दिया है तो फिर दोरा निकालना बहोत ही मुश्केल होता है उसी तरह निकाचित कर्म को तोडने के लिये क्रिया के साथ तपधर्म की आराधना द्वारा प्रयत्न करना वो निकाचित बंध। **(कर्मग्रन्थ)**

166. दशवैकालिक सूत्र कहां से

➠ प्रभु महावीर की चतुर्थ पाट परंपरा में आने वाले शय्यंभवसूरिजी ने चंपापुरी के पास आये हुए मंदारगिरि पर्वत की गुफा में बैठकर मनकमुनि के आत्म कल्याण के लिये आत्मप्रवाद पूर्व में चतुर्थ अध्ययन, कर्मप्रवाद पूर्व में पांचवा अध्ययन, सत्यप्रवाद पूर्व में सातवा अध्ययन, प्रत्याख्यान पूर्व में से बाकी के अध्ययनो की रचना विकाल वेला में दश अध्ययन रचे उसके कारण दशवैकालिक नाम रखा। मनक मुनि स्वर्गवास पश्चात् यह सूत्र संहरण करने का था मगर संघ व श्रमणे के आग्रह से साधु-साध्वीजी के आत्मकल्याणक हेतु पांचवे आरे के अंत तक यह सूत्र रखने का निर्णय लिया। इस सूत्र में साधु के आचारों का वर्णन है ईस सूत्र के पीछे रतिवक्रा व विवक्ति चर्या नामकी दो चूलिका (दो सूत्र) रखी है वो यक्षा साध्वीजीने सीमंधर स्वामी के पास से लाकर रखी है। इस सूत्र की मूलगाथा का प्रमाण **700** है।

➠ 700 गाथा के उपर तिलकाचार्य ने 7,000 श्लोक प्रमाण टीका बनायी।

➠ 700 श्लोक के उपर हरिभद्राचार्यने 6810 श्लोक प्रमाण टीका बनायी।

➠ 700 श्लोक के उपर मलयगिरीजीने 7700 श्लोक प्रमाण टीका बनायी। इस सूत्र की चूर्णी 7500 श्लोक प्रमाण, लघुवृत्ति 3700 श्लोक प्रमाण निर्युक्ति 450 श्लोक प्रमाण, लघुटीका सोमसुंदरसूरिकी 4200 श्लोक प्रमाण समयसुंदर उपा. की 2600 श्लोक प्रमाण, अगस्त्यसिंह सूरिने भी चूर्णी रची थी समस्त साधु-साध्वीजी के स्वाध्याय का अगत्य का ग्रंथ है।

167. उपदेशमाला ग्रंथ के टीकाकार

अ.नं.	कर्ता	टीका श्लोक	टीकानाम	संवत
1.	हरिभद्रसूरि	-	-	-
2.	कृष्णर्षि	-	प्राकृत	913
3.	सिद्धर्षिगणी	9500	हेयोपादिया	950
4.	उदयप्रभाचार्य	12274	कणिका	1299
5.	रत्नप्रभाचार्य	11150	दोघट्टी	वस्तुपाल-तेजपाल 1238
6.	परमानंदमुनि	-	-	-
7.	सुमतिविजयजी	-	-	1633
8.	रामविजयजी	7600	-	1781
9.	सोमधर्मगणी	-	-	-
10.	सिद्धर्षि	4170	लघुवृत्ति	-
11.	सर्वानंद मुनि	124	-	1518
12.	अमरचंदगणि	-	अवचूरि	1518

13.	धर्मनंदनगणि	–	अवचूरि	1599
14.	अमरप्रभसूरि	–	–	–
15.	जयशेखरमुनि	1500	अवचूरि	1529
16.	सोमसुंदरसूरि	–	बालावबोध:	1485
17.	नन्नसूरि	–	बालावबोध:	1542
18.	बुद्धिविजयजी	–	बालावबोध:	1713
19.	–	1505	बालावबोध:	1664
20.	–	–	बालावबोध:	1499
21.	वर्धमानसूरि	–	कथानकानि	1284
22.	–	–	कथा	–
23.	कुंजरविमल	–	कथा	–
24.	–	–	कथा	–
25.	जिनभद्रमुनय:	–	कथासमास:	1204
26.	–	–	कथानकानि	1821
27.	–	–	वेलनकरकांशे	–
28	–	–	अवचूरीटीका	–
29.	मेरुसुंदरविजय	–	कर्तांकवान्तरम्	–
30.	–	–	यन्त्रम्	–
31.	–	–	शकुनावात्त:	–
32.	जयानंद विजयजी	7600	हिन्दी भाषांतर	2066
33.	हेमसागरसूरि	11150	गुजराती भाषांतर	–
34.	उपाध्यायश्री रत्नत्रय वि.	11150	पुन:संपादन	2069

(उपदेशमाला दोघट्टी)

168. उपदेशमाला ग्रंथाधारे 125 गाथा का स्तवन

क्रम	ढाल	गाथा	प्रथम कडी	श्लोक नं.	प्रथम कडी
1	4	11	जेह राखे पर	434	जइथाणेण चत्तं
2	6	9	नाणरहित परिहरि	351	गुणहीणो
3	6	11	सूत्रविरुद्ध जे आचरे	574	जो जह वायेण
4	6	12	पामर जनपण	508	लोण विजो
5	6	13	निर्दयहृदय	430	छज्जीवणिकाय
6	6	14	साधुभगति	503	अरहंत चेइयाणं
7	7	1	जे मुनिवेष	502	जइ न तरसि
8	7	1	ते पणमारग मांहे	514	सुविग्गपक्खी
9	6	1	मृषावाद भवकारण	515	सुद्धं साहुधम्मं
10	7	1	वंदेनवि वंदवि	516	वंदइणय
11	7	2	आपहीनता जे	524	आयरतर संमाणं
12	7	3	प्रथमसाधु बीजो	519	सावज्जजोग
13	7	3	शेषऋणभव मारग	520	सेसामिच्छादिट्ठि

(उपदेशमाला दोघट्टि प्रस्तावना)

169. उपदेशमालाग्रंथ में से चोवीश ग्रंथमाला का सर्जन

(1) आत्मोपदेश माला - 5.10

(2) उपदेशमाला - गा. 544

(3) उपदेशमाला - गा. 30

(4) उपदेश मणिमाला -

(5) उपदेश रत्नमाला	–	–
(6) दानोपदेश माला	–	–
(7) दानोपदेशमाला	–	प. 71
(8) धर्मोपदेशमाला	–	गा. 102
(9) उपदेशमाला	–	1200 श्लोक
(10) उपदेशमाला	–	104 गा.
(11) धर्मोपदेश माला	–	102 गा.
(12) पुष्पमाला	–	625 गा.
(13) पुष्पमाला	–	2,000 श्लोक
(14) पुष्पमाला	–	स्वोपज्ञ
(15) पुष्पमाला	–	लघुवृत्ति 2330
(16) पुष्पमाला	–	अवचूरि
(17) शीलोपदेशमाला	–	वृत्ति
(18) शीलोपदेशमाला	–	पुष्पकीर्ति
(19) शीलोपदेशमाला	–	सोमतिलक
(20) हितोपदेशमाला	–	प्रभानंद
(21) हितोपदेशमाला	–	1500
(22) शीलोपदेशमाला	–	–
(23) उपदेश मणिमाला	–	कुलक
(24) उपदेशमाला	–	जिनदासगणी

(उपदेशमाला दोघट्टी प्रस्तावना)

170. उपदेशमाला ग्रंथाधारे 350 गाथा का स्तवन

क्रम	ढाल	गाथा	प्रथम कडी	श्लोक नं.	उपदेशमाला श्लोक
1	1	11	अज्ञानी न वि.	398	जं जयइ अगीयत्थो
2	1	14	जिमजिम बहुश्रुत	323	जहुजहु बहुसुओ
3	1	13	पामी बोध नमले	293	लद्धिल्लितयं च
4	2	10	जे निर्गुण गुण रत्नाकर	351	गुण हीणो गुण
5	2	15	पायच्छितादिक	117	जो चयइ उत्तरगुणो
6	6	5	भावदिट्ठ गिलाणं	403	भावेहट्ठि गिलाणं
7	6	7	नयण रहित जिम	405	जह नाम कोई
8	6	8	अगीतार्थ तिमभणे	407	एवमगीयत्थे
9	6	2	द्रव्य क्षेत्र ने काले	400	दव्वं खित्तकालं
10	6	3	सचित अचितमिश्र	401	जह ढियदव्वं
11	6	4	क्षेत्र न जाणे तेह	402	जहठिय खित्तं
12	6	9	पच्छित्ते अतिमात्र	409	सुत्तेयइमं भणियं
13	6	10	तवसीअ बहुश्रुत	412	अबहुस्सुओ तपस्वी
14	6	11	मार्ग मात्र जाणे	416	जइटाइयंमि
15	6	19	सर्वउद्यमे पण	415	अपरिच्छिय
16	6	23	आणारुचि विण	405	आणाएच्छिय
17	7	7	एकाकी ने स्त्री.	157	कत्तोसुत्तथागम
18	7	8	समिति गुप्ति	158	पिल्लीज्जसणमि
19	15	10	दुष्कर कार थकी	423	नाणाहिओ
20	15	13	नविमार्यो धर्म	393	धम्ममिणत्थिमाया:

(उपदेशमाला / दोघट्टी)

171. राजारणसिंह की ढाल

➡ उपदेशमाला ग्रंथ के कर्ता धर्मदासगणी के संसारीपुत्र रणसिंह को प्रतिबोध देने हेतु उपदेशमाला की रचना की । रणसिंह राजा की 38 ढाल ज्ञान विमल सूरिने वि.सं. 1802 मे का.सु. 13 के दिन सुरत में परिपूर्ण की जिसकी कुल गाथा 1122 है । "रंग सौभाग्येन लिपीकृत सुर्यपुर मध्ये"

(जैन गुर्जर कवि)

172. श्रावको को उपदेशमाला ग्रंथ पढने का प्रमाण

यदियमुपदेशमाला श्लोक लोकस्य मूल सिद्धान्तः ।
प्रायेण पठति चायं तदिहास्माभिः कृतो यत्नः ॥

श्रावकाणां हि पाक्षिकाद्यतिचारालोचना सूत्रे च ज्ञानाचारातिचारास्य दावेन व्यावर्णन प्रसंग कालाचारलोचनायां श्री उपदेशमाला प्रमुख सिद्धान्तेत्याद्यक्षरै रेतत्प्रकरणस्थानकाळे पठनादेरतिचारास्पदत्वेन निरुपति मस्ति ॥

➡ **भावार्थ :** यह उपदेश माला श्रावक-श्राविका का मूल सिद्धान्त है । प्रायः करके इस ग्रंथ को संपूर्ण रुप से पढना चाहिए । श्रावक के पाक्षिक अतिचार में आता है कि "श्रावक तणे धर्म स्थविरावली, पडिक्कमणा, उपदेशमालादि प्रमुख सिद्धान्त भण्यो गुण्यो" यानि श्रावक कालवेला में इनका अभ्यास करे तो कालाचार नामकीं अतिचार लगता है और उसकी आलोचना लेनी पडती है । इसका मतलब यह हुआ कि कालवेला को छोडकर यह ग्रंथ अवश्य पढना चाहिए ।

(उपदेशमाला दोघट्टी प्र.)

173. एक दिन में कालवेला कितनी बार ?

अणुविए सूरिए मज्झण्हे, अत्थमणे अट्ढरत्ते एयासु चउसु सज्झायं न करेंति ॥

➠ **भावार्थ :** (1) सूर्योदय के पूर्व दो घडी (48 मिनिट)

(2) सूर्यास्त के पश्चात् दो घडी (48 मिनिट)

(3) पुरिमट्ढ पच्चक्खाण के पूर्व 1 घडी (24 मिनिट) व पश्चात् 1 घडी

(4) मध्यरात्रि में (12 बजे) 1 घडी पूर्व व पश्चात् घडी गिनना

इस तरह पूरे दिन चार बार कालवेला बतायी है। उसमें यदि स्वाध्याय करें तो कालाचार नामका अतिचार लगता है। (**निशीथचूर्णि 1637**)

174. सुरत नाम कैसे प्रसिद्ध हुआ ?

➠ वि.सं. 1500 में फिरंगीओ ने किल्ला बंधाया। शाहजादा जहांगीर सं. 1624 में रानेर गांव में आया था। उस समय रानेर में नाखुदा करोडपति रहता था। उसने शाहजादा को अपने घर ले गया उस समय उसके सम्मान में वरीयाव से अपने घर तक कपडा जमीन में लगाया। उसके पर चलके गया तब जहांगीरने उस समय जहांगीर पुर बसाया। उस समय जहांगीर ने सूरज नामकी वेश्या वहां रखी थी। सं. 1615 में शाहजादा का हुकम प्राप्त करके सुरज के नाम से **सुरत** बसाया। उस समय सुरत में चौराशी बंदर का बावटा फरकता था। भारत में सुरत बंदर का प्रथम नम्बर आता था। शिवाजी राजा ने यंत्र की संपत्ति लूंटकर महत्वाकांक्षा पूर्ण की थी। अंग्रेज भी सुरत के सौंदर्य से ललचाये थे। उन्होने प्रथम थाणा यहां डाला था। गोपीदास नाम उपर से गोपीपुरा प्रसिद्ध हुआ।

प्रमाण : संवत सोल विक्रमराजा, सुरत नाम गणिकासाज, तापर बादशाह की महेर ताने वस्यो सुरत शहेर, फिरकगांवीसा साहुकार, गोपीपुइड वास्यासार, गोपीनाम, सरवरवाव, पत्थर केवलबंधी सार, सुरजमंडणा श्री पास, थापणकीया गोपीदास, तापी छपरांसि पतसाह किल्ला किन वड उच्छाद (सुरत गज्जल-दीपविजय) **(जैन परंपरा का इतिहास)**

175. उपाध्याय उदयरत्नजी द्वारा रचित रास आदि

नं.	वि.सं.	तिथि	गांव का नाम	रास सज्झाय
1	1763	श्रा.व.10	खंभात	ब्रह्मचर्य के नववाड की सज्झाय
2	1749	भा.सु.13	हरियाला खेडा	जंबूस्वामी रास
3	1755	पो.सु.10	पाटण	अष्टप्रकारीपूजा
4	1759	मा.सु.11	उनाबंदर	स्थूलभद्र नवरसरास
5	1750	वै.व.6	शंखेश्वर	पुजारी आडो खेल
6	1759	वै.व.6	शंखेश्वर	शंखेश्वर के श्लोक
7	1761	फा.व.11	पाटण	राजसिंहरास
8	1765	श्रा.व.10	-	बारव्रत का रास
9	1766	मा.व.8	हरियाला खेडा	मलयासुंदरी रास
10	1767	पो.सु.5	उनावा	यशोधररास ढाल-61
11	1767	आ.व.6	उनावा	लीलावती सुमतीरास
12	1768	मा.सु.6	पाटण	धर्मबुद्धि-पापबुद्धि रास
13	1769	पो.सु.13	उनावा	भुवनभानुकेवली रास
14	1769	श्रा.सु. 7	-	सुविधिनाथ स्तवन
15	1770	मा.सु.13	आदरज	नेमिनाथ श्लोक

16	1770	मा.सु.13	आदरज	भरत बाहुबली श्लोक
17	1770	–	पालीताणा	ऋषभदेव की ढाल-10
18	1770	–	खेड़ा	भावरत्नसूरि परंपरा रास
19	1772	भा.सु. 13	अमदावाद	स्तवन चोवीशी
20	1772	भा.सु. 13	अमदावाद	ढंढणमुनि सज्झाय
21	1779	भा.सु.15	पाटण	भाभापार्श्वनाथ स्तवन
22	1782	–	अमदावाद	राजासूर्ययशा रास
23	1782	आ.सु.15	अमदावाद	वरदत्तगुणमंजरी रास
24	1782	आ.सु.15	अमदावाद	दामन्नक रास
25	1785	भा.व. 5	भालेज	सुदर्शनशेठ रास
26	1790	–	–	गंधारमंडन वीरस्तवन
27	1795	जे.सु.6	हरियाणा खेड़ा	विमलमहेता के श्लोक
28	1795	श्रा.सु.15	उनावा	नेमिनाथ राजीमती रास
29	1799	चै.सु.9	उमरेठ	हरिवंश रास
30	1799	चै.सु.10	मियागाम	हर्षरत्नगणी सज्झा

(जैन परंपरा इतिहास भा.4)

176. सुरत में गोपीपुरा किसने बसाया ?

➠ सं. 1615 में सुरत बसने के बाद वहां पर गोपीशाह नामका जैन ओसवाल वहां पर रहने आया । उस ओसवाल ने सुरत में गोपीपरु, गोपीतलाव व चौमुखी वाव बंधाया । अकबर बादशाह ने सुरत को जीतकर गोपीशाह को सुरत का मंत्री बनाया । मंत्री गोपी नागरने 1687

में बडे दुष्काल में जनता को भारी मदद की थी । मंत्री गोपीने सबसे प्रथम गोपीपुरा में सुरजमंडण पार्श्वनाथ का जिनालय बंधाया था । वि.सं. 1678 का.व. 5 विजयसेनसूरि की आज्ञा से गीतार्थ मुनिवर के हाथो से जिनालय की प्रतिष्ठा हुयी थी ।

कहते है कि सुरत के नागर बनीयें जैन थे । शेठ सुंदरजी नागरने वि.सं. 1736 में वीशस्थानक तप चालू किया था । ज्ञान विमलसूरिने 1766 में पोषवद-8 के दिन सुंदरजी के आराधना हेतु वीशस्थानक तप स्तवन रचा था ।

सुंदरजी नागर की भार्या अमृतभाईने सं. 1766 में महासुद-11 के दिन शांतिनाथ प्रतिमा की प्रतिष्ठा ज्ञान विमलसूरि के हाथ से करायी थी । उस समय शांतिनाथ का स्तवन रचा सं. 1664 में सुरत में रेलवे आयी फिर बंबइ-सुरत के बीच में व्यवहार चालू हुआ ।

(जैन परंपरा का इतिहास)

177. सुरत से नीकले हुए 12 संघ

(1) **प्रथम संघ-प्रेमजी पारेख का :** वि.सं. 1710 में प्रेमजी पारेखने ज्ञान विमल सूरि की प्रेरणा से शत्रुंजय महातीर्थ का संघ निकाला ।

निश्रादाता : आचार्य श्री ज्ञानविमलसूरिजी, आचार्य श्री लक्ष्मीसागर सूरिजी आचार्यश्री ऋद्धिसागर सूरिजी, पं. श्री अमरविजयगणी, शीघ्र कवि उदयरत्नजी ।

संघप्रयाण : वि.सं. 1770 चैत्र सुद-10 के दिन

प्रथम संघ : कपूरचंद भणशाली का अमदावाद से

द्वितीय संघ : खंभात से जैनो की टोली ।

तृतीय संघ : पाटण से जैनो की टोली ।

संघ रक्षा : कपूरचंद भणसाली ने संघ रक्षा हेतु 400 घोडे स्वार बंदूकधारी 500 पादविहारी सैनिक ।

संघ में आनेवाले मुख्य गांव : भरुच, सोजीत्रा, धोलका, गांगड, धंधुका, लोलीमाणा, धारुक, सणोसरा, बंदरगांव, पालीताणा ।

स्वागत : पालीताणा के ठाकोर पृथ्वीराजजी ढोलबाजा के साथ बंदरगांव तक सामने गये थे ।

सामग्री : इस संघ में 360 गांवो के 35,000 जैन 300 मुनिवर, 400 भोजक (गानेवाले) 1700 गाडा 4 जैनाचार्य थे ।

तीर्थयात्रा : वैशाखवदि 6 के दिन तीर्थयात्रा करके उदयरत्नजीने शत्रुंजय भेट्यो रे स्तवन बनाये ।

तीर्थमाल : जेठ सुद 10 के दिन संघवी व उनकी दो धर्मपत्नी को ज्ञानविमल सूरिने संघमाला परिधान की । **(जैन परंपरा इति. भा.4)**

(2) **दूसरा संघ, कचरा कीका का :** संघवी कचरा कीका पटणीने उपाध्याय श्री देवचन्द्रजी की प्रेरणा से सं. 1794 में सुरत से समेतशिखरजी तीर्थ का वाहन में संघ नीकाला था । कलकत्ता तक वहाण में गये थे वहां से पैदल गये । साधु-साध्वीजी साथ में नहि थे । लालचंद के पुत्र पुंजाशाह दीक्षार्थी साथ में रहकर सभी क्रिया कराते थे । उस समय पालगंज के राजा ने संघ यात्रा करने की मनाई की तो पुंजाशाह ने भोमीयाजी की प्रार्थना करके यात्रा चालू की । यह संघ शिखरजी, राजगृही, चंपापुरी, क्षत्रियकुंड, पावापुरी, मथुरा, आगरा, पाटण होकर वापिस आया ।

पुंजाभाईने वि.सं. 1796 वै.सु. 6 के दिन रत्नविजय गणी के पास दीक्षा स्विकार की उत्तम विजय नाम रखा ।

(जैन परंपरा का इतिहास)

(3) **तीसरा संघ - कचराकीका व रुपचंद कचरा का :** वि.सं. 1804 का.सु. पूर्णिमा के दिन वहाण द्वारा डुम्मस से भावनगर गये वहां से का.व. 13 के दिन वरतेज, कनाड, गारीयाधार होकर पालीताणा गये । दोनों संघवी ने महा सुद-3 के दिन शत्रुंजय तीर्थ में तीर्थमाला धारण की थी। इस संघ में तपागच्छ के अचलगच्छ के अनेक पदधारी व साधु भगवंत थे । संघ जब पालीताणा पहोंचा उस समय खंभात, घोघा, भावनगर, पाटण, वेरावल आदि के अनेक संघ आये थे । कचराकीका संघवी ने पं. देवचंद्रजी के उपदेश से 6000 रुपीया खर्च करते सुमतिनाथ भगवान की प्रतिष्ठा करायी थी ।

(4) **चतुर्थ संघ - ताराचंद संघवी का :** कचरा कीका के पुत्र ताराचंद ने सुरत से मोरवाडा गोडी पार्श्वनाथ का संघ निकाला । वि.सं. 1821 मागसर सुद-7 के दिन समस्त सुरत संघ को इक्कट्ठा करके उनकी आज्ञा लेकर समस्त जैनो को संघ के साथ पधारने हेतु आमंत्रण दिया। संघ की आज्ञा मिलने के बाद सुरत के समस्त जिनालयो में अठाई महोत्सव चालू किया ।

निश्रादाता : अचलगच्छ के उदयसागर सूरि, उपाध्याय ज्ञानसागर गणि, तपागच्छ के पुण्यसागर गणी, खुशालविजय गणी, आगमिक गच्छ के श्री रत्नसूरि पं. हेमचन्द्र गणि, पं. उत्तम विजय गणी आदि अनेक साधु भगवंत इस संघ के अन्तर्गत अनेक गावो के जैन पधारे थे । सुरत से प्रथम कतारगाम कठोर, अंकलेश्वर, भरुच, छाणी, खेडा, राजनगर,

पेथापुर, वीसनगर, तारंगा, खेरालु, वडगाम, मगरवाडा होकर फागणसुद-15 के दिन आबूजी पहोंचे। वहां से भटाणा, पालनपुर, भीलोटा, कोरटा, सुईगाम, बेणप, उच्चोसण होकर मोरवाडा (वरखडी) पहोंचे। संघयात्रा के पश्चात् संघवी ताराचंद, पत्नी रत्नकुमारी, पुत्र धरमचंद पुत्रवधु-कुरडीबेन फुलबाई, संघपति के भाणेज गोडीदास 7 व्यक्ति को संघमाला आरोपण की

उपाध्याय ज्ञानसागर गणिवर ने 1821 में सुरत में तीर्थमाला की 12 ढाल रची। **(जैन परंपरा इतिहास भा.4)**

(5) **पांचवा संघ - शत्रुंजय महातीर्थ का :**

संघवी ताराचंद जो कचराकीका के पुत्र है उन्होने वि.सं. 1826 में सुरत से शत्रुंजय तीर्थ का संघ निकाला था। इस संघ मे भट्टारक पंन्यास श्री तिलकचंद्रजी गणी, तपागच्छ के जिनविजय गणी। पं. उत्तमविजयगणी, यह संघ अमदावाद होकर पालीताणा गया था। पं. उत्तमविजयने 1827 में शत्रुंजय स्तवन रचा था उसमें संघ का वर्णन था।

(6) **छट्ठा संघ - मोदी प्रेमजी लवजी का :** अमदावाद काश्यप गोत्रीय परमार वंश के दशा श्रीमाली लवजीमोदी के तीन पुत्र थे। (1) प्रेमचंद (2) हेमचंद (3) जयचंद (4) पुत्री तेजकुंवरी

तीनो भाई सुरत में आकर रहने लगे। उसमें बडे भाई प्रेमचंद मोदीने वि.सं. 1836 में तपागच्छ के भट्टारक विजयधर्मसूरिकी निश्रामें सुरत से शत्रुंजय महातीर्थ का संघ नीकाला।

वि.सं. 1836 में चैत्रसुद-13 के दिन धर्मसूरि के उपदेश से खोडीयारकुंड के पास (नवकुंड) विशाल जिनालय का निर्माण किया जो प्रेमचंद मोदी के नाम से प्रसिद्ध है।

(7) **सातवा संघ - प्रेमचंद मोदी व शेठ बोधाशाह का :** पालीताणा में प्रेमचंद मोदी ने नवटुंक मे जिनालय का निर्माण कराया। प्रतिष्ठा का मुहुर्त वि.सं. 1843 महासुद-11 के दिन तय हुआ। प्रतिष्ठा हेतु संघवी मोदीने समस्त सुरत संघ का इक्कट्ठा करके आमंत्रण दिया। उस समय सुरत में रहने वाले शेठ बोधाशाह ने शत्रुंजय संघ की भावना बतायी। यदी संघ आज्ञा दे तो और मोदी संघ मे सहायता दे तो मेरी 'छ'रि पालित संघ की भावना है। संघ व मोदी दोनोने आज्ञा दी।

वि.सं.1843 मागसर सुद-3 के दिन मोदि व बोधाशाह दोनों को संघ तिलक करके सुरत संघ से प्रयाण किया।

निश्रादाता : अचलगच्छ के उदयसागरसूरि, उपाध्याय खुशाल विजयजी, उत्तम विजयजी गणी ... संघ ने पालीताणा पहोंचकर ललित सरोव्र किनारे पडाव डाला जिनालय में प्रतिष्ठा हेतु नयी प्रतिमा तैयार करायी। प्रतिष्ठा की प्रेरणा करनेवाले धर्मसूरिजी का कालधर्म होने से उनकी पाट परंपरा में आनेवाले जिनेन्द्र सूरिजी को विनंती की। वो सिरोही चातुर्मास थे। वहां से उग्र विहार करके महासुद-10 पालीताणा पहोंचे व महासुद-11 के दिन प्रेमचंद मोदी तीनोभाई व बुधाशाह साथ मिलकर इन्द्र बनकर मूलनायक की प्रतिष्ठा की। 'सर्वतोभद्र प्रासाद' नाम रखा। मूलनायक की गादी में नीचे का उल्लेख है।

सं. 1843 महासुद-11 सोमवारे, काश्यप गोत्रे, परमार वंशे, दशा श्रीमाळी राजनगर वास्तल्य हा. सुरत विजय जिनेन्द्रसूरि आदिश्वर प्रतिष्ठा करितौ। **(जैन परंपरा इति भा.4)**

मोदी की प्रतिष्ठा पश्चात् वापिस सुरत : प्रेमचंद मोदी ने प्रतिष्ठा पश्चात् सुरत चातुर्मास हेतु जिनेन्द्रसूरि को विनंती की। आचार्य भगवंतने भी

विनंती स्वीकार करके बहोत यात्रालुओके साथ वरतेज, पीपली, पेटलाद, गंधार, भरुच होकर सुरत पहोंचे। आचार्य भगवंत व उपाध्याय खुशाल विजयजीने वि.सं. 1843 में चातुर्मास कीया। व मोदी प्रेमचंद शत्रुजय संघ का रास रचा। सं. 1992 में अमदावाद नागजी भूधरकी पोल में रहनेवाले पुंजाभाई नगीनदास व श्राविका भूरीबाईने शत्रुंजय के प्रेमचंदमोदी के टुंक का जीर्णोद्धार कराया

(8) **आठवा संघ - सुरत से मोरवाडा का :** संघवी प्रेमचंद मोदी, गोविंदजी मसालीया, उदयरामजी दीवान, इन तीनो ने साथ मिलकर वि.सं. 1852 मे तपागच्छ के भट्टारक जिनेन्द्रसूरि की निश्रा में सुरत से मोरवाडा का संघ निकालकर चैत्रवद-2 के दिन यात्रा की। इस संघ में सं. पद्मविजयजी, मुनि रंगविजयजी साथ में थे। उन्होंने गोडी पार्श्वनाथ का स्तवन रचा था। **(शेठ शांतिदास रास)**

(9) **नवमा संघ - शेठ डाह्याभाई का :** सुरत के संघपति शेठ डाह्याभाईने वि.सं. 1862में सुरत से मोरवाडा (वरखडी) तक गोडी पार्श्वनाथ का संघ नीकाला था। संघ में से वापिस सुरत आकर नगरशेठ की पोल में गोडी पार्श्वनाथ का जिनालय बनाया। मूलनायक के उपर 1882 का लेख है 1972 मे पुनः प्रतिष्ठा है।

(10) **दशवा संघ - शेठ धरमचंद उदयचंद का :** सुरत के संघपति धरमचंद ने सं. 1945 में मोहनलालजी म.सा. के उपदेश से केसरीयाजी तीर्थ का 'छ' रि पालित संघ नीकाला। उसमें प्रायः करके 150 साधु-साध्वीजी व 1440 श्रावक-श्राविकाए थे। इसि संघवीने दूसरा संघ सुरत से शत्रुंजय का निकाला था।

(11) अग्यारवा संघ - शेठ अभयचंद स्वरुपचंद का : आगम दिवाकर आचार्य देव श्री आनंद सागर सूरिजी उपदेश से सुरत से अंतरीक्ष महातीर्थ का 'छ'रि पालित यात्रा संघ शेठ अभयचंद स्वरुपचंद ने उदारता के साथ निकाला था । उस समय दिगंबर के बीच में मतभेद होने से कोर्ट मे केस हुआ था । आनंदसागरसूरिने जाहेर किया था कि यह तीर्थ श्वेताम्बर का है व प्रतिमाभी श्वेताम्बर की है ।

(12) बारवा संघ - जीवणचंद नवलचंद झवेरी का : आगम वाचना कार आचार्य देवश्री आनंद सागरसूरिजी की प्रेरणा से **वि.सं. 1976** में सुरत से शत्रुंजय महातीर्थ का 'छ' रि पालीत संघ निकाला । यह संघ सुरत से खंभात धोलेरा बंदर जाकर पालीताणा गये ।

इस संघ मे सागरानंद सूरिजी, पं. विजयसागार गणि, पं. माणेक सागर गणि, पं. मणि विजयजी, मुनि कुमुद विजयजी, मुनि सुमतिविजयजी वि. साधु थे । उस समय दर्शन-ज्ञान-न्याय विजय धोलेरा बंदर में बिराजमान थे । वीरचंद्र भगत पडाव की व्यवस्था करते थे । पालीताणा में चातुर्मास करके आगम वाचना देते थे । संघपति के पुत्र व धर्मपत्नी दोनों ने दीक्षा ग्रहण की थी । नाम मुनि जितेन्द्र विजय व साध्वी जयप्रभाश्रीजी नाम रखा था । मुनिश्री जितेन्द्र विजयजी ने पूना में जैन तत्त्वज्ञानविद्यापीठ की स्थापना की थी । **(जैन परंपरा इतिहास भा.4)**

178. पंचाचार पालन से पांच वैभव प्राप्त

(1) ज्ञानाचार - प्रज्ञावैभव - द्वादशांगी को हृदय में स्थापना करो ।

(2) दर्शनाचार - प्रेमवैभव - जिनप्रतिमा को हृदयमें स्थापन करो ।

(3) चारित्राचार - पवित्रता वैभव- अष्टप्रवचन माता को हृदय में स्थापो ।

(4) तापाचार - पुण्य वैभव - अणहारी पद को हृदय में स्थापो ।

(5) वीर्याचार - पराक्रम वैभव - क्रिया व सेवाभाव को हृदय में स्थापो ।

आचार पालन से अनाचार कम होता है ।

179. सुरत में रची हुयी ढाल व रास

क्रम	वि.सं.	ग्रंथ रचने वाले	ग्रंथ का नाम
1	1609	पं. कमलेश शेखरजी	नवतत्त्व चोपाई
2	1632	विजयसेन सूरिजी	विद्वान की संगतमे दिगंबरको हराया
3	1673	उपा. रत्नचंद्र गणी	निझामपरा में हीरविहार प्रतिष्ठा
4	1674	मुनिसुंदरसूरि	अध्यात्म कल्पद्रुम उपर टीका
5	1676	–	सम्यक्त्व सित्तरी बालावबोध
6	1678 का.व.2	–	सुरजमंडन पार्श्वनाथ प्रतिष्ठा
7	1678 पो.सु. 2	–	संग्राम सूर कथा
8	1689	उपा.विनय विजयजी	सुर्यपुर चैत्यपरिवाटी
9	1706	मुनिदया विजयजी	चंपकश्रेष्ठी कथा
10	1718	उपा.विनयविजयजी	इन्द्रदूत नामका विज्ञप्ति पत्र
11	1720	आ.विनयविजयजी	नेमिनाथ बारमासा
12	1732	पं. जयहारगणि	अनिरुद्धाहारगणी रास
13	1738	उपा. विनयविजयजी	भगवती सूत्र सज्झाय
14	1773	पं. राम विजयजी	कल्याणक स्तवन

15	1751	पं. जिनविजयजी	कल्याणक स्तवन
16	1781	पं. सत्यसागर गणी	वच्छराज रास
17	1774	आ. ज्ञानविमलसूरि	अशोकचंद्र रोहिणी रास
18	1781	उपा. नित्यलाभ गणि	स्तवन चोवीशी
19	1788	उपा. रामविजयजी	लक्ष्मीसागर सूरिरास
20	1797	उपा. ज्ञानसागर गणी	द्रव्य-गुण पर्याय का रास
21	1799 श्रा.सु. 10	-	धन्ना शालीभद्र रास
22	1871	श्री वीरविजयजी	अक्षयनिधी स्तवन
23	1877	सुरतसंघ	जिनेन्द्रसूरि को विज्ञप्ति पत्र
24	1877	पं. दीपविजयजी कवि	सुरत की गझलव, सोहमकुल
25	1889	पं. दीपविजय कवि	नंदीश्वर द्वीप पूजा
26	1892	पं. दीपविजय कवि	प्रतिमा पूजा रास
27	1919	मुनि नित्य विजयजी	विहरमान जिनपूजा

(जैन परंपरा इतिहास भा.4)

180. सुरत के चातुर्मास व प्रतिष्ठा निश्रादाता

क्रम	वि.सं.	निश्रादाता	विशिष्टता
1	1613	विजयहीर सूरिजी	विजयसेनसूरिकी दीक्षा
2	1614	विजयदानसूरिजी	चातुर्मास
3	1676	उपा. रत्नचंद्रगणी	पो.सु. पुनम हीरविहार प्रतिष्ठा
4	1678	-	का.व. सूरजमंडन पार्श्वनाथ प्रतिष्ठा

5	1689	उपा. विनयविजयजी	चातुर्मास
6	1710	विजयदेवसूरि, विजयप्रभसूरि	चातुर्मास
7	1716	उपा.विनय विजयजी	चातुर्मास
8	1761	पं.राजसुंदरगणी	चातुर्मास (खरतरगच्छ)
9	1780	मुनिदया विजयजी	चातुर्मास (खरतरगच्छ)
10	1782	मुनि जयाविजयजी	चातुर्मास
11	1784	पं.देवविजयजी	चातुर्मास
12	1787	पं.क्षमा वि. / पं. जिनविजय	चातुर्मास
13	1799	विजयदया सूरि	नव चातुर्मास
14	1813	पं. उत्तम विजय	उपधान तप
15	1782	ज्ञान विमलसूरि	सौभाग्यविमल चरण प्रतिष्ठा
16	1827	जिनलाभ सूरि	शीतलनाथ आदि 200 प्रतिमाकी प्रतिष्ठा
17	1837	जिनयचंद्रसूरि / उपा.क्षमात्याग	35 साधु सह चातुर्मास
18	1949	–	वडाचोटा सीमंधर स्वामी प्रतिष्ठा
19	1950	–	अष्टापद देरासर प्रतिष्ठा
20	1951	–	उमरवाडी देरासर प्रतिष्ठा
21	1954	–	समेतशिखर रचना प्रतिष्ठा
22	1954	–	कुंथुनाथ देरासर प्रतिष्ठा

23	1957	मुनिसिद्ध विजय	नगीनदास झवेरचंद 1 लाख द्रव्यखर्च के पंन्यास पद दिया
24	1962	मोहनमुनि	आदीश्वर प्रतिष्ठा मोहनलाल ज्ञानभंडार व पाठशाला स्थापना
25	1961	नीतिविजयजी	पंन्यासपद हुआ
26	1973	-	मोहनलालजी कालधर्म
27	1974	आ.कमलसूरिजी	वै.सु.10 आनंदसागर सूरिपद
28	2006	आनंदसागरसूरि	सुरतमे कालधर्म

(जैन परंपरा इतिहास)

181. विनयगुण प्रधानता

विणओ सासणे मूलं, विणीओ संजओ भवे ।
विणयाओ विप्पमुक्कस्स, कओ धम्मो कओ तवो ॥

➡ **भावार्थ :** विनय जिनशासन भाषित द्वादशांगी का मूल है संयम भी विनय में समाया है जो विनय से मुक्त है यानि अविनयी उनका तप कौन सा ? धर्म कौन सा ?

➡ विनय लक्ष्मी को लाता है यश कीर्ति को फैलाता है दुर्विनीत कभी भी सिद्धि प्राप्त नहि कर सकता है ।

➡ जैसे पाणी से वेल की वृद्धि होती है वैसे विनयरुपी पाणी से ज्ञानरुपी वेलवृद्धि पाता है ।

➡ विशिष्ट कोटि के विनयवाले गौतम गणधर सभी पदार्थो की जानकारी होने पर भी परमात्मा की वाणी सुनते समय यथाजात मुद्रा में बैठकर हाथ जोडकर सुनते थे

➡ जैसे राजा के सामने प्रजा हाथ जोडकर मस्तक झुकाकर आज्ञा उपर उठाते है। उसी तरह जिनवाणी सुनते समय हाथ जोडकर, मस्तक झुकाकर बहुमान के साथ सुननी चाहिये। **(उपदेशमाला)**

182. विनय के दश भेद

(1) **सत्कार :** ज्ञान व ज्ञानी का सत्कार करना पधारो.. गुणगाना

(2) **अभ्युत्थान :** ज्ञान भगवंत पधारे तब खडा होना।

(3) **सन्मान :** वस्त्र-पात्र-वासक्षेप आदि द्वारा बहुमान करना।

(4) **आसन :** आसन को द्रष्टि व रजोहरण-चरवला द्वारा पूंज के पाथरना।

(5) **आसनानुप्रदान :** आसन उपर बैठने हेतु पधारने-बिराजने का निवेदन करना।

(6) **कृतिकर्म :** पंचांग प्रणिपात आदि द्वारा वंदन करना।

(7) **अंजलि :** जब तक प्रवचन चले, वाचना होवे तब तक हाथ जोडते रहना।

(8) **अनुसरण :** चेष्टा द्वारा अभिप्राय जानकर सेवा करना।

(9) **पर्युपासना :** जिनवाणी व गुरु की उपासना करना।

(10) **पश्चात् :** गुरु के आगे भी नहि, साथे भी नहि, मगर पीछे चलना।

(दशवैकालिक वृत्ति)

183. बहुमान आचार के लक्षण

➡ अभ्यन्तर प्रीति प्रतिबन्धः इति बहुमान : - सामने के व्यक्ति प्रति अन्दर के भाव से प्रीती बांधनी वो है बहुमान आचार। विनय बहार से देखा जाता है मगर बहुमान भाव हृदय से प्रगट होता है ज्ञान व ज्ञानी के प्रति हृदय से बहुमान भाव प्रगट करना उसंके पांच लक्षण है।

(1) **उपकार :** ये मेरे उपकारी है, मेरे को ज्ञान व संस्कार दिये है इनकी इच्छा पूर्ण करनी चाहिये । कैसा भी हो जाय तो भी इनकी इच्छा विरुद्ध कोई कार्य नहि करना । उपकारी के इच्छा को पूर्ण करना वो प्रथम लक्षण ।

(2) **अदोष :** जो मेरे उपकारी है उनके दोष कभी नहि देखना, यदि कोई दोष सुनाई तो भी उन दोषो को ढकने का प्रयत्न करना । सिर्फ गुण देखकर गुणों की प्रशंसा करना । मगर दोष नहि देखना यदि ज्यादा देखने में आ जाय तो उपेक्षा भाव करना ।

(3) **अभ्युदय :** ये मेरे उपकारी है उनका अभ्युदय ज्यादा से ज्यादा कैसे आगे बढे उसके लिये प्रयत्न पुरुषार्थ करना । उनके गुणों की अभिवृद्धि देखकर खुश होना ।

(4) **वेदना :** ये मेरे उपकारी है यदि उनके पापोदय के कारण उनकी दुर्दशा आ जाय तो उनके प्रति वेदना (दु:ख) उत्पन्न होना चाहिए और उनके प्रति बारबार जाकर उनको आश्वासन देकर उनके दु:ख को दूर करने का प्रयत्न करना । आश्वासन से आधा दुख दूर हो जाता है ।

(5) **हर्ष :** जिस तरह दुर्दशा देखकर दु:ख होता है उसी तरह उपकारी के अभ्युदय को देखकर खुश होना चाहिए । मेरे उपकारी का दिन प्रतिदिन अभ्युदय बठना चाहिए । मगर इर्ष्या तो कभी नहि करना । एसी नि:स्वार्थ भावना से प्रीति भाव रखना वो बहुमान आचार । **(भगवती सूत्र प्रवचन)**

184. बहुमान आचार की चतुर्भंगी

(1) विनय है मगर बहुमान नहि है - जैसे कृष्ण का पुत्र पालक

(2) बहुमान है मगर विनय नहि है - जैसे कृष्ण का पुत्र शांब

(3) विनय भी नहि, बहुमान भी नहि - जैसे कपिलादासी

(4) विनय भी है, बहुमान भी है - जैसे गौतमस्वामी (**आचारप्रदीप**)

185. वस्तुपाल मंत्री की सात मांगणी

शास्त्राभ्यासो जिनपति नतिः संगति सर्वदार्यैः ।

सत्वृत्तानां गुणगण कथा, दोषावादे च मौनम् ।

सर्वस्यापि प्रियहितवचो, भावना चात्म तत्वे ।

सम्पद्यतां मम भवभवे, यावदाप्तोपवर्गः ॥1॥

(1) शास्त्राभ्यास - अज्ञानता को नाश करने हेतु

(2) जिनेश्वर भक्ति - परमात्मा पद की प्राप्ति हेतु

(3) संतो का समागम - भव के अंत लाने हेतु

(4) गुणो की प्रशंसा - गुणरागी बनने हेतु

(5) दोष में मौन - दुर्गुणो से दूर हटने हेतु

(6) प्रियहित वचन - स्व व पर के कल्याण हेतु

(7) आत्मचिंतन - आत्म रमणता प्राप्त करने हेतु

186. प्रतिक्रमण करने का शास्त्रीय समय

अर्धनिब्बुडरति गुरु, सूत्र कहे काल पुरो रे,

दिवस नो रातिनो जाणीये, दस पडिलेहण थी सुरो रे श्रुत...7

➠ **भावार्थ :** आधा डुबा हुआ सूर्य शाम के प्रतिक्रमण का समय है। सुबह की दस पडिलेहण पूर्ण होवे तब सूर्योदय होना वो सुबह के प्रतिक्रमण का समय है । और अपवाद से अर्धरात्रि (से मध्यान्ह) तक राई

प्रतिक्रमण व मध्यान्ह से अर्धरात्रि तक देवसी प्रतिक्रमण का समय है यह योगवृत्ति के नाद से जानना ।

(उपा. यशो वि. कृत प्रतिक्रमण हेतु गर्भित सज्झाय)

187. आलोचक के 11 गुण

जिसको आलोचना लेनी है उनको ये गुण प्राप्त करना जरुरी है ।

(1) **संवेगी :** जिसको संसार से डर लगता है वो ही यथार्थ आलोचना ले सकता है नहि तो अपने मुख से स्वदोष वर्णन करना अजि दुष्कर है।

(2) **मायारहित :** जो माया बिना का होता है वो ही आलोचना ले सकता है । वो ही आलोचना ले सकता है ।

(3) **बुद्धिमान :** अपनी भूल को जो बराबर बुद्धि से समझता है ।

(4) **कल्पस्थित :** अपने दोषो के प्रति जुगुप्सा वाला बनना ।

(5) **अनाशंसी :** इहलोक व परलोक में कीसी भी की इच्छा नहि रखना ।

(6) **प्रज्ञापनीय :** हठाग्रह बिना अपनी भूल को सत्यरुप से बतानेवाला ।

(7) **श्रद्धालु :** जिनेश्वर के वचन व गुरु के उपर श्रद्धावाला ।

(8) **आज्ञा :** वडील या गुरु की आज्ञानुसार आलोचना पूर्ण करने वाला ।

(9) **पश्चाताप :** अपने दुष्कृतो को देखकर पश्चाताप करनेवाला ।

(10) **आदरवान :** आदर-विधी के साथ आलोचना लेकर पूर्ण करने वाला ।

(11) **अनुमोदना :** विविध सुकृत, तप, अभिग्रह, स्वाध्याय आदि की अनुमोदना करने वाला.

188. प्रभु वीर का गर्भ में अभिग्रह

तएणं समणे भगवं महावीरे गब्भत्थेचेव इमेआरुवं अभिग्गहं अभिगिण्हेइ नो खले मे कप्पइ अम्मा जीवंतेहिं मुंडे भवित्ता अगारीओ अणगारिअं पव्वइत्तए ॥

भावार्थ : जिस समय श्रमण भगवान महावीर त्रिशला माता के गर्भ में थे उस समय साढे छ मास का समय पसार होने के बाद माता के दुःख को देखकर प्रभुने अभिग्रह किया की जब तक माता-पिता जीवित है तब तक मुंड होकर घर से निकलकर दीक्षा लेना नहि ।(**कल्पसूत्र प्रवचन**)

189. पोरिसी का प्रमाण

पुरुषः प्रमाणम् अस्याः स पौरुषी -

पुरुष प्रमाण जब छाया आती है तब पोरिसी का समय आता है । पहले के समय घडी से नहि मगर पडछाया से पोरिसी का निर्णय होता था । प्रत्येक देश में जिस तरह दिन-रात्रि का प्रमाण होता है उसी तरह छाया प्रमाण पोरिसि गिनी जाती थी । (**धर्मसंग्रहः**)

190. संथारा पोरिसी में आनेवाले भारी शब्दो का अर्थ

अणुजाणह जिट्ठिज्जा	- हे ज्येष्ठ आर्य अनुज्ञा दीजिए।
अर्यते अभिगम्यते इति आर्यः	- जिनके पास ज्ञान प्राप्त कीया हो वो आर्य ।
आरान् पापेभ्यः कर्मेभ्यः स आर्य	- पाप कर्म से जो दूर हो गये वो आर्य ।

वृद्ध, वयोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, गुणवान ये सभी आर्य है ।

"कुक्कुडिपायपसारण" - कुक्कुडिपायपसारणंति कुक्कुटिपादावकाशे प्रथमं प्रसारयति एव साधुनाऽत्याकाशे पादौ प्रथमं अशुक्नुवता प्रसारणीया

➡ **भावार्थ :** जिस तरह मुर्गी पहले आकाश की और पैर फैलाती है उसी तरह साधुको भी प्रथम आकाश की तरफ पैर रखना। फिर जो असमर्थ है तो पैर व संथारा का प्रमार्जन करके विधि पूर्वक संथारा पर पैर रखना।

➡ **अंतरंत पमज्जए भूमि :** दोनो पैर के बीच का भाग भी प्रमार्जन करके रखना।

➡ **संकोइअ :** यदा पुनः संकोचयति पादौ तदा संदेशमुरुसन्धिं प्रमृज्य संकोचयति उद्वर्तयंच कायं प्रमार्जयति अयं स्वफ्तो विधीः।

पैर लम्बे करने के बाद वापिस यदि इक्कट्ठा करना है तो भी प्रमार्जना करके करना। करवट को यदि बदलना है तो भी प्रमार्जना करके पलटना।

➡ **संडासा - ऊरुसन्धिः** - घुटने के नीचे वाले भाग को अवश्य प्रमार्जना उवट्टंते - उद्वर्तनमेकपार्श्वदन्यपार्श्वभवनम् उवट्टंते - एक तरफ से दूसरी तरफ करवट बदलना है तो भी प्रमार्जना करके बदलना। **(ओधनिर्युक्तिः)**

191. काया के पडिलेहन में द्रष्टांत

➡ कच्छ वागड देश में मनफरा के पास चौबारी नाम का गांव है आचार्य श्री सोमसुंदरसूरि वहां पर बिराजमान थे। उस समय द्रव्यलिंगी (अन्य धर्म) ने इक्कट्ठे होकर एख दुर्जन व्यक्ति को 500 टका द्रव्य देकर तैयार किया की रात्रि में जाकर जैनाचार्य के गले में छरी लगाके आ जाना। वो दुर्जन छरी लेकर रात्रि में वहां पर गया। चंद्र की चांदनी में सभी साधु आराम कर रहे थे। उस समय आचार्य भी निद्राधीन थे। वो दुर्जन

प्रथण देखने लगा कि कोई जाग्रत तो नहि है उसी समय सूरि भगवंत निद्रा में भी करवट बदलते है । पैर भी रजोहरण से पूंज के बदलते है वो देखते ही दुर्जन विचार में गिर गया जो नींद में इतना जीवो का ध्यान रखते है उनको कैसे मारना ! द्रव्यलिंगीओने यह गलत विचार किया है । जीवजंतु को बचानेवाले को मारकर भयंकर पाप मेरे को नहि करना । तुरंत आचार्यश्री के पास जाकर क्षमा मांगकर बैठा । तब सूरिने उनको धर्म उपदेश दिया । वैराग्य जागृत हुआ, खुनी में से मुनि बना ।

(हीरसौभाग्य काव्य)

192. चोवीश तीर्थंकरो के नाम के कारण ।

(1) **ऋषभदेव :** इस प्रभु के साथल के भाग में वृषभ का चिन्ह था और मरुदेवी माताने स्वप्नमें प्रथम वृषभ को देखा था ।

(2) **अजितनाथ :** गर्भ के प्रभाव से माता पासा खेलने मे पति से जीते नहि ।

(3) **संभवनाथ :** गर्भ के प्रभाव से देश में बहोत धनधान्य का संभव हुआ ।

(4) **अभिनंदनस्वामी :** इन्द्र ने बार बार आकर माता को अभिनंदन किया ।

(5) **सुमतिनाथ :** गर्भ के प्रभाव से माता को श्रेष्ठ बुद्धि उत्पन्न हुयी ।

(6) **पद्मप्रभस्वामी :** माता को कमल की शय्या मे सोने का दोहद देवता ने पूर्ण किया ।

(7) **सुपार्श्वनाथ :** गर्भ के प्रभाव से मातापिता के करवट का रोग दूर हुआ ।

(8) **चन्द्रप्रभस्वामी :** गर्भ के प्रभाव से माता को चन्द्र पान का दोहद पूर्ण हुआ ।

(9) **सुविधीनाथ :** गर्भ के प्रभाव से माताने सुंदर विधीपूर्वक आराधना की ।

(10) **शीतलनाथ :** गर्भ के प्रवास से माता के स्पर्श से पिता का पित्तदाह शांत हो गया ।

(11) **श्रेयांसनाथ :** देवताधिष्ठित शय्या का उपयोग करने से माता का कल्याण हुआ ।

(12) **वासुपूज्यस्वामी :** सुवर्ण द्वारा इन्द्रने राजकुल की पूजा की थी पिता वासुपूज्य थे ।

(13) **विमलनाथ :** गर्भ के प्रभाव से माता की बुद्धि विमल (निर्मल) हुयी।

(14) **अनंतनाथ :** गर्भ के प्रभाव से माता ने आकाश में अंत बिना का चक्र देखा ।

(15) **धर्मनाथ :** गर्भ के प्रभाव से दानादि धर्म में उद्यमी बने ।

(16) **शांतिनाथ :** गर्भ के प्रभाव से मरकी का रोग नाश होकर शांति हो गई।

(17) **कुंथुनाथ :** गर्भ के प्रभाव से माताने कुंथु नामके रत्नो की राशी देखी।

(18) **अरनाथ :** गर्भ के प्रभाव से माताने रत्नो का अर (आरा-चक्र) देखा।

(19) **मल्लीनाथ :** गर्भ के प्रभाव से माता को 'छ' ऋतु के फुलो की शय्या में सोने का दोहद पूर्ण हुआ ।

(20) **मुनिसुव्रतस्वामी :** गर्भ के प्रभाव से माता को मुनि जैसे सुंदर व्रत पालने का मन हुआ ।

(21) **नमिनाथ :** गर्भ के प्रभाव से नगर के उपर आक्रमण करनेवाले शत्रु गिर गये ।

(22) **नेमिनाथ :** गर्भ के प्रभाव से माता के घर में रिष्ट रत्न की वृष्टि हुयी।

(23) **पार्श्वनाथ :** गर्भ के प्रभाव से अंधेरे में चलते हुए काले सर्प को देखा।

(24) **वर्धमान :** गर्भ के प्रभाव से सिद्धार्थ के घर धन धान्य की वृद्धि हुयी।

(आ.नि.दीपीका 1087 से 1098)

193. सुधर्मास्वामी का समुदाय

जो इमे अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति एएणं सव्वे अज्जसुहुमस्स अणगारस्स आवच्चिज्जा ॥

➠ अभि जो वर्तमान में श्रमण निर्ग्रन्थ आदि विचर रहे है वो सभी सुधर्मास्वामी के संतान है । **(कल्पसूत्र प्रवचन-8)**

194. संभूतिविजयका परिवार

➠ **शिष्यो :**

1. नंदनभद्र मुनि
2. उपनंदभद्र मुनि
3. तिष्यभद्र मुनि
4. यशोभद्र मुनि
5. सुमनभद्र मुनि
6. मणिभद्र मुनि
7. पूर्णभद्र मुनि
8. स्थूलभद्र मुनि
9. ऋजुमतिभद्र मुनि
10. जंबुभद्र मुनि
11. दीर्घभद्र मुनि
12. पांडुभद्र मुनि

➠ **आर्या परिवार :**

1. यक्षा आर्या
2. यक्षदिन्ना आर्या
3. भूता आर्या
4. भूतदिन्ना आर्या
5. श्रेणा आर्या
6. वेणा आर्या
7. रेणा आर्या

195. परस्पर क्षमापना के छ लक्षण

➠ 1. स्वयं अपराधी - खुद को अपराधी मानना मगर दूसरे को नहि

2. भूल का स्वीकार - मन से अपनी भूल का स्वीकार उनके सामने करना ।

3. वापिस भूल नहि - वापिस एसी भूल न हो जाय एसा वचन
   करने का संकल्प   उसको देना
4. प्रशंसा - जिसने भूल स्वीकार की, सहन की उसकी प्रशंसा करना
5. शांत - सामनेवाला व्यक्ति कितना भी तिरस्कार धिक्कार करे तो शांत रहना ।
6. क्षमा - परस्पर दोनो एक बनकर क्षमामय जीवन जीना ।

196. 'छ' काय की विराधना से बचनेवाले महापुरुष

(1) **पृथ्वीकाय की रक्षा :** वज्रआर्य अपने उन्मार्गी शिष्यो को स्थिर करने के लिये उनके पीछे पीछे चल रहे थे । शिष्य अचित मिट्टी पर पैर रखकर दौडने लगे और आचार्य भगवंत जहां जहां पर अचित भूमि थी वहां पर जयणापूर्वक चल रहे थे । सामने से भयंकर सिंह आ रहा था। यदि सचित भूमि पर चले जाए तो बच सकते थे । मगर पृथ्वीकाय की विराधना से बचने के लिये अचित भूमि पर अनशन कीया । सिंहने आकर आचार्यश्री के उपर छलांग मारकर गिरा दिया । शुभ भावना से केवलज्ञान प्राप्त करके मोक्ष मे गयें । **(महानिशीथ सूत्र)**

(2) **अप्काय की रक्षा :** विहार करते बाल मुनि को तृषा लगी । किसी स्थान पर अचित्त पाणी नहि मिला । सचित पाणी संयमजीवन का घातक है प्राणांते भी यह पाप नहि करने वाले बाल मुनि ने प्राण छोड दिये मगर विराधना नहि की ।

(3) **तेउकायकी रक्षा :** आचार्य प्रेम सूरिजी के शिष्य भुवनभानुसूरिजी का

जब हरणीया का ओपरेशन हुआ तब डोक्टरने चाय पीने को कहा तब आचार्यश्रीने कहा चाय में तेउकाय की विशेष आराधना होने से मेरे चाय नहि वापरना ।

(4) **वायुकाय की रक्षा :** आचार्य प्रेम सूरिजी जब अंतिम अवस्था में थे तब खंभात के उपाश्रय में साधु कपडे से हवा डालने लगे तब आचार्य श्री इशारा से ना कहने लगे । मेरे लिये वायुकाय की विराधना मत करो । हवा डालने से में बचने वाला नहि हूं ।

(5) **वनस्पतिकाय की रक्षा :** आचार्य सोमसुंदरसूरिजी को सर्प दंश हुआ । वैद्य आया हरे पत्ते को कूट के लेप किया । झेर दूर हो गया, मगर मेरे हेतु वनस्पति की विराधना हुयी, दिल कंपने लगा, आजीवन लीलोतरी त्याग ।

(6) **दो इन्द्रियवाले जीव की रक्षा :** एक महात्मा स्थंडिल भूमि गये । पेट में करमीया होने के कारण उन जीवो को बचाने हेतु वहां धूप में खडे रहे । प्रायश्चित के रुप में चारों आहार का त्याग किया, अनशन करके स्वर्ग में गये ।

(7) **तीन इन्द्रियवाले जीव की रक्षा :** धर्मघोष सूरि के शिष्य धर्मरुचि अणगार को नागिलाने कडवी तुंबडी वहोरा दी । परठवते समय भयंकर चीटी की विराधना देखकर खुद आहार करके काल करके सर्वार्थसिद्ध विमान में गये । **(उपदेशपद)**

(8) **चार इन्द्रियवाले जीव की रक्षा :** एक महात्मा काउसग्ग ध्यान में खडे थे । उन्होंने संपूर्ण रात्रि काउसग्ग किया । उस समय मच्छरोने भयंकर उपद्रव किया । चउन्द्रिय जीवो की रक्षा हेतु काउसग्ग नहि पारा काल करके स्वर्ग में गये ।

... वर्तमानकाल में हिम्मतभाई बेडावाले राजस्थान के प्राचीन तीर्थो में जाकर रात्रि में खेस को छोडकर काउसग्ग करते थे । लगभग 1000 लोगस्स का काउसग्ग करते उस समय पुराने स्थानोमें मच्छरो के उपद्रवो को सहन करते थे ।

(9) **पंचेन्द्रिय जीव की रक्षा :** मेतारज मुनिवर वहोरने गये तब क्रौंच पक्षी सुवर्ण के जवला लेकर गये । उस पक्षी को बचाने हेतु मस्तक के उपर चमडे के पट्टे की वेदना सहन की मगर पक्षा का नाम न दिया ।

197. इरियावहिसूत्र का जाप

➠ एक साधु भगवंत को दीक्षा पश्चात् तरह तरह के रोगो ने घर बना दिया। तब साधु भगवंत विचार करने लगे पूर्वभव में एकेन्द्रिय से लगाकर पंचेन्द्रिय जीव तक विराधना की होगी उन पापो को धोने के लिये इरियावहिया सूत्र का जाप किया । प्रतिदिन की 50 नवकारवाली गिनने का चालू किया यानी 5000 बार इरियावहिया सूत्र का जाप करके पाप खपाते थे । एक इरियावहीया सूत्र में 10 प्रकार की विराधना द्वारा 563 जीवभेद के साथ मन-वचन-काया, करण करावण, अनुमोदना, साक्षी द्वारा गुणाकार करने से 18.24.120 प्रकार से मिच्छामि दुक्कडम् दिया जाता था । **(विश्व की आध्यात्मिक अजायबी)**

एक आचार्य भगवंत ने प्रातःकाल में जल्दी विहार किया । उस समय दूसरे साधु उनको भेजने गये तब आचार्य श्री ने कहा हमको तो जल्दी विहार करना पडता है मगर तुम हमारे लिये अंधेरे में चलने का रहने दो, क्योंकि इर्यासमिति का पालन इसमे नहि होता है । एसा भाव आ जाय तो भी बहोत है ।

198. उपदेशमाला ग्रंथाधारे पांच समिति का वर्णन

(1) **इर्यासमिति :**

जुगमित्तंतर दिट्ठी, पयं पयं चक्खुणा विसोहिओ ।
अविक्खताउत्तो, इरियासमिओ मुणी होई ॥296॥

➠ **भावार्थ :** युगप्रमाण द्रष्टिवाला, कदम कदम पर भूमि का निरीक्षण करनेवाला शब्दादि विषय में उपयोग बिना का, राग-द्वेष को छोडकर जो चलता है वो इर्यासमिति का पालनवाला कहलाता है ।

(2) **भाषासमिति :**

कज्जे भासई भासं, अणवज्जमकारेण न भासई च ।
विगह विसुत्तिय, परिवज्जिओ अ जइ भासणसमिओ ॥297॥

➠ **भावार्थ :** शब्दादि विषय में जब जरुर हो तब सावद्य भाषा बोलना, प्रयोजन बिना बोलना नहि, चार विकथा, विषयकथा का त्याग करके निंष्पाप वचन बोलने वाला भाषासमिति का पालन वाला कहलाता है ।

(3) **एषणा समिति**

बायालमेषणाओ, भोयण दोसे च पंच सोहेइ ।
सो एषणाइ समिओ, आजीवी अन्नहा होई ॥298॥

➠ **भावार्थ :** मुनि जब वहोरने जाते है उस समय उद्गम के 16 दोष, उत्पादन के 16 दोष, एषणा के 10 दोष, 42 दोष गौचरी के व 5 दोष मांडली के कुल 47 दोष छोडकर जो शुद्ध आहार करते है वो एषणा समिति कहलाती है ।

(4) **आदानभंडमत्त निक्खेवणा समिति**

पुव्वि चक्खू परिक्खिय, पमज्जिउं जो ठवेइ गिण्हईवा ।
आयाणभंड निक्खेवणाई, समिओ मुणी होई ॥299॥

➠ **भावार्थ :** किसी भी पदार्थ को ग्रहण करना हो या रखना हो तो आंख से प्रथम देखकर रजोहरण से पूंजकर प्रमार्जना करके लेना रखना वो आदान भंडमत्त निक्खेवणा ।

(5) **पारिष्ठापनिकासमिति :**

उच्चार पासवण खेल जल्ल सिंघाण ए य पाणविहि ।
सुविवेइय पएसे, निसिरंतो होई तस्स मिओ ।।300।।

➠ **भावार्थ :** वडीनीति, लघुनिती, कफ-श्लेष्म, शरीरमेल, नासिकामेल, भोजन, पाणी आदि पदार्थो जीव बिना की शुद्ध भूमि में जो परठवता है वो पारिष्ठापनिका समिति जानना । **(उपदेशमाला)**

199. पुष्पमाला ग्रंथाधारे तीन गुप्ति का स्वरुप

(1) **मनोगुप्ति**

अकुसलमणोनिरोहो, कुसलस्स अईरणं तहेगत्तं ।
इए निट्ठिअमपसरा, मणगुत्तिं बिंति महारिसिणो ।।191।।

➠ **भावार्थ :** अकुशलमन का निरोध, कुशल मन की उदीरणा, और मन का एकत्त्व ये तीन प्रकार की गुप्ति से गुप्त है जिसके मन में अशुभ विचार परिपूर्ण हो जाते है, उनको तीर्थंकर मनोगुप्ति कहते है ।

1. अकुशलमन : आर्त्त रौद्रध्यान वाला मन ।
2. कुशलमन : सूत्रार्थ के चिंतन द्वारा मन को भरना ।
3. एकत्त्व : कोई भी एक विषय को लेकर उनमें एकाकार बनना ।

(2) **वचनगुप्ति**

अकुशलवयण निरोहो, कुसलस्स अईरणं तहेगतं ।
भासाविसारएहिं, वयगुत्ति वन्निया एसा ।।195।।

➡ **भावार्थ :** अकुशल वचन का विरोध, कुशल वचन की उदीरणा, वचन का एकत्त्व । ये तीनो वचनगुप्ति है (1) अकुशल वचन - पापकारी वचन (2) कुशलवचन - सूत्रार्थ का घोष पूर्वक पाठ (3) मौन

(3) **कायगुप्ति :**

जो दुट्ठगइंदोइव, देहो असमंजेसु वट्टंतो ।
नाणं कुसेण रुंभई, सो भण्णइ कायगुत्तोत्ति ॥198॥

➡ **भावार्थ :** दृष्ट हाथी को जिस तरह मावत अंकुश द्वारा रोकता है उसी तरह अयोग्यप्रवृत्तिवाली काया को ज्ञानरुपी अंकुश द्वारा जो रोकता है वो कायगुप्ति । यानि काया द्वारा अविधि का त्याग करके जिनाज्ञा अनुसार शुद्ध विधि मे काया को जोडना । **(पुष्पमाला)**

200. एषणा समिति में पांच आचार का पालन

(1) ज्ञानाचार - आहार प्राप्ति हेतु एषणा का सम्यक्ज्ञान प्राप्त करना ।
(2) दर्शनाचार - आहार हेतु निर्दोषता की महत्ता स्वीकार करना ।
(3) चारित्राचार - निर्दोषता स्वीकारने के बाद अनासक्त भाव से लेना।
(4) तपाचार - आहार की प्राप्ति न होवे तब तक तप का लाभ मानना।
(5) वीर्याचार - चारों आचार में वीर्य (शक्ति) का उपयोग करना ।

(आचारांगसूत्र भा.2)

201. शुद्ध मौन की विधी

➡ जिस समय अपन मौन धारण करते है उस समय या मौन एकादशी के दिन मौन धारण करते है उस समय नीचे के कार्यो का त्याग करना चाहिए।

रत्नसंचय : ५

1. मुख के विकार	2. आंख के विकार	3. भ्रूके विकार
4. मस्तक के विकार	5. चपटी बजाना	6. धूत्कार खाना
7. टपाका लगाना	8. कंकर डालना	9. ओडकार करना
10. खांसी खाना	11. हुंकारा खाना	12. उंचा नीचा श्वास लेना

(आचार प्रदीप)

202. साधुसाध्वीजी का हास्य कैसा ?

अट्टट्टहास केली किलत्ताणं, हास खिड्ड जमगरुई ।
कंदप्पं उवहराणं-परस्स न करंति अणगारा ॥316॥

भावार्थ : अपना मुख पहोला करके हसना नहि । खड खड करते हसना नहि सिर्फ कपोल का भाग चलायमान करना । दांत (बत्रीसी) दिखे नहि इस तरह मौन हास्य कर सकते है । हास्य उत्पन्न हो सके एसी बात भी नहि करना । **(उपदेशमाला)**

203. श्रावक-श्राविका के दैनिक छ कर्तव्य

देवपूजा गुरुपास्तिः स्वाध्याय संयम तपः ।
दानं च गृहस्थानां, षट् कर्तव्यानि दिने दिने ॥1॥
जिनस्य पूजनं हन्ति, प्रातः पापं निशाभवनम् ।
आजन्म विहितं मध्ये, सप्ताजन्म कृतं निशि ॥

(1) देवपूजा (2) गुरु उपासना (3) स्वाध्याय (4) संयम (5) तप (6) दान

रत्नसंचय : ५

(1) देवपूजा : तीर्थंकर पूजा से तीर्थंकर बनते है इसलिये श्रावक को दिन में तीन बार पूजा (त्रिकालपूजा) करनी चाहिए ।

1. **वासक्षेप पूजा :** सूर्योदय के बाद सामायिक के शुद्ध वस्त्रो में मुखकोश बांधकर परमात्मा को स्पर्श किये बिना शुद्ध वासक्षेप द्वारा पूजा करना ।
2. **अष्टप्रकारी पूजा :** मध्यान्ह को स्वद्रव्य से अष्ट प्रकारी पूजा करना वो भी क्रमपूर्वक । अंगपूजा, अग्रपूजा, भावपूजा इस तरह तीनों पूजा करने से आ जन्म के पाप नाश होते है ।
3. **आरती-मंगल दीवो :** शाम को सूर्यास्त से पूर्व परमात्मा की आरती-दीवा करना । आरती में घी-गुड-कपूर का उपयोग अति मंगलकारी है इस पूजा से सात भव के पाप नाश होता है ।

(श्राद्धविधी)

1. अंगपूजा : विघ्न (अंतराय) को दूर करती है ।
2. अग्र पूजा : अभ्युदय में वृद्धि करती है ।
3. भावपूजा : मोक्षफल को प्राप्त कराती है । **(ललितविस्तरा)**

(2) गुरु उपासना : तीर्थंकर व गणधर की गेरहाजरी में गुरु ही अपन को मोक्ष मार्ग बताने वाले है इसलिये उनकी सेवा अवश्य करना । दोनों समय का प्रतिक्रमण गुरु की हाजरी में करना चाहिए । क्योंकि ध्यान का मूल गुरु मंत्र का मूल गुरु वाक्य, पूजा का मूल गुरु का स्मरण, मोक्ष का मूल गुरुकृपा है मास, तुस् मुनि गुरुकृपा से केवलज्ञान तक पहोंचते है ।

(3) स्वाध्याय : स्व यानि आत्मा उसका अध्ययन वो है स्वाध्याय । साधु-श्रावक दोनों को स्वाध्याय अति जरुरी है । बार प्रकार के तप में स्वाध्याय भी तप है गुरु के सान्निध्य में करने से कर्म निर्जरा होती है ।

(4) **संयम :** पांच इन्द्रिय व मन उपर कन्ट्रोल रखना वो है संयम । पांच इन्द्रिय के 23 विषय व 252 विकार भाव बताये है । उन सभी को रोकने का प्रयत्न करना संसार में मानव जन्म को सफल बनाने हेतु सामायिक पौषध की आराधना अति जरुरी है । प्रतिदिन एक सामायिक साथ स्वाध्याय करना चाहिए ।

(5) **तप :** तप को अग्नि की उपमा दी है जिस तरह अग्नि में लकडा डालने से तुरंत जल जाता है उसी तरह तप से चीकणे कर्मो का नाश होता है । आत्मा को शुद्ध बनाने हेतु तप के साथ क्रिया अति जरुरी है । तप से 12 प्रकार बताये है कीसी भी प्रकार के तप की आराधना द्वारा कर्म निर्जरा कर सकते हैं ।

(6) **दान :** आत्मा को अनादिकाल से परिग्रह की ममता लगी हुयी है । उसको तोडने के लिये संपत्ति के आसक्ति भाव को कम करके दान देना चाहित् । सुपात्र दान देने से संयंम आराधना के छट्ठे भाग का लाभ प्राप्त होता है । अनुकंपा दान द्वारा समकित निर्मल बनता है । धन्ना सार्थवाह, नयसार, संगम आदि ने दान देकर तीर्थंकर नाम कर्म तक पहोंचे ।

(**श्राद्धविधी**)

204. स्थंडिल भूमि की दस शुद्धि

(1) **अनापात-असंलोक :** जिस स्थान पर कीसी का आना जाना न हो, और कोई देखता न हो ।

(2) **अनुपघाती :** मार-पीट आदि से शासन का उड्डाह न हो ।

(3) **सम :** खड्डा-पहाड-पत्थर आदि बिना का समतल स्थान ।

(4) **अशुषिर :** घास-तणखला छिद्र आदि बिना का स्थान ।

(5) **अचिरकालकृत :** लम्बे समय से भूमि अचित दिखती हो ।

(6) **विस्तीर्ण :** जघन्य से एक हाथ विस्तारवाला स्थान हो ।

(7) **दूरावगाढ :** जघन्य से जमीन में चार अंगुल प्रमाण भूमि अचित होनी चाहिए ।

(8) **अनासन्न :** अनासन्न यानि दूर, यदि परठवना है तो दूर जाना ।

(9) **बिलवर्जीत :** साप-वींछी-कीडी-मंकोडे आदि के दर बिना का स्थान ।

(10) **त्रस स्थावर जीव वर्जित :** त्रस-स्थावर जीव के विराधना बिना का स्थान ।

दस प्रकार की शुद्धि के कुल 1024 (एक हजार चोवीश) भांगे है । सभी भांगे का विवरण प्रवचन सारोद्धार ग्रंथ में आता है ।

(ओघनिर्युक्ति-313)

205. चार प्रकार के ध्यान का विवरण

(1) **आर्तध्यान के चार भेद :**

(1) **अनिष्ट वियोग :** जब प्रतिकुल समय आता है उससे छुटकारा पाने हेतु आकुल-व्याकुल होना । सहनशक्ति को खोकर उनकी चिंता में आगे बढना ।

(2) **इष्ट वियोग :** व्यापार मे नुकसान, अग्नि, पाणी, चोरी द्वारा धन नाश होना, शोकातुर बनना, बात बात में आवेश में आकर चिंताग्रस्त बनना ।

(3) **इष्ट संयोग :** मन पसंद पदार्थो की आशा रखकर मानसिक-कायिक चिंता में जलता रहता । गृहचिंता, रोगचिंता आदि मे मशगुल बनना ।

(4) **निदान :** भावी की चिंता, इस साल घर बनाउंगा, दूसरे साल शादी करुंगा, तप आदि का द्वारा चक्री आदि की ऋद्धि प्राप्त करुंगा। एसी इच्छा रखना।

(2) **रौद्रध्यान के चार भेद :**

(1) **हिंसानुबंधी :** स्वयं या दूसरे को प्रलोभन देकर हैरान करना, हिंसा करना, हिंसा देखकर खुश होना। युद्ध प्रशंसा आदि करना।

(2) **मृषानुबंधी :** असत्य बोलकर लोगो को ठगना। आत्मप्रशंसा, चुगलीखाना आदि।

(3) **चौर्यानुबंधी :** चोरी करना, व्यापार में झूठ बोलना, मीठा बोलकर लोगो को फंसाना।

(4) **परिग्रहरक्षणानुबंधी :** परिवार के लिये इक्कट्ठा करना, खुश होकर गर्व करना। विश्वास घात करना, मोह मूर्च्छा भाव रखना।

(3) **धर्मध्यान के चार भेद :**

(1) **आज्ञाविचय :** सर्वज्ञ प्ररुपित, नयप्रमाण निक्षेपा युक्त सिद्ध और निगोद का स्वरुप सत्य है उनके उपर श्रद्धा रखकर वीतराग की आज्ञा में मन को जोडकर मोक्ष को लक्ष बनाकर चिंतनमें आगे बढना। आध्यात्मिक विषय में मन को प्रसन्न रखना।

(2) **अपायविचय :** दोष से छुटकारा करने हेतु एसा विचार करना कि मैं दर्शन-ज्ञान-चारित्र से युक्त आत्मा हुँ सिर्फ पर पुद्‌गल भाव को छोड़कर गुण द्रष्टि, ज्ञानद्रष्टि में आगे बढना।

(3) **विपाक विचय :** कर्म को भुगतना हि पडेगा उसके बिना छुटकारा नहि है। सुख-दुःख में हर्ष शोक कीये बिना प्रकृति, स्थिति, रस, प्रदेश, बंध, उदय, उदीरणा और सत्ता के फल को विचार के कार्य करना, तो बहोत सारा पाप कम हो जायेगा।

(4) **संस्थान विचय :** जीव के परिभ्रमण मन स्थान बहोत है उस स्थान की पीडा का चिंतन करके मुक्त होने का विचार करना, क्योंकि पीडा बिना का स्थान मोक्ष है ।

(4) **शुक्लध्यान के चार भेद :**

(1) **पृथकत्व वितर्क सविचारध्यान :** द्रव्यास्तिकाय नय द्वारा सिर्फ कीसी भी द्रव्य में उत्पत्ति-स्थिति-विनाश आदि पर्याय का चिंतवन करना ।

(2) **एकत्व वितर्क सविचार ध्यान :** यदि पूर्वगत श्रुतानुसारे व हो सके तो अन्य श्रुतानुसारे अर्थ, व्यंजन, योगांतर के रुप में असंक्रमण रुप एक पर्याय विषयिक ज्ञानं ।

(3) **सूक्ष्मक्रिया वृत्तिध्यान :** मोक्ष का समय जब पास में आता है तब मनोयोग, वचनयोग, काययोग का आधा निरोध होने के बाद सिर्फ उच्छ्वास् निश्वास द्वारा चिंतन करना, वो केवली कर सकते हैं ।

(4) **व्युपरतक्रिया आप्रतिपाति :** संपूर्ण सूक्ष्म क्रिया का निरोध होने के बाद पर्वत की तरह मन को निश्चल बनाकर शैलेषी अवस्था तक उत्सन्न क्रिया का चिंतवन (केवली) **(आचारप्रदीप)**

206. पांच इन्द्रिय के 23 विषय

(1) **स्पर्शेन्द्रिय - 8 विषय :** 1. भारी 2. हलका 3. ठंडा 4 गरम 5. कोमल 6. खरबचडा 7. स्नेहल 8. रुक्ष

(2) **रसेन्द्रिय - 5 विषय :** 1. खारा, 2. खट्टा 3. तीखा 4. तुरा 5. मीठा

(3) **घ्राणेन्द्रिय - 2 विषय :** 1. सुगंध 2. दुर्गंध

(4) **चक्षुरिन्द्रिय - 5 विषय :** 1 सफेद 2. लाल 3. पीला 4. लीला 5. काला

(5) **श्रोत्रेन्द्रिय - 3 विषय :** 1 सचित 2. अचित 3. मिश्र

8 + 5 + 2 + 5 + 3 = 23 विषय पांच इन्द्रिय के है ।

207. पांच इन्द्रिय के 252 विकार भाव

➠ प्रत्येक विषय के सचित्त-अचित्त-मिश्र 3 इष्ट-अनिष्ट - 2

3 × 2 = 6 फिर राग-द्वेष 2 से गुणने से 6 × 2 = 12

(1)	स्पर्शेन्द्रिय के 8 विषय	8 × 12 = 96
(2)	रसनेन्द्रिय के 5 विषय	5 × 12 = 60
(3)	घ्राणेन्द्रिय के 2 विषय	2 × 12 = 24
(4)	चक्षुरिन्द्रिय के 5 विषय	5 × 12 = 60
(5)	श्रोत्रेन्द्रिय के 3 विषय	3 × 4 = 12
		252 विकार भाव

208. वाचना कैसे व क्यों देना ?

➠ वाचना लेने से पूर्व विनय करना चाहिए, आसन स्थापनाचार्य रखकर गुरु को वंदन करना । निद्रा-विकथा से दूर होकर, दो हाथ जोडकर, बहुमान के साथ अर्थ सुनते ही रोमांच गात्र वाला बनकर वाचना सुनते समय यथाशक्ति तहत्ति आदि शब्द द्वारा गुरु वचन का स्वीकार करके उनके उत्साह को बढाना चाहिये ।

वाचना लेने पांच प्रकार के लाभ

(1) **संग्रह :** वाचना सुनने के बाद हृदय में सूत्रार्थ का संग्रह करना व आचार का पालन करना ।

(2) **उपग्रह :** सूत्रार्थ की जानकारी पश्चात् गीतार्थ बनकर गच्छ समुदाय पर उपकार करना ।

(3) **कर्मनिर्जरा :** वाचना देनेवाले व लेनेवाले दोनो का परस्पर ज्ञानयोग होने के कारण कर्मनिर्जरा होती है ।

(4) **श्रुतवृद्धि :** वाचना लेने व देने वाले दोनो में ज्ञान की अपूर्व वृद्धि होती है ।

(5) **श्रुताविच्छेद :** वाचना के कारण श्रुत की परंपरा में वृद्धि होती है मगर कभी नाश नहि होता है । **(बृहत्कल्प)**

209. संयम से पतित होने के छ लक्षण

ताम्बूलं देह सत्कारः स्त्रीकथेन्द्रिय पोषणम् ।
नृपसेवा दिवानिद्रा, यतीनां पतनानिषट् ॥1॥ **(प्र.बं. कोश)**

(1) **ताम्बूलसेवन :** मुखवास का बार बार सेवन करने से विकार भाव में वृद्धि होती है ।

(2) **देहशणगार :** शरीर की साफ सफाई शणगार करने से विकार भाव में वृद्धि होती है ।

(3) **स्त्री कथा :** स्त्रीदर्शन, स्त्रीकथा, अनेक स्त्री से बात करना ये सभी पतित के स्थान है ।

(4) **इन्द्रियपोषण :** पांच इन्द्रियो के 23 विषय है उन सभी का पोषण विकारभाव में वृद्धि ।

(5) **नृपसेवा :** राजा की सेवा, मानपान बढने से आराधना में शिथीलता आती है ।

(6) **दिवानिद्रा :** संयमीओ को रात में कमनिद्रा बतायी है तो दिन में निद्रा करने से प्रमाद में वृद्धि, स्फूर्ति कम, क्रिया में शून्यता प्राप्त होती है ।

(प्रबम्धकोश)

210. भिन्नमाल नगर के चारआचार्य ।

(1) सिद्धर्षीगणी :
- पिता का नाम - शुभंकर शेठ
- माता का नाम - लक्ष्मीदेवी
- गुरु का नाम - दुर्गस्वामी
- ग्रंथ का नाम - उपमिति भव प्रपंच कथा
- ग्रथके श्लोक - 16,000 (सोलह हजार)
- ग्रंथ समाप्ति - वि.सं. 962 जे.सु.5

(2) श्री वीरगणि :
- जन्म - वि.सं. 938
- दीक्षा - वि.सं. 980
- गुरु - विमलगणीवर
- पिता - शिवनाग शेठ
- माता - पूर्णलता देवी
- दीक्षास्थल - सांचोर
- मुख्य कार्य - देव को प्रसन्न करके अष्टापद तीर्थ की यात्रा

(3) श्री सिद्धसूरिजी :
- पिता - भैसा शाह
- माता - सगुनीदेवी

- गुरु - देवगुप्त सुरि
- परंपरा - पार्श्वनाथ परंपरा
- स्वर्गवास - 1174
- मुख्यकार्य - शत्रुंजय के 14 संघ में निश्रा

(4) ज्ञानविमल सूरि :

- पिता - वासव शेठ
- माता - कनकावती
- दीक्षा - 1702 वि.सं.
- गुरु - धीरविमलगणी
- जन्म - वि.सं. 1694
- प्रतिष्ठा - शत्रुंजय तीर्थ में 17
- स्तवन - शत्रुंजय तीर्थके 3600 स्तवन
- स्वर्गवास - खंभात (गुजरात)

(भिन्नमाल की भव्यता)

211. सामायिक शब्द के विशेष अर्थ

(1) **सामायिक :** यानि सद्वर्तन जिसमें मोक्ष मार्ग की क्रिया होवे वो सामायिक ।

(2) **सामायिक :** शास्त्रानुसारी शुद्ध जीवन जीने का पुरुषार्थ

(3) **सामायिक :** यानि समस्थिति, विषमता का अभाव, यह आत्मा अनादि काल से राग-द्वेष की विषम स्थिति में रहा हुआ है उनकों दूर करने की स्थिति वो सामायिक ।

(4) **सामायिक :** सभी जीवो के प्रति मैत्री भाव यानि चौद राजलोक में रहे हुए सभी जीवो को आत्मतुल्य मानना ।

(5) **सामायिक :** दर्शन-ज्ञान-चारित्र का समन्वय, श्रद्धा व ज्ञानपूर्वक चारित्र की शुद्ध आराधना करना वो सामायिक ।

(6) **सामायिक :** समता का जिसमें लाभ प्राप्त होवे वो सामायिक ।

(7) **सामायिक :** अहिंसा की आराधना कीसी भी जीव को दुख देना, एसा मन से निश्चय करना वो सामायिक ।

(8) **सामायिक :** यानि मध्यस्थ भाव - कोई चंदन का विलेपन करे तो राग नहि और कभी मंकोडा जैसा प्राणी आकर चौट जाए तो द्वेष नहि । दोनों पर समता भाव ।

(9) **सामायिक :** यानि स्वाध्याय का लाभ, पांच प्रकार में से कीसी भी प्रकार का स्वाध्याय द्वारा ज्ञानावर्णीय कर्म का नाश होता है ।

(10) **सामायिक :** यानि द्वादशांगी का आस्वाद, जैन धर्म में ज्ञान का प्रारंभ सामायिक व अंत बिंदुसार पूर्व तक बताया है । तीर्थंकरभी दीक्षां लेते समय करेमि भंते ! का पाठ स्वयं उच्चरते है वो भी सामायिक है ।

212. आवश्यक शब्द के विशेष अर्थ

(1) ज्ञानादिगुणानामासमन्ताद् वश्यम् करोतीति आवश्यकम् ।
चारो तरफ से एक साथ ज्ञानादि गुणों आत्मा को वशकरे वो आवश्यक।

(2) गुणैरासमन्तादात्मानं वासयति भावयति रञ्जयतीति आवासकम् ।
चारो तरफ से आये हुए आत्मा को वासित करे, भाविक करे, खुश करे वो आवश्यक ।

(3) निगृह्यन्त इन्द्रिय कषायादयो भाव शत्रवोऽनेनेति निग्रह ।
इन्द्रिय-कषाय रुपी भाव शत्रुओ को जो निग्रहित करे यानि वश करे वो निग्रह ।

(4) कर्ममलिनस्यात्मनो विशुद्धिहेतुत्वाद् विशुद्धि ।

कर्म से मलिन आत्मा को क्रिया द्वारा जो विशुद्ध करे वो विशुद्धि ।

(5) दूरतः परिह्रियन्ते रागादयो दोषा अनेनेति वर्गः ।

रागादि दोष जिससे दूर हो जाय वो वर्ग ।

समणेण सावएण च, अवस्स कायव्वं हवईजम्हा ।

अंतो अहोनिसिस्सा-तम्हा आवस्सयं नाम ॥238॥

➡ **भावार्थ :** श्रमण एवं श्रावको को रात को व दिन को यानि दोनों संध्या के समय अवश्य करने योग्य विधि को आवश्यक कहते है ।

(अनुयोगद्वार सूत्र)

213. आवश्यक शब्द के 10 पर्यायवाची शब्दार्थ

आवस्सयं अवस्सं करविज्जं, ध्रुवं निग्गोह विसोहीय ।

अज्झयणछक्कवग्गो, नाओ आराहणा मग्गो ॥239॥

(1) **आवश्यक :** जो अवश्य करने योग्य है, जिसमें गुणों का वास होने से आत्मा सुगंधित बनता है वो आवश्यक ।

(2) **अवश्यकरणीय :** साधुसाध्वी श्रावक श्राविका चारो मुमुक्ष कहलाते है मोक्ष में जाने की आवश्यकक्रिया प्रतिक्रमण है उसको प्रतिदिन करने की होती है ।

(3) **ध्रुव :** प्रतिक्रमण अनुष्ठान अर्थ से शाश्वता है सूत्रो भी शाश्वत है इसलिये इस क्रिया को भी ध्रुव कहते है ।

(4) **निग्रह :** यानि बंधन, इन्द्रिय, कषाय्विषय आदि जो सजा कर रहे है उनको बंध में बांधना वो निग्रह

(5) **विशुद्धि :** कर्मरुपी कादव से मलिन होने वाले आत्मा को जो शुद्ध करता है ।

(6) **अध्ययन षट्क :** सामायिक, चउवीसत्थो, वांदणा, प्रतिक्रमण, काउसग्ग, पच्चक्खाण ये 'छ' अध्ययन, आवश्यक क्रिया के है इसलिये अध्ययन षट्क ।

(7) **वर्ग :** राग-द्वेष कषाय आदि दूर हो जाय वो वर्ग ।

(8) **न्याय :** साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका जो प्रतिक्रमण करते है उनको पाप से छुटने का सही न्याय मिले वो न्याय ।

(9) **आराधना :** प्रतिक्रमण यह मोक्ष की आराधना बतायी है इस आराधना से पाप का बोझा हलका होता है जैसे मस्तक उपर से भार उतारने से हाश का अनुभव होता है उसी तरह प्रतिक्रमण द्वारा पाप उतारने से आराधनारुपी पर्वत खडा हो जायेगा ।

(10) **मार्ग :** जिस तरह रस्ता बराबर न होने या नहि मिलने से भटकना पडता है उसी तरह संसार रुपी जंगल को पार करने के लिये मोक्ष मार्ग की पगदंडी प्रतिक्रमण है । जितनी आवश्यक क्रिया शुद्ध उतना मार्ग शुद्ध प्राप्त होगा, नहि तो भटकते रहेंगे । **(अनुयोगद्वार / विशेषावश्यक)**

214. चौदपूर्व हेतु स्याही का प्रमाण

➡ एक पूर्व को लिखने के लिये । हाथी प्रमाण स्याही चाहिए । उसी हाथी की उचांई 15 फूट मानना और वजन 1500 किलो मानना । 1 किलो स्याही के भुक्के मे से 6 लीटर स्याही गिने तो 9,000 लिटर स्याही तैयार होती है । लीटर में से 800 पत्ते लिखे जाते है तो 9,000 लीटर में से 72 लाख पत्ते लिख सकते है । इसी तरह संपूर्ण चौदपूर्व को लिखने

हेतु 16,383 हाथी प्रमाण स्याही कल्पसूत्र ग्रंथ मे बतायी है तो उसका प्रमाण निकलने जाए तो 1 खर्ब 14 अबज 68 करोड, 10 लाख पत्ते लिखे जाते है। यह हाथी यदि महाविदेह क्षेत्र का गिनने जाये तो कल्पना बहार निकल जाए। **(कल्पाणमासीक)**

215. पूर्वधर के विशेषण

वाई य खमासमणे, दिवायरे वायगत्ति एगट्ठा।
पुव्व गयम्मि य सुत्ते, ए ए सद्दा पउंजंति ॥11॥

➡ **भावार्थ :** वादी, क्षमाश्रमण, दिवाकर, वाचक ये सभी विशेषण जिसको पूर्व का ज्ञान है पूर्वधर है उनको दिया जाता है। **(जैन परंपरा इति)**

216. चार वेद के साथ 14 विद्या के नाम

(1) ऋग्वेद
(2) सामवेद
(3) यजुर्वेद
(4) अथर्ववेद
(5) शिक्षाविद्या
(6) कल्पविद्या
(7) व्याकरण
(8) छंदशास्त्र
(9) ज्योतिष शास्त्र
(10) निरुक्त शास्त्र
(11) मीमांसा
(12) ज्ञानविस्तार
(13) धर्मशास्त्र
(14) पुराण

217. 84 आगम के नाम

(1) आचारांग सूत्र
(2) सूयगडांग सूत्र
(3) ठाणांग सूत्र
(4) समवायांग सूत्र
(5) भगवती सूत्र
(6) ज्ञाताधमकथांग सूत्र
(7) उपासक दशांग सूत्र
(8) अंतड़गदशांग सूत्र

(9) अनुत्तरोपपातिक सूत्र
(10) प्रश्नव्याकरण सूत्र
(11) विपाक सूत्र
(12) आवश्यक सूत्र
(13) दशवैकालिक सूत्र
(14) कल्पिताकल्पित सूत्र
(15) लघुकल्पक सूत्र
(16) महाकल्प सूत्र
(17) औपपातिक सूत्र
(18) राजप्रश्नीय सूत्र
(19) जीवाजीवाभिगम सूत्र
(20) पन्नवणा सूत्र
(21) महापन्नवणा सूत्र
(22) प्रमादाप्रमाद सूत्र
(23) नंदी सूत्र
(24) अनुयोग द्वार सूत्र
(25) देवेन्द्रस्तव सूत्र
(26) तंदुल वैचारिक सूत्र
(27) चंद्र वेध्यक
(28) सूर्यप्रज्ञप्ति
(29) पोरिसी मंडल
(30) मंडल प्रवेश
(31) विज्जाचरण
(32) गणि विज्जा
(33) ध्यान विभक्ति
(34) मरण विभक्ति
(35) आत्मविशुद्धि
(36) वीतराग श्रुत
(37) संलेषणा श्रुत
(38) विहारकल्प
(39) चरणविधी
(40) आतुर प्रत्याख्यान
(41) महा प्रत्याख्यान
(42) उत्तराध्ययन सूत्र
(43) दशाश्रुतस्कंध
(44) बृहत्कल्प सूत्र
(45) व्यवहार सूत्र
(46) निशीथ सूत्र
(47) महानिशीथ सूत्र
(48) ऋषिभाषित सूत्र
(49) जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र
(50) द्वीपसागर प्रज्ञप्ति सूत्र
(51) चंद्र प्रज्ञप्ति सूत्र
(52) लघुविमान सूत्र
(53) महाविमान सूत्र
(54) अंगचूलिका
(55) वर्गचूलिका
(56) विवाहचूलिका

(57) अरुणोपपात
(58) वरुणोपपात
(59) गरुडोपपात
(60) वेलंधरोपपात
(61) वैश्रमणोपपात
(62) धरणोपपात
(63) देवेन्द्रोपपात
(64) उत्थान सूत्र
(65) समुत्थान सूत्र
(66) नागपरियावलिका
(67) निरयावलिका
(68) कल्पिता
(69) पुष्पिता
(70) पुष्पचूला
(71) वृष्णिदशा
(72) आसीविष भा.
(73) चारणसुमिण भा.
(74) महासुमिण भा.
(75) दृष्टि विष भा.
(76) तेजोनिसर्ग
(77) दोगिहिनदशा
(78) दीर्घ दशा
(79) बंध दशा
(80) संक्षिप्त दशा
(81) प्रश्न दशा
(82) पंचकल्प दशा
(83) गति प्रवाद
(84) निर्युक्तिओ

(जैन परंपरा का इतिहास)

218. चौदपूर्व में उद्धृत ग्रंथ के नाम

(1) सिद्धप्राभृत
(2) संसक्त निर्युक्ति
(3) कर्मप्रकृति
(4) शतक
(5) पंचसंग्रह
(6) पंचकल्प सूत्र
(7) सप्ततिका
(8) जीवसमास
(9) योनिप्रभात
(10) नयचक्र
(11) वाक्यशुद्धि
(12) प्रतिष्ठाकल्प
(13) धर्मप्रज्ञप्ति
(14) पिंडैषणा
(15) ओघनिर्युक्ति
(16) कल्पसूत्र
(17) दशवैकालिक
(18) 4 छेद आगम

(जैन परंपरा का इतिहास)

219. पुर्वधर द्वारा रचित ग्रंथ

(1) ज्योतिष्प्राभृत	(7) तत्त्वार्थ सूत्र	(13) उपदेशमाला
(2) निमित्त प्राभृत	(8) तरंगवती	(14) चतु:शरणपयन्ना
(3) योनि प्राभृत	(9) मलयवती	(15) सन्मतितर्क
(4) अंगविद्या	(10) वसुदेव चरित्र	(16) न्यायवतार:
(5) ज्योतिष करंडक	(11) पद्म चरित्र	(17) बत्रीसी
(6) सभाष्य	(12) वसुदेवहिंडि	(18) देवागमस्तोत्र

(जैन परंपरा का इतिहास)

220. कुमारपाल राजा के चरित्र

(1)	कुमारपाल प्रतिबोधक	सोमप्रभाचार्य	सं. 1241
(2)	प्रबंध चिंतामणी	मेरुतुंगाचार्य	सं. 1367
(3)	कुमारपाल चरित्र	जयसिंह सूरि	सं. 1313
(4)	कुमारपाल चरित्र	चारित्रसुंदरसूरि	-
(5)	कुमारपाल चरित्र	श्री हरिश्चंद्र	-
(6)	कुमारपाल चरित्र	जिनमंडनसूरि	सं. 1441
(7)	प्रभावक चरित्र	प्रभाचंद्रसूरि	सं. 1334
(8)	कुमारपाल चरित्र	सोमतिलकसूरि	-
(9)	कुमारपाल रास	ऋषभदास कवि	-
(10)	कुमारपाल रास	जिनहर्ष सूरि	-

(योगशास्त्र प्रस्तावना)

221. देवो की दशजाति

(1) **इन्द्र :** सभी देवो के नायक, राजा समान देव ।

(2) **सामानिक :** इन्द्र की तरह ऋद्धि के धारक देव ।

(3) **लोकपाल :** कोटवाल जैसे देव, सोम, यम, वरुण, कुबेर, वैश्रवण आदि देव ।

(4) **त्रायस्त्रिंशत :** राजगुरु, पुरोहित आदि सामान्य देव ।

(5) **पारिषद्य :** मित्र समान देव ।

(6) **आत्मरक्षा :** अंगरक्षक जैसे देव ।

(7) **अनीक :** गजसेना, अश्वसेना, रथसेना, सुभट सेना, गंधर्वसेना, नृत्यसेना, वृषभसेना, सात सैन्यदल के देव ।

(8) **प्रकीर्णक :** सामान्य देव आदि ।

(9) **आभियोगिक :** कर्मचारी, सेवक देव ।

(10) **किल्बिषिक :** चांडाल जैसे तुच्छ देव । **(पन्नवणा सूत्र)**

222. मानव जन्म के 10 दृष्टांत

(1) **भोजन :** ब्रह्मदत्त चक्री का मित्र एक ब्राह्मण था । बालकाल में चक्री ने ब्राह्मण को वचन दिया था कि मैं जब राजा बनूंगा तब तुमको याद करुंगा, ब्रह्मदत्त राजा तो चक्री पद तक पहोंच गया । मगर ब्राह्मण याद नहि आया । जब जब चक्री बहार निकलता है तब ब्राह्मण जीर्ण जोडे (बुटचंपल) की माला बनाकर एक बडी लकडी पर लगाकर चक्री के आगे चलने लगा । उसको देखकर चक्री का ध्यान वहां गया व ब्राह्मण को देखते ही नीचे उतरकर उसको भेटा और कहा मैं तेरे को भूल गया अब बोल तेरे को क्या चाहिए ? तब ब्राह्मण ने कहा तुम्हारे घर से प्रारंभ करके भरतक्षेत्र के प्रत्येक घर में भोजन की व्यवस्था करोगे । चक्री ने उसी तरह व्यवस्था की, प्रथम दिन चक्री के घर भोजन इतना अच्छा

लगा कि वापिस चक्री के घर की बारी आ जाए तो अच्छा, मगर भरतक्षेत्र के सभी घर पूर्ण होने से पहले जीवन पूर्ण हो जायेगा परंतु वापिस चक्री के घर की बारी आनी बहोत दुर्लभ उसी तरह मानव जन्म हार जाने के बाद वापिस मिलना बहोत दुर्लभ है ।

(2) **पाशक :** चन्द्रगुप्त राजा के भंडार को समृद्ध बनाने के लिये चाणक्य ने साधना द्वारा देवी पासा तैयार करके नगर में समाचार भेजा कि जो मेरे को जीतेगा उसको सुवर्णभर के थाल दिया जायेगा । देवीपासा को जित के सुवर्णथाल प्राप्त करना अति मुश्केल है उसी तरह मानव जन्म प्राप्त करना अति दुर्लभ है ।

(3) **धान्य :** भरतक्षेत्र में जितने धान्य होते है उन सभी को इकट्ठा करना । तल-मूंग आदि, इकट्ठे करने के बाद उसमें एक मुठि जितने सरसव के दाणे डालना । सभी धान्य को मिक्श करके मंद रोशनी वाली वृद्ध महिला को कहना कि इस में से सरसव के दाणे बहार निकालो । उस महिला को सरसव के दाने निकालना जितना भारी उतना भारी यह मनुष्य जन्म है इसलिये मानव जन्म में धर्म करना अति जरुरी है ।

(4) **जुगार :** जितशत्रु राजा के पुत्र को राज्य प्राप्ति की इच्छा हुयी तब राजा ने कहा यदि तेरे को जल्दी राज्य चाहिए तो मेरे साथ जुगार खेलो । अपनी राजसभामें 100 थंभे है प्रत्येक थंभे में 108 कोने है एक एक दाव में एक एक कोने को जीतना पडेगा जब सभी स्तंभ जीते जायेंगे तब राज्य मिलेगा । इतने सारे दाव में जीत प्राप्त करना अति दुर्लभ है उसी तरह मानव जन्म अति दुर्लभ है ।

(5) **रत्न :** एव गांव में एसा नियम जब नगर में उत्सव आता है तब उस नगर में जिस व्यक्ति के पास जितना क्रोड़ द्रव्य उतनी धजा वो फरकाते

थे। एक व्यापारी एसा था उसके पास करोडो के रत्न इक्कट्ठे किये थे। मगर वो कभी धजा नहि फरकाता था । एक बार वो व्यापारी परदेश गया तो पुत्रोने सभी रत्नो को बेचकर 84 करोड द्रव्य लाया । तब महोत्सव आया तो महेल भी बदल दिया व 84 धजा महेल के उपर लगा दी - वो व्यापारी जब परदेश से वापिस आया तो अपना घर भी न मिला। अपने ही महेल के आगे पीछे घूमने लगा। जब पुत्रो ने देखा तो पिता को बुलाया, पिता ने पूछा अपना घर कहां है ? पुत्रो ने कहा यही अपना घर है । अरे ! तो इतनी धजा क्यों लगायी ? तब पुत्रो ने कहा हमने सभी रत्न बेचकर 84 करोड लाकर 84 धजा फरकायी । अरेरे ! एसा क्यों किया, अपना धन कीसी को दिखाने का नहि है जाओ जिसको रत्न दिये उनको दाम वापिस देकर रत्न वापिस लेकर आओ। अब वो रत्नवाले वेपारी को रत्न वापिस मिलना अति दुर्लभ है उसी तरह मानव जन्म प्राप्त होना अति दुर्लभ है ।

(6) **स्वप्न :** एक गांव में एक सिद्धपुत्र व एक मुसाफिर दोनों साथ में एक मुसाफिर खाने में सोये थे। रात्रि में दोनो को चन्द्रपान का स्वप्न आया। सुबह उठने के बाद एक दूसरे को कहने लगे कि मेरे को चन्द्र का स्वप्न आया । उसने कहा मेरे को भी वो ही स्वप्न आया । सिद्धपुत्र ने एक बडे व्यक्ति को पूछा मेरे को इस स्वप्न का क्या फल मिलेगा ? तब उसने कहा आज तेरे को घी से भरा हुआ पुडला प्राप्त होगा। थोडे समय में किसी के घर मकान का कार्य चालू था । पुडला बनाया वो उनको प्राप्त हो गया । जो ठाकोर था वो विधिपूर्वक ज्योतिष पास जाकर प्रदक्षिणा देकर स्वप्न का फल पूछा तब उसने कहा तुमको सात दिन में राज्य प्राप्त होगा। उसको सात दिन में राज्य प्राप्त हुआ। राजा बनकर

जा रहा था सिद्धपुत्र सामने मिला अरे ! तुम राजा मैं भिखारी दोनों एक जैसा स्वप्न था तो भी एसा फल मिला । अब मेरे को जब वापिस स्वप्न आयेगा तब विधिपूर्वक पूछुंगा वो सिद्धपुत्र स्वप्न हेतु रातदिन निद्रा लेता है मगर स्वप्न आना अति दुर्लभ है उसी तरह मानव जन्म अति दुर्लभ है।

(7) **चक्र :** एक लोहे का स्तंभ है उसमें आठ चक्र है । प्रत्येक चक्र में 12 आरा है उसमें छ आरे दाये से बांये तरफ व छ आरे बाये से दाये तरफ घूमते है । इस तरह चक्र घूमते रहते है बीच में लोहे की पुतली चक्र के साथ घुमती है नीचे तेल की कुंडी है तब तेल में द्रष्टि रखकर पुतली की दांयी आंख को छेदना है इस तरह राधावेध होता है वो राधावेध करना अति दुर्लभ है उसी तरह मानव जन्म अति दुर्लभ है ।

(8) **चर्म :** लाख योजन प्रमाण तलाव के उपर सेवाल (लीलफुग) बाज गई पाणी दिखता भी नहीं है उस समय तलाव में रहा हुआ कछुआ अपनी डोक को उंची करके सेवाल को दूर करते ही पूर्णिमा का चंद्र दिखाया। चांदनी देखते कछुए को विचार आया कितना अच्छा प्रकाश है मैं दूसरे कुछुए को बुलाकर आउं । बुलाने गया चल मेरे साथे तेरे को चंद्र दिखाउं। छिद्र वापिस ढक गया पूर्णिमा भी चली गई अब छिद्र मिलना मुश्केल, छिद्र मिला तो चंद्र मिलना मुश्केल है उसी तरह मानव जन्म मुश्केल है ।

(9) **युग :** युग यानि गाड़े की धुंसरी जिसके नीचे अपन बैल जोडते है उस धुंसरी को अपन खीली से फिट करते है तब जोडाण होता है अब धुंसरी व खीली दोनो को अलग करके समुद्र के एक किनारे पर डालने के बाद वापिस प्राप्त करना अति दुर्लभ है उसी तरह मनुष्य जन्म पाने के बाद यदि धर्म नहि किया तो वापिस मानव जन्म अति दुर्लभ है ।

(10) **परमाणु :** कीसी एक स्तंभ के परमाणु (जिसके दो भाग न हो सके) जितने टुकडे करके एक नालिका में भर के मेरु पर्वत पर जाके फुंक लगाता उससे सभी टुकडे चारों तरफ उडजाते है। वापिस उन टुकडे को इक्कठा करके वापिस स्तंभ बनाना अति दुर्लभ है उसी तरह मानव जन्म अति दुर्लभ है। **(उपदेश पद)**

223. दश प्रकार के यतिधर्म

(1) **क्षमाधर्म :** क्षमा यह भी एक अहिंसा का भाग है कीसी भी जीव को अंशमात्र भी दुःख नहि होना चाहिए यदि अपने से कोई भूल हो जाय तो सभी कार्य को छोड के क्षमा मांगनी चाहिए। परस्पर क्षमा देने वाला सुखी है और तीर्थंकर आज्ञा का पालन होता है।

➠ **क्षमा के पांचभेद :**

(1) **उपकार क्षमा :** कीसी भी जीवने तुम्हारे उपर उपकार किया है उसके लिये उनके कडवे शब्द को भी समता से सहन करना, भय लज्जा आदि द्वारा परस्पर क्षमा करना।

(2) **अपकार क्षमा :** श्रीमंत व बलवान वडील के सामने भूल उनकी होने पर भी मौन रहना।

(3) **विपाक क्षमा :** क्रोध बहोत भयंकर है उसका फल भवांतर में विरुप मिलता है एसे समजकर दुर्व्यवहार को सहन करना।

(4) **वचन क्षमा :** परमात्मा का वचन है क्षमा रखना उसी तरह अन्य के कुवचन को धीरजता से सहन करना।

(5) **धर्म क्षमा :** गजसुकुमाल की तरह संयम लेने के बाद अपना धर्म क्षमा का धर्म है एसा सोचकर क्षमा में ही जीवन पूर्ण करना।

- पांच क्षमा में तीन क्षमा **लौकिक** व दो लोकोत्तर क्षमा है ।

(2) **मार्दव धर्म :** यदि अपने हृदय में कोमलता होती है तो व्यवहार में भी कोमलता आती है इस गुण को प्राप्त करने हेतु विनय बहु जरुरी है । मार्दव गुण की प्राप्ति हेतु जाति, कुल, सत्ता, श्रुत, तप आदि गर्व का त्याग करना ।

(3) **आर्जव धर्म :** कपट का त्याग करना, विचार, वाणी, वर्तन की एकरुपता द्वारा इसकी साधना करना । एक दूसरे के विश्वास हेतु यह धर्म अति आवश्यक है आर्जव धर्म से निर्मल बुद्धि होती है ।

(4) **मुक्ति त्याग धर्म :** मिले हुए या नहि मिले हुए भौतिक पदार्थों का त्याग करना वो त्यागधर्म, संयम जीवन में कम से कम सामग्री द्वारा जीवन चलाना, इष्ट पदार्थों का त्याग करना वो त्यागधर्म.

(5) **तपधर्म :** चीकणे में चीकणे कर्म तोडने के लिये तप धर्म है जिससे काया का शोषण व आत्मा का पोषण होता है तप शास्त्र में 12 प्रकार के तप बताये है तपधर्म के साथ क्रिया करने से गाढ कर्मो का भी नाश होता है ।

(6) **संयमधर्म :** इन्द्रियो के उपर काबू रखना वो संयम धर्म, पांच इन्द्रिय के 23 विषय व 252 विकार है प्रत्येक विकार भावो के उपर काबू रखने की कोशीश करना, संयम धर्म के शास्त्र में 17 भेद बताये है, पांच महाव्रत का पालन, चार कषाय से मुक्त, पांच इन्द्रियो का निग्रह, मन, वचन, काया की विरती इस तरह संयमधर्म की आराधना करना मानव जन्म का सार है ।

(7) **सत्यधर्म :** अतिसंवाद योगवस्तु का यथार्थ स्वरुप, मन वचन काया की निष्कपटप्रवृत्ति करना वो सत्यधर्म, यानि छुपाया बिना सच्चा बोलना,

जैन दर्शन सत्यधर्म को मुख्य माना है ।

(8) **शौचधर्म :** साधना और शरीर में निरासक्ति वो शौचधर्म, निर्दोष प्राणी व आहार लेना वो द्रव्यशोच, कषाय आदि मानसिक विकारो का त्याग लोभ का परिहार, लोभ चेपी रोग है उनके कारण बहोत गुणो का नष्ट होता है, इसलिये लोभ से दूर रहकर अनासक्त भाव से जीवन जीना वो शौचधर्म ।

(9) **आकिंचन धर्म :** संसार के कीसी भी पदार्थो में आसक्ति भाव (मूर्च्छाभाव) नहि रखना । क्योंकि सर्व दुःखो का मूल ममत्व भाव है पदार्थ का संयोग होने से ममत्वभाव बढता है वह वियोग होने से आर्तध्यान बढता है कीसी भी सामग्री को अपनी नहि मानना वो आकिंचन धर्म ।

(10) **ब्रह्मचर्य धर्म :** आत्मबल आत्मतेज का अमोघ साधन ब्रह्मचर्य धर्म । जिसने बाल्यकाल से इसका पालन किया है उसको कोई कार्य असंभव नहि है । हर कार्य में सफलता का मूलमंत्र यही है, सर्वोत्तम तप यही है इस व्रत के विनाश में अपना विनाश समजना । **(नवतत्त्व सूत्र)**

224. जैन शास्त्र में आसन के नाम

पर्यङ्क वीर वज्राब्ज, भद्रदण्डासनानिच ।
उत्कटिका गोदोहिका, कायोत्सर्ग स्तथासनम् ॥124॥

(1) पर्यङ्कासन (2) वीरासन (3) वज्रासन (4) पद्मासन (5) भद्रासन (6) दंडासन (7) उत्कटिकासन (8) गोदोहिकासन (9) कायोत्सर्गासन इस तरह 9 प्रकार के आसनों का विस्तार योगशास्त्र ग्रंथ में बताया है।

(योगशास्त्र)

225. योगशास्त्राधारे पांच महाव्रत का स्वरुप

(1) **प्रथम महाव्रत :** सर्वथा प्राणातिपात विरमण महाव्रत :

न यत्प्रमादयोगेन, जीवितव्यपरोपणम् ।
त्रसानां स्थावराणां च, तदाहिंसा व्रतं मतम् ॥20॥

➠ **भावार्थ :** प्रमाद के कारण त्रसजीव एवं स्थावर जीवो की जो विराधना करता नहि है उसको अहिंसा व्रत माना गया है ।

प्रथम महाव्रत की पांच भावना :

(1) **इर्यासमिति :** त्रस-स्थावरजीवो की रक्षा हेतु सावधानी पूर्वक चलना ।

(2) **मनोभावना :** मन को अशुभ विचारो से मुक्त रखकर शुभ विचारो में प्रवृत्त होना ।

(3) **वचनभावना :** पापकारी, कर्कश, कठोर, हिंसक अप्रिय आदि भाषा का त्याग करना ।

(4) **आदानसमिति :** उपकरण लेने व रखने में द्रष्टि व प्रमार्जन का उपयोग करना ।

(5) **आलोकित पानभोजन :** प्रकाश वाले स्थान में जाकर आहार पाणी करना । **(आचारांगसूत्र अ. 15)**

(2) **द्वितीय महाव्रत : सर्वथा मृषावाद विरमण महाव्रत :**

प्रियं पथ्यं वचस्तथ्यं, सुनृतव्रतमुच्यते ।
तत्तथ्यमपिनो तथ्यमप्रियं चाहितं च यत् ॥21॥

➠ **भावार्थ :** दूसरो का प्रिय लगे एसा हितकारी व सत्यवचन बोलना, वो दूसरा महाव्रत अप्रिय व अहितकर सत्य होने पर सत्य नहि है क्योंकि दूसरो को खेदकारी बनता है ।

दूसरे महाव्रत की पांच भावना :

(1) **अनुविचीभाषण :** असत्य का त्याग करके प्रिय व हित वचन बोलना ।

(2) **क्रोध त्याग :** क्रोधावेश में सत्यवचन भी असत्य माना जाता है तो क्रोध का त्याग ।

(3) **लोभ त्याग :** लोभ की आसक्ति में भी सत्य वचन असत्य होता है उसका भी त्याग ।

(4) **भयत्याग :** भय के कारण भी सत्य वचन असत्य बोला जाता है तो उसका भी त्याग ।

(5) **हास्यत्याग :** मस्ती मजाक में भी सत्य वचन असत्य बोला जाता है तो उसका त्याग ।

(3) **तृतीय महाव्रत : सर्वथा अदत्तदान विरमण महाव्रत :**

अनादानमदत्तस्या, स्तेयव्रतमुदीरितम् ।

बाह्याः प्राणा नृणामर्थो, हरता तं हता हिते ॥22॥

भावार्थ : 'दिये बिना कुछ लेना नहि' या पूछकर लेना वो तीसरा महाव्रत है धन आदि सामग्री मनुष्यो का बाह्य प्राण है उसका हरण होते ही मनुष्य के द्रव्य प्राण का नाश होता है ।

तीसरे महाव्रत की पांच भावना :

(1) स्थान, उपधि, आदि सामग्री की जितनी जरुर है, उतना ही मांगना ।

(2) गुरु की आज्ञा मानकर आहार पाणी का उपयोग करना ।

(3) द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव को समझकर याचना करना ।

(4) एक बार अवग्रह की याचना करने के बाद बार बार अवग्रह की आज्ञा मांगना

(5) साधर्मिक के पास से मर्यादित अवग्रह मांगना ।

(आचारांग सूत्र अं. 15)

(4) **चतुर्थ महाव्रत : सर्वथा मैथुन विरमण महाव्रत**

दिव्यौदारिककामानां, कृतानुमतिकारितः ।
मनोवाक्कायतस्त्यागो, ब्रह्माष्टा दशधामतम् ।।23।।

भावार्थ : दिव्य यानि देवसंबंधि, औदारिक यानि मनुष्य तिर्यञ्चसंबंधी, विषयो को मन-वचन-काया से करना नहि, कराना नहि, व अनुमोदना का त्याग करना वो ब्रह्मचर्य 18 प्रकार का कहा है ।

(1) **ब्रह्मचर्य :** बाह्मयानि आत्मा - आत्मचिंतन करना ।

(2) **संयम :** सभी इन्द्रियो को काबू में रखना ।

(3) **गुरुकुलवास :** हंमेशा गुरु के साथ ही रहना ।

(4) **सदाचार :** जीवन में सदाचार होगा यानि आचार अच्छा होगा तो अनाचार दूर हो जाएगा । (आचारांग सूत्र अं. 4)

चतुर्थ महाव्रत की पांच भावना :

(1) विकार भाव जगे एसी कथा कभी नहि करना ।

(2) स्त्रीओ के अंगोपांग को एक ध्यान से देखना नहि ।

(3) पूर्व में भोगकृत विषय को याद नहि करना ।

(4) रसकस आहार व विगई वाले आहार का त्याग करना ।

(5) स्त्री-पशु-नपुंसक आदि स्थानो से दूर रहना ।

(आचारांग सूत्र)

(5) **पांचवा महाव्रत : सर्वथा परिग्रह परिमाण विरमण महाव्रत**

सर्वभावेषु मूर्च्छायासत्यागः स्यादपरिग्रहः ।

यदसत्स्वपि जायेत, मूर्च्छया चित्तविप्लवः ॥24॥

➠ **भावार्थ :** दुनिया की तमाम भौतिक सामग्री के उपर आसक्ति भाव यानि मूर्च्छा भाव का त्याग करना वो ही अपरिग्रह है अपने पास कोई सामग्री नहि है मगर इच्छा रखना (आसक्तिभाव) वो भी परिग्रह है ।

(योगशास्त्र)

पांचवे महाव्रत की पांच भावना :

(1) प्रिय या अप्रिय शब्द सुनने के बाद राग द्वेष करना नहि.

(2) चक्षुरिन्द्रिय के द्वारा प्रिय या अप्रिय पदार्थ को देखकर राग द्वेष नहि करना ।

(3) घ्राणेन्द्रिय द्वारा सुगंध दुर्गंध को सुंघने के बाद राग द्वेष न करना ।

(4) रसनेन्द्रिय द्वारा पदार्थो पर आसक्त बनकर राग द्वेष न करना ।

(5) स्पर्शेन्द्रिय द्वारा आसक्त बनकर राग द्वेष न करना.

(आचारांग सूत्र)

226. दर्शन-ज्ञान-चारित्र योग की व्याख्या

(1) **सम्यग्दर्शन :**

रुचिर्जिनोक्त तत्त्वेषु, सम्यक्श्रद्धानमुच्यते ।

जायते तन्निसर्गेण, गुरोरधिगमेन वा ॥17॥

➠ **भावार्थ :** जिनेश्वर परमात्मा के वचन उपर रुची होनी यानि ये ही सत्य है एसा विश्वास उत्पन्न होना वो सम्यग्दर्शन वो रुचि गुरु उपदेश से होती है ।

(2) **सम्यग्ज्ञान :**

यथावस्थिततत्वानां संक्षेपाद्विस्तरेण वा ।

योऽवबोधस्तमत्राहुः सम्यग्ज्ञानं मनीषिणः ॥18॥

➠ **भावार्थ :** जिस तरह तत्त्व का स्वरुप समाया है उसी तरह संक्षेपया विस्तार से बोध होना या जानना वो सम्यग्ज्ञान विद्वान पुरुषो द्वारा कहलाया है ।

(3) **सम्यग्चारित्र :**

सर्वसावद्य योगानां, त्यांगश्चारित्रमिष्यते ।

कीतितं तदर्हिंसादि व्रतभेदेन पञ्चथा ॥19॥

➠ **भावार्थ :** सभी पाप योगो का मन-वचन-काया से त्याग करना वो है सम्यग्चारित्र । यह चारित्र अहिंसा आदि भेदो से पांच प्रकार कां है ।

(योगशास्त्र अ.1)

227. योगशास्त्र ग्रंथाधारे अष्टप्रवचन माता का स्वरुप

(1) **ईर्या समिति**

लोकातिवाहिते मार्गे, चुंबिते भास्वदंशुभिः ।

जंतुरक्षार्थमालोक्य, गतिरीर्या माता सताम् ॥36॥

➠ **भावार्थ :** अनेक लोगो का जिस मार्ग से अवागमन चालू हो, सूर्य के किरणो द्वारा मार्ग प्रगट दिखता हो, जंतु की रक्षा के लिये देखकर चलना वो ईर्या समिति ।

(2) **भाषा समिति**

अवद्यत्यागतः सर्व जनानां मितभाषणम् ।

प्रियावाच्चंयमानां सा भाषा समितिरुच्यते ॥37॥

➡ **भावार्थ :** निर्दोष (पापबिना की भाषा) सभी जीवो को हितकारी, प्रमाणोपेत (मर्यादापूर्वक जितना जरुरी है इतना) बोलना उनको सत्पुरुष भाषा समिति कहते है ।

(3) **एषणा समिति**

द्विचत्वारिंशता भिक्षा दोषैर्नित्यदूषितम् ।
मुनिर्यदन्नमादत्ते, ऐषणा समितिर्मता ॥38॥

➡ **भावार्थ :** बेंतालीस दोष का निवारण करके जो आहार पाणी मुनि ग्रहण करते है उनको एषणा समिति कहते है ।

(4) **आदानभंडमत्त निक्खेवणा समिति**

आसनादीनिसंविक्ष्य, प्रतिलिख्यच यत्नतः ।
गृहणीयान्निक्षिपेद्धा, यत् सादानसमिति स्मृताः ॥39॥

➡ **भावार्थ :** आसनादि कोई भी उपकरण दृष्टि से देखकर व रजोहरण आदि से प्रमार्जना करके जयणापूर्वक लेना व रखना वो आदानभंडमत्तनिक्खेवणा समिति ।

(5) **पारिष्ठापनिका समिति**

कफमूत्रमलप्राय, निर्जंतुजगतीतले ।
यत्नाद्यदुत्सृजेत्साधुः सोत्सर्ग समिति भवेत् ॥40॥

➡ **भावार्थ :** कफ, मूत्र, मल आदि कीसी भी प्रकार की भीगी मिट्टी, भीगी जमीन या वनस्पतिस्थान पर या त्रस युक्त स्थान पर विसर्जन नहि करना । मगर उचित स्थान पर किसी भी जीव को दुःख न पहोंचे इस तरह नीचे व धीरे रहकर परठवना वो पारिष्ठापनिका समिति ।

(6) **मनगुप्ति :**

विमुक्त कल्पना जालं, समत्वे सुप्रतिष्ठितम् ।
आत्मारामं मनस्तज्ञै र्मनोगुप्तिरुहाहृता ॥41॥

➠ **भावार्थ :** कल्पना जल से मुक्त होकर (आर्त रौद्रध्यान से) समभाव में स्थित बनकर, आत्मभाव में रमण बनने वाले मन को ज्ञानी पुरुषोने मन गुप्ति कहा है ।

(7) **वचनगुप्ति :**

संज्ञादि परिहारेण, यन्मौनस्यावलंबनम् ।
वाग्वृत्तेः संवृत्तिर्वाया, सा वाग्गुप्तिरिहोच्यते ॥42॥

➠ **भावार्थ :** संज्ञादिक का त्याग (यानि हाथ पैर, मुंह, अंगुली आदि द्वारा हलन चलन का त्याग) मौन का आलंबन, या सिर्फ वचन की प्रवृत्ति को रोकना वो वचनगुप्ति कहलाती है ।

(8) **कायगुप्ति :**

उपसर्गप्रसंगेपि, कायोत्सर्ग जुषोमुनेः ।
स्थिरभावः शरीरस्य, कायगुप्ति निजायते ॥43॥

➠ **भावार्थ :** काउसग्ग ध्यान में जब कीसी भी प्रकार का उपद्रव-उपसर्ग आये तो भी शरीर को स्थिर भाव में रखना वो कायगुप्ति कहलाती है। दूसरे रुप से सोना, बैठना, रखना, लेना, खडा होना, चलना प्रत्येक काया की क्रिया में नियम रखना वो कायगुप्ति कहलाती है । **(योगशास्त्र)**

228. अन्तर्मुहुर्त समय का प्रमाण

➠ दो समय लगाकर 48 मिनिट तक के समय में एक समय भी कम वो अन्तर्मुहुर्त कहलाता है दो समय का काल जघन्य अन्तर्मुहुर्त, दो घडी

में एक समय न्यून उत्कृष्ट अंतमुहुर्त व बाकी का सभी समय मध्यम अन्तर्मुहुर्त जानना ।

229. योगशास्त्रग्रंथाधारे श्रावक के 12 व्रत का स्वरुप

(1) **प्रथम अणुव्रत : प्राणातिपात विरमण व्रत**

पंगुकुष्टिकुणि, वादि, दृष्ट्वा हिंसाफलं सुधीः ।
निरागस्त्रसजंतूनां, हिंसां संकल्पस्त्यजेत् ॥19॥

➡ **भावार्थ :** पांगला, कोढिरुत्ता, एवं ठुंठे (एक अंग की कमी) एसे अवतारो की प्राप्ति हिंसा के कारण होती है एसा देखकर बुद्धिशाली को निरपराधी त्रस जीवो की संकल्प हिंसा का त्याग करना चाहिए । सभी प्राणी को अपने जैसा समजना चाहिए ।

आत्मवत् सर्व भूतेषु, सुखदुःखे प्रियप्रिये ।
चिंतयन्नात्मनोऽनिष्टां, हिंसामन्यस्य ना चरेत् ॥20॥

➡ **भावार्थ :** जिस तरह अपन को सुख पसंद है व दुःख अप्रिय है उसी तरह सभी जीवो को सुखप्रिय दुःख अप्रिय लगता है। इस तरह विचार करके दूसरो को अनिष्ट हिंसा का कार्य कभी नहि करना चाहिए ।

(1) कीसी भी प्राणी को ताडन तर्जन करना ।

(2) कीसी भी प्राणी को लुला, लंगडा, काणा आदि बनाना ।

(3) पशु, पक्षी, कुत्ता, बिल्ली, वींछी, बंदर आदि को बंधन से कष्ट देना।

(4) खच्चर, बैल, उंट, भेंस आदि प्राणीम के उपर शक्ति उपरांत भार देना।

(5) अपने आधीन दासदासी पशु आदि को समय पर भोजन नहि देना ।

(2) दूसरा अणुव्रत : मृषावाद विरमण व्रत

मन्मनं काहलत्वं, मूकत्वं मुखरोगिता ।
वीक्ष्याऽसत्यफलं, कन्या-लीकाद्यसत्यमृत्सृजेत् ॥53॥
कन्यागोभूम्यलीकानि, न्यासापहरणं तथा ।
कूट साक्ष्यं च पंचेति, स्थूलसत्यान्य कीर्तयन् ॥54॥

➡ **भावार्थ :** मन्मन-यानि समज नहि पडे एसे बोलना मूकत्व - मूंगा रहना, मुखरोगिता - मुंह में होने वाले रोग ये सभी रोगो की प्राप्ति असत्य बोलने के कारण होती है एसा सोचकर कन्या आदि के विषय में असत्य बोलने का त्याग करना ।

दूसरे रुप से कन्या के विषय में, गाय के विषय में भूमि व थापण आदि के विषय में गलत साक्षी देने आदि के संबंध को पांच बडे जूठ कहा है।

➡ **दूसरे व्रत के पांच अतिचार**

(1) दूसरे को दुःख हो जाय एसा उपदेश देना ।

(2) जाणे बिना गलत चोरी का आरोप देना ।

(3) इंगित आदि आकार से न प्रगट करने जैसी बात प्रगट करना।

(4) मित्र-कलत्र आदि के विश्वासवाली गुप्त बात प्रगट करना ।

(5) जुठे लेख लिखना ।

(3) तीसरा अणुव्रत - अदत्तादान विरमण व्रत ।

दौर्भाग्यं प्रेष्यतां दास्यमंगच्छेदं दरिद्रताम् ।
अदत्तात्तफलं ज्ञात्वा, स्थूलस्तेयं विवर्जयेत् ॥65॥

पतितं विस्मृतं नष्टं, स्थितं स्थापित माहितम् ।
अदत्तं नाददीतस्वं परकीयं स्वचित् सुधीः ॥66॥

➠ **भावार्थ :** दरिद्रता, प्रेष्यता (नौकर) दासता, शरीर के अंगोपांग की कमी, ये सभी प्रकार के कर्मो की प्राप्ति चोरी करने से होती है एसा सोचकर एसे कटु फलो को देखकर कभी भी मालिक को पूछे बिना कोई वस्तु ग्रहण करना नहि । मार्ग में कुछ गिरा हो, भूल गये हो, नष्ट हो गई हो, घर में रही हुयी सामग्री और भूमि में गाढी हुयी सामग्री मालिक के दिये बिना ग्रहण करना नहि ।

➠ **तीसरे व्रत के अतिचार :**

(1) चोरी का माल लेना ।
(2) चोर की सहायता लेना ।
(3) काले बजार दान चोरी करना ।
(4) माप तोल में ठगाई करके भेल सेल करना
(5) गलत तोल माप करके ठगाई करना ।

(4) चतुर्थ अणुव्रत - परस्त्रीगमन विरमण व्रत

षंढत्वमिंद्रियच्छेदं, वीक्ष्याब्रह्मफलं सुधीः ।
भवेत्स्वदारसं तुष्टोऽन्यदारान् वा विवर्जयेत् ॥76॥

➠ **भावार्थ :** नपुंसकता, इन्द्रिय का छेदपणां, अब्रह्मचर्य के फल को जानकर बुद्धिमान मानव को सिर्फ अपनी पत्नी में संतोष मानकर हंमेशा के लिये परस्त्री का त्याग करना चाहिए ।

➠ **चतुर्थ व्रत के पांच अतिचार**

(1) दासी के साथ संबंध रखना ।
(2) कुंआरी, विधवा, वेश्या आदि के सामने द्रष्टि लगाना ।

(3) दूसरी बार शादी करना, सगाई, शादी के जाल में गिरना ।

(4) प्रवृत्ति विरुद्ध संभोग करना ।

(5) विषय भोग में गुलाम बनना ।

(5) पांचवा अणुव्रत - परिग्रह परिमाण विरमण व्रत

असंतोषमविश्वास, मारंभं दुःखकारणम् ।
मत्त्वा मूर्च्छा फलं, कुर्यात् परिग्रह नियंत्रण ॥106॥

➠ **भावार्थ :** दुःख का कारण असंतोष, अविश्वास व आरंभ ये सभी मूर्च्छा के फल है एसा जानकर परिग्रह का नियम करना चाहिए। क्योंकि ज्ञातपुत्र एसे प्रभु महावीर ने भी कहा है कि मूर्च्छा वो ही परिग्रह है मूर्च्छा भाव नहि वो परिग्रह नहि है ।

➠ **पांचवे व्रत के पांच अतिचार**

(1) धन धान्य संबंधी ।

(2) मकान एवं गृह सामग्री संबंधी ।

(3) गाय आदि पशु संबंधी ।

(4) क्षेत्र, दुकान, घर आदि संबंधी ।

(5) सुवर्ण-चांदी-झवेरात आदि संबंधी परिग्रह करने से अतिचार लगता है ।

(6) छठ्ठा गुणव्रत - दिग्परिमाण विरम व्रत

दशस्वपि कृता दिक्षु, यत्र सीमा न लंघ्यते ।
ख्यातं दिग्विरतिरिति, प्रथमं तद्गुणव्रतं ॥1॥

➠ **भावार्थ :** पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, उर्ध्व, अधो, ईशान, नैऋत्य, वायव्य, अग्नि इस तरह दशो दिशा में जाने आने का जो नियम है उसका उल्लंघन नहि करना वो दिग्परिमाण गुणव्रत है ।

➡ **छठ्ठे व्रत के अतिचार**

(1) धारणा भूल जाने से । (कितना की.मी. धारा वो याद नहि रहे तो ।)

(2) दशो दिशा में जो धारा उससे ज्यादा जाना ।

(3) क्षेत्रवृद्धि (1 दिशा में से दूसरी दिशा में इक्कट्ठा करना ।)

(7) सातवा गुणव्रत - भोगोपभोग परिमाण विरमणव्रत :

भोगोपभोग योः संख्या, शक्त्या यत्र विधीयते ।
भोगोपभोगमानं तद्, द्वैतीयीकं गुणव्रतम् ॥4॥
सकृदेव भुज्यते चः स भोगोऽन्नस्त्रगादिकः ।
पुनः पुनः पुनर्भोग्य, उपभोगोऽङ्गनादिकः ॥5॥

➡ **भावार्थ :** शरीर की शक्ति अनुसार (यथाशक्ति) भोग व उपभोग सामग्री की संख्या में नियम करना वो सांतवा गुणव्रत । जो एक बार उपयोग में आता है वो भोग जैसे अनाज, पुष्पमाला आदि । जो अनेकबार उपयोग में आता है वो उपभोग । स्त्री, घर, शय्या आदि...

➡ **सातवे व्रत के अतिचार :**

(1) सचित आहार करना ।

(2) सचित्त के साथ स्पर्शवाला आहार करना ।

(3) सचित अचित मिश्र आहार करना ।

(4) अनेक द्रव्य से बने हुए सोवीरादि ।

(5) थोडा सा पका हुआ आहार करने से अतिचार लगता है ।

➡ **पंदर प्रकार के कर्मादान इस व्रत में आते है ।**

(1) अंगारा का व्यापार (इंट निभाडा स्टील भठ्ठी)

(2) वन काटने का व्यापार (वृक्ष काटना)
(3) गाडे बनाने का व्यापर (मोटर मेन्यु.)
(4) भाडे का व्यापार (किराया पर देना)
(5) जमीन खोदने का व्यापार (बोगदा बनाना)
(6) दांत का व्यापार (हाथी दांत)
(7) लाख का व्यापार (साबु आदि)
(8) केश का व्यापार (बाल युक्त जीव)
(9) जहर बेचने का व्यापार (बेंगोन स्प्रे.)
(10) यंत्र पीलाण का व्यापार (शेरडी संचा आदि)
(11) बैल आदि निर्लांछन का व्यापार (गाय को डाम देना)
(12) असती पोषण का व्यापार (दलाली)
(13) रस का व्यापार (दारु आदि)
(14) आग लगाने का कार्य (जंगल में आग)
(15) तलाव आदि सुकाने के व्यापार मशीन द्वारा (वंदिता सूत्र)

(8) आठवां व्रत गुणव्रत - अनर्थ दंड विरमणव्रत :

आर्तरौद्रमपध्यानं, पापकर्मोपदेशिता ।
हिंसापोकारिदानं च, प्रमादाचरणं तथा ॥73॥
शरीराद्यर्थदंडस्य, प्रतिपक्षतया स्थितः ।
योऽनर्थदंडस्तत्त्याग स्तृतीयं तु गुणव्रतम् ॥74॥

➠ **भावार्थ :** आर्त्त रौद्र रुपी बुरा ध्यान, पाप कर्म का उपदेश, हिंसक उपकरण आदि दूसरो को देना, प्रमाण का आचरण, ये चार का उपयोग शरीर के लिये करना वो अर्थदंड व दूसरो के लिये करना वो अनर्थ दंड, उसका त्याग करना वो आठवां गुणव्रत जानना ।

आठवे व्रत के अतिचार :

(1) हल, मुशल, गाडे आदि के अधिकरण का जोडाण करना ।

(2) प्रमाण से ज्यादा अधिकरण-उपभोग की सामग्री रखना ।

(3) पूर्वापर विचार किये बिना बोलना ।

(4) बहुरुपी की तरह आंख, हाथ आदि की चेष्टा करना ।

(5) विकारभाव उत्पन्न होवे ऐसे वचन बोलना ।

(9) नवमां शिक्षाव्रत - सामायिक व्रत

त्यक्तार्त्तरौद्रध्यानस्यः त्यक्त सावद्य कर्मणः ।
मुहुर्त समता या तां विदुः सामायिक व्रतं ॥82॥

भावार्थ : आर्त्त रौद्र ध्यान का त्याग करके एक मुहुर्त पर्यन्त जो समभाव में रहते है वो सामायिक व्रत ।

नवमे व्रत के अतिचार :

(1) मन-वचन-काया से सावद्य कार्य करे तो ।

(2) सामायिक में अनादर भाव रखे तो ।

(3) सामायिक किया या नहि उसका अनुपयोग रहे तो ।

(10) दसवां शिक्षाव्रत - देसावगासिक व्रत

दिग्व्रते परिमाणं यत् तस्यसंक्षेपणं पुनः ।
दिने रात्रौ च देशावकाशिक व्रतमुच्यते ॥84॥

भावार्थ : छठे व्रत में जो दिशा परिमाण व्रत में जो जाने आने का नियम रखा है उस व्रत में दिन-रात संक्षेप करना वो देशावगासिक व्रत । भोगोपभोग व्रत का संक्षेप इसी व्रत में हे इस व्रत के कारण अपनी मर्यादा के बहार होनेवाले पाप से अपन दूर हट सकते है ।

➡ **दशवे व्रत के अतिचार :**

(1) जो स्थान तय किया उससे ज्यादा कार्य हेतु दूसरो को भेजना ।

(2) नियमित क्षेत्र होने पर बहार से कोई सामग्री मंगवाना ।

(3) नियमित क्षेत्र में रहकर दूसरे व्यक्ति को कंकर आदि डालना ।

(4) नियमित क्षेत्र में रहकर दूसरे व्यक्ति को शब्द द्वारा बुलाना ।

(5) नियमित क्षेत्र में रहकर बहार रहने वाले व्यक्ति को रुप दिखाना ।

संसार के समस्त कार्य को छोडकर उपवास, आंबिल, एकासणा आदि व्रत करके आठ सामायिक व दो प्रतिक्रमण करना । इस 10 सामायिक का व्रत साल में पांच बार अवश्य करना ।

(11) अग्यारवा शिक्षाव्रत - पौषधव्रत

पञ्चःपर्व्यां चतुर्थादि, कुव्यापार निषेधनम् ।
ब्रह्मचर्य क्रिया स्नानादित्यागः पौषधव्रतं ॥85॥

➡ **भावार्थ :** पांचो पर्व के दिन में उपवासादि तप करके, पाप वाले सदोष का त्याग करना । ब्रह्मचर्य का पालन करना, स्नानादि द्वारा शरीर शोभा का त्याग करना इस तरह पौषधव्रत के चार प्रकार बताये है ।

➡ **अग्यारवे व्रत के अतिचार :**

(1) आंख से देखे बिना, प्रमार्जना कीये बीना मलमूत्र का त्याग करना ।

(2) पाट पाटला आदि सामग्री प्रमार्जन किये बिना वापरना ।

(3) द्रष्टि व प्रमार्जन का पडिलेहन कीये बिना संथारा पाथराना ।

(4) पौषध व्रत में अनादर अनुत्साह भाव रहना ।

(5) पौषध किया या नहि वो याद रहा या नहि रहना ।

(12) बारवां शिक्षाव्रत - अतिथि संविभाग व्रत

दानं चतुर्विधाहार, पात्राच्छादन साधनां ।

अतिथिभ्योऽतिथि, संविभाग व्रतमुदीरितं ॥87॥

➠ **भावार्थ :** चार प्रकार का आहार (1) अशन-पान-खादिम-स्वादिम आहार, (2) पात्र (3) वस्त्र (4) रहने के मकान आदि ये चार अतिथि को देना वो अतिथि संविभाग व्रत । पहले दिन पौषध करके गृहस्थ को भोजन या साधु को सुपात्रदान देने के बाद पारणां करना । दान देने के बाद पारणा इस व्रत की विशेषता ।

➠ **बारवे व्रत के अतिचार :**

(1) मुनि वहोरने आए तब अचित पदार्थ को पृथ्वी-जल-अग्नि से मिश्र करे तो ।

(2) अचित पदार्थ को सचित के साथ रखे तो ।

(3) गोचरी का समय पूर्ण होने के बाद भोजन बनाए तो ।

(4) इर्ष्या रख के दान दिया जाय तो ।

(5) ये तो दूसरे की सामग्री है एसा बोलकर देवे नहि तो ।

(योगशास्त्र)

230. मदिरापान के दोष

विवेकः संयमो ज्ञान सत्यं शौचं दया क्षमा ।

मद्यात्प्रलीयते सर्वं तृण्या वह्निकणादिव ॥16॥

दोषाणां कारणं मद्यं, मद्यं कारणमापदाम् ।

रोगातुरइवापथ्यं, तस्मान्मद्यं विवर्जयेत् ॥17॥

भावार्थ : जैसे अग्नि के एक अंगारा से घास का समूह नाश होता है वैसे मदिरा पीने वाला विवेक, संयम, ज्ञान, सत्य, शौच, दया, क्षमा आदि सभी गुणों का नाश करता है । मदिरा दोषवर्धक है मदिरा आपत्ति का कारण है जिस तरह रोगातुर व्यक्ति अपथ्य का त्याग करता है वैसे ही आत्मचिंतक को मदिरा का त्याग करना चाहिए । **(योगशास्त्र)**

231. मांस भक्षण के दोष

चिखादिषति यो मासं, प्राणिप्राणापहारतः ।
उन्मूलयत्सौ मूलं दयाख्यं धर्मशखिनः ।।18।।
हंता पलस्य विक्रेता, संस्कर्ता भक्षकस्तथा ।
क्रेतानुमंता दाता च, घातका एव यन्मनुः ।।20।।

भावार्थ : प्राणीओ के प्राण को नाश करके जो मांस खाने की इच्छा करता है वो दया नाम के धर्मवृक्ष, को मूल में निकाल देता है, प्राणीओ का नाश करनेवाला, मांस बेचने वाला, पकाने वाला, खानेवाला, बेचनेवाला, देनेवाला, अनुमोदना करनेवाला सभी हिंसक व उनके भागीदार है । **(योगशास्त्र)**

232. मक्खन भक्षण के दोष

अंतर्मुहुर्तात्परतः सुसूक्ष्मा जंतुराशयः ।
यत्रमूर्छन्ति तन्नाद्यं, नवनीतं विवेकिभिः ।।34।।
एकस्यापि हि जीवस्य, हिंसने किमघं भवेत् ।
जंतुजातमयं तत्को, नवनीतं निषेवते ।।35।।

भावार्थ : छास में से बहार निकलने के बाद अंतर्मुहुर्त समय में बहोत

सूक्ष्म जीव जंतु की उत्पत्ति होती है। इसलिये विवेकी को मक्खन का त्याग करना चाहिए। एक भी जीव को मारने में पाप है तों जीवो से भरपूर मक्खन का भक्षण कौन करेगा। **(योगशास्त्र)**

233. मधभक्षण के दोष

अनेक जंतु संघात, निधातन समुद्भवम्।
जुगुप्सनीयं लालावत् कः स्वादयति माक्षिकं ।।36।।
भक्षयन् माक्षिकं क्षुद्र, जंतु लक्षक्षयोद्भवं।
स्तोकजंतु निहंतृभ्यः, सैनिकेभ्यो निरिच्यते ।।37।।

भावार्थ : अनेक जीवजंतु, समुदाय के नाश द्वारा उत्पन्न होने वाले और अनेक जुगुप्सनीय लालवाले मध का भक्षण कभी नहि करना। लाखो जीवजंतु के क्षय वाला मध का जो भक्षण करता है वो चांडाल भव से भी आगे बढता है। **(योगशास्त्र)**

234. अनंतकाय के दोष

आर्द्रः कंदः समग्रोपि सर्वः किशलयोपि च।
स्नुही लवणवृक्षत्वक् कुमारी गिरिकर्णिका ।।44।।
शतावरी विरूढानि, गडूची कोमलामिमका।
पल्ल्यंकोमृतवल्लीया, वल्लशूकर संज्ञितः ।।45।।
अनंतकायाः सूत्रोक्ता, अपरेपि कृपापरेः।
मिथ्यादृशामविज्ञाता, वर्जनीया प्रयत्नतः ।।46।।

भावार्थ : सभी जाति के लीले कंदमूल, सभी जाति उत्पन्न होने वाले कुंपणीये, स्नुही (थोर) लवणवृक्ष की छाल, कुमारपाठा, गिरि कर्णिका, शतावरी, द्विदल वाले अंकुल कुटल धान्य, गडुची, कुणी आंबली,

पल्लंकशाक विशेष, अमृतवल्ली विशेष, शुकर जाति के वाल, दूसरे की म्लेच्छ देश में प्रसिद्ध सूत्रोक्त अनंतकाय को। जीवदया में तत्पर मानव को प्रयत्नपूर्वक त्याग करना चाहिए। मिथ्यादृष्टि अनंतकाय को जानते नहि है क्योंकि वो वनस्पतिकाय में जीव मानते नहि है अपन जानते है इसलिये अवश्य त्याग करना चाहिए। (योगशात्र)

235. रात्रिभोजन के दोष व लाभ

उल्लुक काक मार्जारः गृध्र शंबर शूकराः।
अहिवृश्चिकगोधाय, जायंते रात्रिभोजनात् ॥67॥

भावार्थ : रात्रिभोजन करने वाले मानव को घुवड, काग, बिल्ली, साबर, भुंड, सर्प, वींछी, गोधा आदि का अवतार प्राप्त होते है।

अकृत्वा नियमं दोषा-भोजनादि न भोज्यपि।
फलं भजेन्न निव्याजं न वृद्धिर्भाषितं विना ॥64॥

भावार्थ : दिन को भोजन करने वाला यदि उनको रात्रिभोजन त्याग का नियम नहि है तो फल मिलता नहि है व्यवहार में भी नियम है कि बोली कीये बिना थापण का व्याज मिलता नहि।

करोति धन्यो विरतिं यः सदा निशिभोजनात्।
सोऽर्ध पुरुषायुष्कस्य स्यादवश्यमुपोषितः ॥69॥
रजनीभोजन त्यागे, ये गुणाः परितोऽपि तान्।
न सर्वज्ञा दृते कश्चिद्-अपरो वक्तु मीश्वर ॥70॥

भावार्थ : जो व्यक्ति निरंतर रात्रि भोजन का त्याग करता है उनके जीवन में आधी जींदगी उपवास का लाभ मिलता है, क्योंकि दिन के आठ प्रहर में चार प्रहर उपवास का लाभ मिलता है। रात्रिभोजन के त्याग में जो

गुण है उन गुणों को कहने के लिये सर्वज्ञ बिना कोई समर्थ नहि है ।
(योगशास्त्र)

अस्तंगते दिवानाथे, आपो रुधिरमुच्यते ।
अन्नमांस समे प्रोक्तं मार्कण्डेन महर्षिणा ॥ (मार्कण्डपुराण)

भावार्थ : दिवानाथ यानि सूर्य, सूर्यास्त पश्चात् पाणी बिना खून बराबर व अन्न ग्रहण करना वो मांस बराबर माना जाता है ।

निशिथ भाष्य में कहा है कि दिन को बनायी हुयी सामग्री (सुखडी आदि) रात को अपन देख भी नहि सकते है तो खाने की बात कहां, केवलज्ञानी ओने प्रतिज्ञापूर्वक रात्रिभोजन का त्याग बताया है ।

236. द्विदल के दोष

आम गोरस संपृक्त, द्विदलादिषु जंतवः ।
दृष्टाः केवलिभिः सूक्ष्मास्तस्मातानि विवर्जयेत् ॥75॥

भावार्थ : कच्चा दूध, दही, छास रुप गोरस के साथ द्विदल यानि मूग, उडद, वाल, तुवर आदि कठोल का संयोग होने से सूक्ष्म जंतुओ की उत्पत्ति केवलज्ञीओने देखी है इसलिये कठोल व गोरस के संयोग का अवश्य त्याग करना चाहिए । (योगशास्त्र)

237. बोल आचार के दोष

जंतुमिश्रं फलं पुष्पं पत्रं, चान्यदपि त्यजेत् ।
संधानमपिसंसक्तं, जिनधर्म परायणं ॥72॥

भावार्थ : त्रस जीवो की मिश्रतावाले फल-फुल-पत्र आदि और दूसरे भी वैसे ही जीव मिश्रीत बोल आचार का जैन धर्म में परायण श्रावको

को अवश्य छोडना चाहिए ।

(यदि केरी आदि के आचार को धूप में बंगडी की तरह कडक न सूके हो तो उसमें बेइन्द्रिय जीवो की उत्पत्ति होती है । **(योगशास्त्र)**

238. सामायिक में मन के 10 दोष

(1) **अविवेक :** सामायिक में क्या करना क्या नहि करना उसका यदि विवेक न रखे तो अविवेक नामका दोष लगता है । ममता आदि दोष को दूर करके समताभाव में आगे बढना, स्वाध्याय करना, जिनवाणी श्रवण आदि सिर्फ दिखाने करने के लिये करना वो अविवेक ।

(2) **अविनय :** जिसके आमने सामने सामायिक लेना है वहां गुरुवंदन आदि न करे तो अविनय । विनय सामायिक भाव का प्रबल साधन है विनय का नाश वो अविनय ।

(3) **अबहुमान :** गुरुभगवंत प्रति, पंडितजी प्रति, सूत्र व सामायिक के प्रति यदि बहुमान भाव न हो तो अबहुमान दोष, बहुमान भाव से अशुभ कार्य का छेद होता है ।

(4) **रोष :** गुस्से में रहकर, अरुचि रखकर, या दूसरे को देखकर सामायिक करे तो रोष नामका दोष । भावना से ही कार्य की सफलता प्राप्त होती है।

(5) **गर्व :** प्रतिदिन सामायिक लेकर प्रवचन में आगे बैठना, जोर से खमासमण आदि बोलना गुरु मेरे को मान देंगे एसी भावना से कार्य करना वो गर्व दोष । मान छोडने वाला महान बनता है ।

(6) **लाभवांछा :** ज्यादा सामायिक करने से ज्यादा प्रभावना घर में शांति, संपत्ति लाभ आदि की इच्छा करना वो लाभवांछा दोष, इच्छा ही अनर्थ का मूल है ।

(7) **भय :** समाज, व्यवहार, वडील, गुरु, आदि के दबाव से सामायिक

करना वो भय दोष, भय से मुक्त होकर अभय के धनी सामायिक में बनने का है ।

(8) **यशकीर्ति :** समाज में गांव में, प्रवचन में, गुरु के सामने मेरी प्रशंसा होगी उसके हेतु से वस्त्र साथ में रखना, जहां जाए वहां आगे बैठना और सामायिक करे तो यशकीर्ति नामका दोष लगता है । यश बिना की सामायिक शुद्ध है ।

(9) **निदान :** मेरे को देवलोक के मुख मिलेंगे । भौतिक सुख की प्राप्ति, राजा जैसी श्रेष्ठ सामग्री मेरे को प्राप्त होगी एसी भावना से सामायिक करना वो निदान । एसे तुच्छ पदार्थ को छोडकर मोक्ष लक्ष भावना के साथ आराधना सर्वश्रेष्ठ है ।

(10) **फलसंशय :** सामायिक का फल मुझे मिलेगा या नहि एसा संदेह होना वो फल संशय नामका दोष कीसी भी प्रकार के धर्म अनुष्ठान में किसीभी प्रकार की इच्छा न रखना, सिर्फ उल्लासभाव के साथ-सामायिक करना, सर्वज्ञ कथित सामायिक में किया हुआ प्रयत्न अवश्य मोक्ष फल प्राप्त कराता है । **(आवश्यक सूत्र)**

239. सामायिक में वचन के 10 दोष

(1) **स्वच्छंद वचन :** सामायिक लेने के बाद यदि पापकारी वचन बोले या दूसरे की अप्रीति उत्पन्न होवे एसे वचन बोले तो स्वच्छंद वचन नामका दोष इससे बचने के लिये मौन सर्वश्रेष्ठ है ।

(2) **सहसात्कार :** कीसी भी प्रकार का विचार किये बिना सहसामायिक लेने से यह दोष लगता है क्योंकि सामायिक में मन-वचन-काया को निरवद्य भाव में प्रवृत्ति कराने का होता है ।

(3) **कुवचन :** दूसरो को बुरा लगे या पीडा उत्पन्न करावे एसा वचन का प्रयोग करने से कुवचन नामका दोष है । क्योंकि सामायिक जिन वचन का श्रवण व गणधरवचन का स्वाध्याय बताया है ।

(4) **संक्षेप :** सामायिक के सूत्र संक्षेप के बोले या फास्ट बोले तो **संक्षेप** नामका दोष लगता है। सामायिक तीर्थंकर गणधर द्वारा स्वीकार किया हुआ अनुष्ठान है इसमे शब्द का उच्चार स्पष्ट होना चाहिए।

(5) **कलह :** सामायिक में एक दूसरे के प्रति क्लेश उत्पन्न हो जाय एसा शब्द या जोर से बोलने से **कलह** नामका दोष लगता है। मौन सर्व श्रेष्ठ।

(6) **विकथा :** राजकथा, भक्त कथा, देशकथा व स्त्रीकथा ये चार कथा करने से **विकथा** नामका दोष लगता है और कर्मबंध होता है। धर्मकथा श्रवण व स्वाध्याय करने से विकथा नामका दोष दूर होता है।

(7) **हास्य :** सामायिक में हास्य उत्पन्न होवे एसे शब्द बोलने से हास्य नामका दोष लगता है नव नोकषाय में हास्य भी कषाय है जो कर्म बंध का दूषण है तात्विक भावो की प्राप्ति होवे एसे शब्द बोलना।

(8) **अशुद्ध :** सामायिक लेते समय पारते समय यदि अशुद्ध सूत्र बोले जाय तो यह दोष लगता है सूत्र व अर्थ की शुद्धि से आत्मा की शुद्धि होती है।

(9) **निरपेक्ष :** यह वस्तु एसी ही है इस तरह एक प्रकार के द्रष्टिकोण से पदार्थ समजाने में आए तो निरपेक्ष दोष लगता है। सापेक्ष वचन **वो** ही प्रभु की आज्ञा है।

(10) **गुणमुण :** सामायिक को सूत्रो को अस्पष्ट रुप यानि किसी को समज में न आए इस तरह बोलने से यह दोष लगता है।**(आवश्यक सूत्र)**

240. सामायिक में काया के 12 दोष

(1) **अयोग्य आसन :** सामायिक लेने के बाद पद्मासन, यथाजातमुद्रा आदि आसन को छोडकर जैसे तैसे आसन (यानि मुद्रा) में बैठना वो अविनय दोष। अविनय कर्मबंध का कारण है विद्या का नाश करती है।

(2) **अस्थिर आसन :** सामायिक लेने के बाद थोडी देर इधर थोडी देर उधर इस तरह घूमते रहना, हाथ-पैर आदि लम्बे रखने से **अस्थिर**

आसन का दोष लगता है। दो घडी तक एक ही स्थान पर बैठना जरुरी है।

(3) **चलद्रष्टि :** सामायिक लेने के बाद चक्षु (आंख) को जैसे तेसे घूमाना वो चल द्रष्टि नामका दोष है। कौन आया, कोन गया ? वो भी इस दोष में आता है दीवार के सामने द्रष्टि लगाकर स्वाध्याय करना अति उचित है।

(4) **सावद्यक्रिया :** सामायिक लेने के बाद गृहकार्य एवं व्यापार हेतु ईशारा से आप क्रिया हेतु सूचन करने से सावद्य क्रिया नामका दोष लगता है। अयतना से हलन चलन करना वो भी सावद्य क्रिया है। सर्व क्रिया में उपयोग

(5) **आलंबन :** स्तंभ या दीवार का सहारा लेना, बैठते उठते समये हाथ-पैर का सहारा लेना वो आलंबन दोष। इस में दो घडी तक सहारा बिना आराधना करना व दर्शन-ज्ञान-चारित्र का आलंबन लेना।

(6) **आकुंचन प्रसारण :** विशेष कारण बिना सामायिक में हाथ पैर को लंबा करना या संकोचने से यह दोष लगता है इस से प्रमाद बढता है स्थिरता आती नहि है समताभाव हेतु इस दोष को दूर करना।

(7) **आलस :** सामायिक में उत्साह व चित्त की प्रसन्नता नहि होने से आलस करने का मन होने से यह दोष लगता है। आनंद व उत्साह में वृद्धि हो एसी प्रवृत्ति करनी चाहिए। शरीर की जडता दूर करना।

(8) **मोटन :** प्रमादादि दोष के कारण सामायिक में हाथ-पैर के अंगुलीओ का स्वाका (मरोड) करना। शरीर मोडना-उचा नींचा होने से यह दोष लगता है।

(9) **मल :** सामायिक में शरीर का मैल उतारने से, मैल के प्रति जुगुप्सा भाव रखने से यह दोष लगता है। मैल के प्रति अरुचि वो समभाव का बंधक है।

(10) **विमासण :** विमासण यानि चिंताग्रस्त। चिंताग्रस मुद्रा में बैठने से यह दोष लगता है। मन को प्रसन्न रखकर समताभाव रखना।

(11) **निंद्रा :** सामायिक लेने के बाद, प्रतिक्रमण के बाद यदि समय बाकी है तो सो जाना । प्रवचन में नींद लेना । प्रतिक्रमण में नींद लेना इस में **निंद्रा दोष** ।

(12) **वस्त्र संकोच :** श्रावक व श्राविका को सामायिक के समय अर्धवस्त्र, छोटे वस्त्र, खेस निकाल के बैठने इसमें वस्त्र संकोच दोष बारबार वस्त्र को उपर नीचे करना असभ्य वस्त्र से यह दोष है । संपूर्ण मर्यादावाला दोष से अपन भी मर्यादा में आते है । इस तरह 32 दोष को पढकर छोडने की कोशीश करना । **(आवश्यक सूत्र)**

241. मोक्षमार्ग के कारण

नाणं च दंसणं चेव, चरितं च तवो तहा ।

एस मग्गोत्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदंसिहि ॥2॥

नाणं च दंसणं चेव, चरितं च तवो तहा ।

वीरिअं उवओगो च, एओ जीवस्स लक्खणं ॥11॥

भावार्थ : ज्ञान-दर्शन-चारित्र व तप की आराधना वो मोक्ष का मार्ग केवली व तीर्थंकरो ने बताया है । ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप इन चारों में शक्ति का सामर्थ्य व उपयोग रखकर क्रिया करना वो जीव का लक्षण है । **(उतराध्यन सूत्र अ. 28)**

242. सम्यग्ज्ञान का स्वरुप

तत्थ पंचविहं नाणं, सुअं आभिणिबोहिअं ।

ओहिनाण तइअं, मणनाणं च केवलं ॥4॥

एवं पंचविहंनाणं, दव्वाण य गुणाण य ।

पञ्चनाणं च सव्वेसिं, नाणं नाणीहिं देसियं ॥5॥

भावार्थ : ज्ञान पांच प्रकार का कहा है उसमें श्रुतज्ञान-मतिज्ञान अवधिज्ञान मन:पर्यवज्ञान-केवलज्ञान । नंदीसूत्र से होती है । चार ज्ञान को मुंगे की उपमा श्रुत को बोलने की उपमा दी है ये पांच प्रकारके ज्ञान तीर्थंकरोने जीव आदि सभी द्रव्य को एवं रुप आदि गुणो को एवं उनके नये पुराणे उत्पन्न होने वाले पर्याय को जाननेवाला कहा है । केवलज्ञान वाला सभी द्रव्यो का जानता है । **(उत. सू.अ. 28)**

243. सम्यग्दर्शन का स्वरुप

जीवाजीवा य बंधोअ, पुण्णं पावासवो तहा ।
संवरो निज्जरा मोक्खो संते ए तहिआ नव ॥14॥
तहिआणं तु भावाणं, सब्भावे उवएसेणं ।
भावेण सद्दहंतस्स, सम्मतं तं विआहिअं ॥15॥

भावार्थ : जीव (जिसमें प्राण है वो जीव) **अजीव** (धर्मास्तिकाय आदि अजीव) **बंध** (कर्म का संयोग वो बंध) **पुण्य** (शाता आदि शुभ प्रकृति का बंध) **पाप** (मिथ्यात्व आदि अशुभ प्रकृति का बंध) **आश्रव** (हेतु हिंसा आदि कर्म बंध का आना) **संवर** (महाव्रत आदि द्वारा आश्रव का निरोध) **निर्जरा** (तप द्वारा चीकणे कर्म का नाश) **मोक्ष** (सर्व कर्म का क्षय) ये नौ तत्त्व सत्य तत्त्व है इस साथ पदार्थो के सत्यभाव को कहने वाले गुरुकथन को जो पुरुष भाव से श्रद्धा करता है उनको सम्यग्दर्शन है एसा जिनेश्वरने बताया है । मोहनीय कर्म का क्षय व उपशम आदि से उत्पन्न होनेवाला आत्मा का परिणाम विशेष वो सम्यक्त्व जानना ।

(उत्तराध्ययन सूत्र अं. 28)

244. सम्यक्त्व के आठ आचार

निस्संकिय, निक्कंखिय, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठिअ ।

उववूहथिरिकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥31॥

भावार्थ : 1. निस्संकिअ : जैन दर्शन के उपर देश या सर्व से कीसी भी प्रकार की शंका नहि करना ।

2. **निक्कंसिअ :** अन्य दर्शनीओ के अभिलाषा (इच्छा) का अभाव ।

3. **निव्वितिगिच्छा :** आराधना के फल विषय में संदेह या साधु की मलीनता देखकर निंदा करना ।

4. **अमूढदिट्ठि :** ऋद्धिवाले कुतीर्थीको देखकर अपनी दृष्टि बुद्धि से मोहित नहि होना ।

5. **थिरिकरणे :** धर्मस्वीकार करने के बाद प्रमाद में गिरने वाले को स्थिर करना ।

6. **वच्चछल्ल :** समान धर्म वाले की प्रेमपूर्वक भक्ति करना ।

7. **पभावणे :** इसमे धर्मवाल अपनी प्रशंसा करे एसा कार्य करना ।

(उत्तराध्ययन सूत्र अं. 28)

245. सम्यक् चारित्र का स्वरुप

सामाईअत्थ पढमं, छेओवट्ठावणं भवे बीअं ।

परिहार विसुद्धिअं, सहुमं तह संपरायं च ॥32॥

अकसायमहक्खायं छउमत्थस्स जिणस्स वा ।

एयंचय चरित्त करं, चारित्तं होइ अहिअं ॥33॥

भावार्थ : प्रथम चारित्र सामयिक नामका, दूसरा छेदोपस्थापनीय जो इस

भव में होता है तीसरा परिहारविशुद्धि व चोथा सूक्ष्म संपराय चारित्र दसवे गुणठाणे होता है । कषाय बिना का यानि क्षय किया हुआ या उपशम कषाय की अवस्था में प्राप्त होनेवाला पांचवा यथाख्यात चारित्र, उपशांत मोह, व क्षीण मोह ये दो गुण ठाणे में रहे हुए छद्मस्थ को होते है या सयोगी केवली अयोगी केवली ये दो गुणठाणे केवली को होते है इस तरह पांच प्रकार का चारित्र कर्म के समूह को नाश करनेवाला (कर्म को खाली करने वाला) एसा सार्थक नामवाला चारित्र तीर्थंकर ने बताया है । **(उत्तराध्ययन सू. अं. 28)**

246. सम्यक्त्व तप का स्वरुप

तवो अ दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भितरो तहा ।
बाहिरो छव्विहो वृत्तो, एवमब्भितरो तवो ॥34॥

भावार्थ : तप दो प्रकार का कहा है बाह्य व अभ्यंतर उसमें बाह्य के छ व अभ्यंतर के छ भेद है इस तरह 12 प्रकार के तप बताये है ।

(उत्तराध्ययन सू. अं. 28)

ये चारो कारण मोक्ष के सहायभूत है ।

नाणेण जाएइ भावे, दंसणेण य सद्दहे ।
चरित्तेण न गेण्हाइ, तवेणं परिसुज्झई ॥35॥
खविता पुव्वकम्माई, संजमेण तवेण च ।
सव्वदुक्खाप्पहीणाट्ठा, पक्कमंति महेसिणो ॥36॥

भावार्थ : श्रुतज्ञान द्वारा जीवादि भाव को जो जानता है, दर्शन द्वारा उन

भावो के उपर श्रद्धा करते है चारित्र द्वारा जो नये कर्म को ग्रहण नहि करते व तप द्वारा चीकणे कर्म को तोडते हैं। संयम अनंत तप द्वारा कर्मो को जो खपाता है वो महर्षि सभी दुःख को दूर करके मोक्ष प्राप्त करते है। **(उत्तराध्यन सूत्र अ. 28)**

247. उत्तराध्ययन सूत्राधारे अष्ट प्रवचन माता का स्वरुप

(1) **ईर्यासमिति :**

आलंबणेण कालेणं, मग्गेणं जयणाइ य।

चउकारण परिसुद्धं, संजए इरियं रिए ॥4॥

➡ **भावार्थ :** साधु-साध्वीजी व पौषधधारी श्रावक-श्राविका चार कारण से गतिकर

(1) **आलंबन :** दर्शन-ज्ञान-चारित्र ये तीन आलंबन है।

(2) **काल :** दिन को सूर्य के प्रकाश में गमन करना।

(3) **मार्ग :** जहां लोगो का आना जान हो वहां मार्ग पर चलना।

(4) **यतना :** आंख से साढे तीन हाथ प्रमाण भूमि को देखकर चलना।

इंदियात्थे विविज्जित्ता, सज्झायं चेवपंचधा।

तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे, संजए इरियं रिए ॥8॥

➡ **भावार्थ :** शब्दादि इन्द्रिय के विषय को त्याग पांच प्रकार के स्वाध्याय का त्याग। सिर्फ इर्या यानि गमन में जो व्यस्त व उपयोग वान बनकर मन-वचन-काया को एकाग्र बनकर चलना।

(2) भाषा समिति :

कोहे माणे अ माया ए, लोभे अ उवउत्तया ।
हासे भय मोहरिए, विकहासु तहेवय ॥9॥
एआइं अट्ठ ठाणाइं, परिवज्जित्तु संजए ।
असावज्जं मिअं काले, भासं भासिज्ज पण्णवं ॥10॥

➠ **भावार्थ :** क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, भय, मौखर्य व विकथा ये आठ स्थानो को सर्वथा छोडकर साधु को बोलते समय पाप बिना की परिमित भाषा बोलनी चाहिए ।

(1) **क्रोध :** जिस समय गुस्सा आता है तब भाषा समिति नहि कहलाती ।

(2) **मान :** जब अभिमान में आकर बोलते तब भाषा समिति नहि कहलाती ।

(3) **माया :** मन में दूसरा बहार दूसरा बोले तो भाषा समिति नहि कहलाती ।

(4) **लोभ :** लेने के लिये कुछ मिठे शब्द बोलना तो भाषा समिति नहि कहलाती ।

(5) **हास्य :** मस्ती-मजाक में जूठ बोलना वो भाषा समिति नहि है।

(6) **भय :** सच्ची बात कहूंगा तो सुनना पडेगा या भय के कारण जुठ बोलना ।

(7) **मौखर्य :** जरुर बिना बोल बोल करना वो भाषा समिति नहि है।

(8) **विकथा :** देश, राज्य, स्त्री, भोजन ये चारो की कथा करने से भाषा समिति नहिं है ।

(3) **एषणा समिति :**

गवेषणा गहणे य, परिभोगेसणा य जा ।

आहारोवहिसिज्जाए, एए तिन्नि वि सोहए ।।11।।

उग्गमुप्पायणं पढमे, बीए सोहिज्ज एसणं ।

परिभोगम्मि चउक्कं, विसोहिज्ज जयं जई ।।12।।

➠ **भावार्थ :** गाय की तरह शुद्ध आहार की गवेषणा करना वो एषणा समिति । आहार, उपधि, शय्या, इन तीनो की शुद्धि करने की है प्रथम गवेषणा में आधाकर्मादि 16 उद्गम के दोष; धात्री आदि 16 उत्पादन के दोष, व ग्रहणैषणा के शंकित आदि 10 दोष, ग्रासेषणा में संयोजना के पांच दोष शोधना ।

16 + 16 + 10 + 5 कुल 47 दोष दूर करके आहार करना ।

(4) **आदानभंडमत्तनिक्खेवणा समिति :**

चक्खुसा पडिलेहित्ता, पमज्जिजज्ज जयं सई ।

आइए निक्ख विज्जा वा, दुहओवि समिए सया ।।14।।

➠ **भावार्थ :** जयणाप्रधान मुनिवर औधिक (रजोहरणादि) व औपग्रहिक (दंड आदि) उपधि को प्रथमचक्षु द्वारा देखकर व रजोहरण द्वारा प्रमार्जन करके पदार्थ को लेना व रखना चाहिए ।

(5) **पारिष्ठापनिका समिति :**

उच्चार पासवणं, खेलं सिंघाणं जल्लियं ।

आहारं उवहिं देहं, अन्नं वा वि तहाविहं ।।15।।

➠ **भावार्थ :** वडीनीती, लघुनीती, कफ, श्लेष्म (नाक का मैल) शरीर का मैल अन्न आदि आहार, नहि काम की उपधि व शरीर ये आठ पदार्थ जब काम में नहि आते है तब जयणापूर्वक, निर्दोष भूमि में, उच्चित स्थान पर परठवना चाहिए ।

(6) मनोगुप्ति :

सच्चा तहेव मोसाय, सच्चामोसा तहेवय ।
चउत्थी असच्यमोसा अ, मणगुत्ती चउव्विहा ॥20॥

➠ **भावार्थ :** सत्य पदार्थ का चिंतन वो सत्यमनोगुप्ति, सत् को असत् रुप में चिंतवन करना वो असत्य मनोगुप्ति, आम्र आदि विविध वृक्षो के वन को देखकर आम्रवन कहना वो सत्यामृषामनोगुप्ति और जो चिंतवन सत्य भी नहि असत्य भी नहि वो असत्य अमृषा मनोगुप्ति, इस तरह चार प्रकार की मनोगुप्ति अशुभ चिंतन को दूर करके शुभचिंतन करना वो सत्य मनोगुप्ति ।

(7) वचनगुप्ति :

सच्चा तहेव मोसाय, सच्चामोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसाय, वयगुत्ति चउव्विहा ॥22॥

➠ **भावार्थ :** सिर्फ सत्य पदार्थ को बोलना वो सत्यवचन गुप्ति, सत् को असत् मानकर बोलना वो असत्य वचनगुप्ति, केरी के वृक्ष देखकर समस्त वन को आम्रवन बोलना वो सत्यामृषा वचनगुप्ति । जो वचन सत्य भी नहि असत्य भी नहि एसा वचन बोलना वो असत्यामृषा वचनगुप्ति । इस तरह चार प्रकार की वचनगुप्ति बतायी है । इसमें भी दूसरे को अप्रीति दु:ख उत्पन्न न हो जाय एसे वचन को वचनगुप्ति कही है ।

(8) कायगुप्ति :

ठाणे निसीयणे चेव, तहेव च तुयट्टणे ।

उल्लंघण पल्लंघण, इंदियाणय जुंजणे ।।24।।

➡ **भावार्थ :** खडे रहने में, बैठनें में, सोने में, करवट बदलने में, वली खाल-खड्डा आदि का उल्लंघन करने में, चलने में, इन्द्रियों के व्यापार में यानि शब्द आदि विषयो के व्यापार में जयणाप्रधान मानकर प्रवृत्ति करने वाला साधु की कायगुप्ति ।

संरभसमारंभे, आरंभम्मि तहेव य ।

कायं पवत्तमाणं तुं, निअटिज्ज जय जई ।।25।।

➡ **भावार्थ : सरंभ** यानि लाकडी-मुष्टि आदि से प्रहार करने में तैयार होना । **समारंभ** यानि पीडा करना, पैर से मारना, **आरंभ** प्राणी के वधहेतु लकडी आदि का उपयोग करने में शरीर को रोकना वो कायगुप्ति ।

(उत्तराध्ययन सूत्र अ. 24)

248. अष्टप्रवचन माता का सार

एआओ अट्ठसमिओ, समासेण वियाहिआ ।

दुवालसंग जिणक्खायं, मायं जत्थ उ पवयणं ।।3।।

एआओ पवयणमायाओ, जे सम्मं आयरेमुणी ।

सो खिप्पं सव्व संसारा, विषमुच्छइ पंडिए ।।27।।

➡ **भावार्थ :** ये आठ समिति तीन गुप्ति संक्षेप से कही है इस समिति के पालन में द्वादशांगी रुप प्रवचन का सार समाया है । एसा जिनेश्वरने

कहा है । सम् = सर्वकथित इति = क्रिया सर्वज्ञ कथित क्रिया वो समिति। क्रिया का रक्षण करना वो गुप्ति । इन अष्ट प्रवचन माता का जो साधु सम्यक्रुप से पालन करता है वो शीघ्र संसार से मुक्त होता है । **(उत्तराध्यन सूत्र अं. 4)**

249. उत्तराध्ययन सूत्र में आने वाले प्रश्नोत्तर

(1) हे भगवंत ! गुरु व साधार्मिक सेवा से जीव क्या उत्पन्न करता है?

उ. गुरु व साधार्मिक सेवा से विनय उत्पन्न होता है विनय को प्राप्त करने वाला जीव चारो गति के पाप को छेदता है ।

(2) है भगवंत ! जीव अपनी निंदा से क्या उत्पन्न करता है ?

उ. अपने दोष को देखने वाला व पश्चाताप करने वाला मोहनीय कर्म नाश करता है ।

(3) हे भगवंत ! गुरु के पास अपने दोषो की गर्हा करनेवाला क्या उत्पन्न करता है ?

उ. गुरु के पास गर्हा करनेवाला साधु अनंत ज्ञानावरणीय - दर्शनावरणीय कर्म का नाश करता है ।

(4) हे भगवंत ! सामायिक द्वारा जीव क्या उत्पन्न करता है ?

उ. सामायिक में जीव सभी पाप व्यापार की निवृत्ति को उत्पन्न करता है।

(5) हे भगवंत ! चउवीसत्था द्वारा जीव क्या उत्पन्न करता है ?

उ. लोगस्स बोलने द्वारा सम्यग्दर्शन की विशुद्धि को प्राप्त करता है ।

(6) हे भगवंत ! द्वादशावर्त वंदन द्वारा जीव क्या उत्पन्न करता है ?

उ. द्वादशावर्त वंदन द्वारा जीव नीच गोत्र को खपाता है, उच्चगोत्र का बंध करता है । सभी को जनमान्य बनाने हेतु सौभाग्य प्राप्त करता है ।

(7) हे भगवंत ! जीव प्रतिक्रमण द्वारा जीव क्या उत्पन्न करता है ?

उ. प्रतिक्रमण द्वारा जीव व्रत के छेद को यानि अतिचार को गोपता (ढंकता) है । अतिचार को ढंकने वाला जीव कर्म के आश्रव को रोककर अष्ट प्रवचन माता में उपयोग वाला बनकर संयमयोग में विचरणे वाला बनता है।

(8) हे भगवंत ! जीव कायोत्सर्ग द्वारा क्या उत्पन्न करता है ?

उ. कायोत्सर्ग द्वारा जीव लंबे काल से होनेवाले एवं अभी होने वाले प्रायश्चित योग्य अपराध को विशुद्ध करता है प्रायश्चितवाला जीव कर्म से हलका होता है ।

(9) हे भगवंत ! पच्चक्खाण द्वारा जीव क्या उत्पन्न करता है ?

उ. पच्चक्खाण द्वारा जीव आश्रव द्वार को रोककर पूर्व उपार्जित कर्म को खपाता है ।

(10) हे भगवंत ! स्तुति-स्तवन करने वाला जीव क्या उत्पन्न करता है ?

उ. स्तुति-स्तवन करनेवाला जीव दर्शन-ज्ञान-चारित्र रुपी बोधि लाभ को प्राप्त करके कर्म का अंत करने वाला व मोक्षपद तक पहोंचता है ।

(11) हे भगवंत ! कालपडिलेहण (कालग्रहण) द्वारा जीव क्या उत्पन्न करता है ?

उ. कालग्रहण द्वारा जीव ज्ञानावरणीय कर्म को खपाता है ।

(12) हे भगवंत ! प्रायश्चित करनेवाला जीव क्या उत्पन्न करता है ?

उ. प्रायश्चित करनेवाला जीव पाप कर्म की विशुद्धि करके अतिचार बिना का बनकर आचार के फल यानि मोक्ष को प्राप्त करता है ।

(13) हे भगवंत ! दूष्कृतो को खमानेवाला जीव क्या प्राप्त करता है ?

उ. क्षमापनावाला जीव चित्त की प्रसन्नता को प्राप्त करता है चित्त प्रसन्न वाला कर्म बिना का व भय बिना का बनता है ।

(14) हे भगवंत ! स्वाध्याय द्वारा जीन कौन सा कर्म खपाता है ?

उ. स्वाध्याय करने वाला जीव ज्ञानावरणीय कर्म को खपाता है ।

(15) हे भगवंत ! वाचना द्वारा जीव क्या उत्पन्न करता है ?

उ. वाचना सुनने वाला जीव कर्म निर्जरा उत्पन्न करता है । श्रुत की अनाशातना करनेवाला जीव गणधर के आचार का अवलंबन करता है तीर्थ के धर्म का अवलंबन करनेवाला बडी कर्म निर्जरा द्वारा मोक्षपद प्राप्त करता है ।

(16) हे भगवंत ! प्रतिपृच्छना द्वारा जीव क्या उत्पन्न करता है ?

उ. प्रश्न पूछनेवाला जीव सूत्र व अर्थ दोनों को विशुद्ध करके कांक्षा मोहनीय कर्म का नाश करता है । प्रश्न पूछना वो शंका-परमत की अभिलाषा रुप कांक्षा दोनो प्रकार के मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का नाश करता है ।

(17) हे भंते ! परावर्तन् द्वारा जीव क्या प्राप्त करता है ?

उ. पुनरावर्तन द्वारा जीव अक्षर को वापिस स्मरणरुप में लाता है उस प्रकार के कर्म के क्षयोपशम से व्यंजनलब्धि व पदलब्धि को प्राप्त करता है।

(18) हे भंते ! अनुप्रेक्षा द्वारा जीव क्या उत्पन्न करता है ?

उ. अनुप्रेक्षा यानि धर्मचिंतन द्वारा जीव आयुकर्म को छोडकर साते कर्म की प्रकृति जो निकाचित हो गई है उनको शिथिल करते है ।

(19) हे भंते ! धर्मकथा द्वारा जीव क्या उत्पन्न करता है ?

उ. धर्मकथा यानि प्रवचन करने वाला जीव अज्ञान को खपाकर जिनशासन का प्रभावक बनता है जो निरंतर शुभकर्म को बांधता है ।

(20) हे भंते ! श्रुतधर्म की आराधना द्वारा जीव क्या प्राप्त करता है ?

उ. श्रुतधर्म की आराधना करने वाला जीव अज्ञान को खपाकर रागादि से उत्पन्न होने वाले क्लेश का भी नाश करता है ।

(उत्तराध्ययन सूत्र अ. 29)

250. उपाध्याय शब्द के विशेष अर्थ

(1) उपेत्य अधीय तेऽस्मात् = जिनके पास जाकर अध्ययन करने का है वो उपाध्याय ।

(2) उपाध्यायस्तु पाठकः = जो पढाते है पाठ कराते है वो उपाध्याय ।

(3) अधिआधिक्येन गम्यते इति उपाध्याय = जिनके पास ज्यादा बार यानि बार बार जाने का मन होवे वो उपाध्याय

(4) स्मर्यते सव्रतो जिनप्रवचनं येभ्यस्ते उपाध्यायाः = जिनके पास जाकर जिन प्रवचन का सार स्मरण करने में आवे वो उपाध्याय.

(5) उपाधानमुपाधिः सन्निधिस्तेनोपाधिना उपाधौवा आयोलाभः श्रुतस्य येषामुपाधीनां वा विशेषणानां प्रक्रमाच्छोभनानामायो लाभो येभ्यस्ते उपाध्यायाः = जिनके पास रहने से श्रुत का लाभ होता है और विशेष करके अपने जीवन में प्रकृष्ट सुंदर विनय गुण का लाभ मिले वो उपाध्याय ।

(6) तमुपेत्य शिष्टा अधियन्त ईत्युपाध्यायः = जिनके पास जाकर शिष्य अध्ययन करे वो उपाध्याय ।

(7) **इति उवओग करणेवत्ति अ पाव परिवज्जणे होइ ।**

ज्ञतिअ झाणस्स कएउत्ति अ, ओसक्कणाकम्मे ॥

➡ **भावार्थ : उ** - उपयोग द्वारा **व** - पापकर्म के परिवर्जन द्वारा **झ** - ध्यान करके **ऊ** - कर्ममल को दूर करे वो उपाध्याय । **(आवश्यक निर्युक्ति)**

(8) 11 अंग स्वयं पढकर दूसरो को पढाए ।

12 उपांग स्वयं पढकर दूसरो को पढाए ।

चरणसित्तरी का स्वयं पालकर दूसरो पलाए ।

करणसित्तरी का स्वयं पालकर दूसरो को पलाए वो उपाध्याय ।

(9) **उपाध्याय** शब्द के पर्यायवाची शब्द ।

1. उपाध्याय	**8.** अध्यापक	**15.** रत्नविशाल
2. वर वाचक	**9.** कृतकर्मा	**16.** मोहजना
3. पाठक	**10.** श्रुतवृद्ध	**17.** परीक्षक
4. साधक	**11.** शिक्षक	**18.** जितपरिश्रम
5. सिद्ध	**12.** दीक्षक	**19.** व्रतमाल
6. करम	**13.** थविर	**20.** साम्यधारी
7. झरण	**14.** चिरंतन	**21.** निर्विवादी
22. आत्मप्रवादी		

(परमेष्ठी गीता)

(10) अर्थसूत्र ने दान विभागे, आचार व उवज्झाय ।

भव त्रण्ये लहे जे शिवसंपद, निमिये ते सुपसाय ।

मूरख शिष्य निपाई जे प्रभु, पहाण ने पल्लव आणे ।

ते उवज्झाया सकलजिन पूजित, सूत्र अरथ सवि जाणे ।**(श्रीपाल रास)**

(11) उप यानि पास आधि यानि अध्ययन - जिनके पास आकर अध्ययन करने का मन होवे वो उपाध्याय ।

(12) उप यानि उपयोग द्वारा ध्यान यानि ध्यान धरना - जो उपयोग द्वारा ध्यान धरे वो उपाध्याय ।

(13) उप-समीपे श्रुतस्यायो लाभो भवति येभ्यस्ते उपाध्याय - जिनके पास जाने से श्रुत का लाभ प्राप्त होवे वो उपाध्याय ।

(14) उप + आधि + आय - जिनके पास जाने से मन की पीडा दूर होवे वो उपाध्याय ।

(15) जिनके पास जाने से अज्ञानता दूर हो जाय वो उपाध्याय ।

(16) जिनके पास जाने से सुंदर श्रुत की उपाधि (पदवी) प्राप्त होवे वो उपाध्याय।

(17) उपधि व उपाधि के भार को जो दूर करे वो उपाध्याय ।

(18) ज्ञानरुपी पाणी द्वारा समुदाय को हराभरा बनाए वो उपाध्याय ।

(19) नीलवर्ण माला मणि उपद्रव को दूर करता है उसी तरह उपाध्याय भगवंत के ध्यान से उपद्रव दूर होते है ।

(20) 45 आगम पढने व पढाने का अधिकार जिसको प्राप्त हो जाय वो उपाध्याय।

(21) विनय व विनयन गुण (विनयन यानि दूसरो को विनय सीखानेवाले) से जो युक्त होते है वो उपाध्याय ।

(22) गणधर भगवंत रचित 11 अंग का पठन पाठन करे वो उपाध्याय ।

(23) मन-वचन-काया तीन योग में सिर्फ ज्ञानभरा है उस ज्ञान में रत वो उपाध्याय।

(24) आचार्य भगवंत के साथ में रहकर पढाने का कार्य करे वो उपाध्याय ।

(25) अज्ञान-अबुध शिष्य को सारणा आधि द्वारा ज्ञानी बनाए वो उपाध्याय ।

(26) 11 अंग 12 उपांग चरण सित्तरी करण सित्तरी 25 गुणों से युक्त उपाध्याय।

(27) चारित्र के 70 भेद का पालन करे व कराए वो उपाध्याय ।

(28) क्रिया के 70 भेद का पालन करे व कराए वो उपाध्याय ।

(29) आगमो का पठन पाठन करके सार बहार निकाले वो उपाध्याय ।

(30) मूल आगम-टीका-भाष्य-चूर्णी-निर्युक्ति इस पंचागो का ज्ञान जिनके पास उपलब्ध है वो उपाध्याय ।

(31) प्रवचन के समय शास्त्र पाठ द्वारा मिथ्यात्व का झेर दूर करे वो उपाध्याय

(32) उपाध्याय भगवंत को नमस्कार से लाभ ।

उवज्झाय नमुक्कारो, जीवं मोएइ भवसहस्साओ ।
भावेण कीरमाणो होई, पूणो बोहिलाभाए ॥1॥
उवज्झाय नमुक्कारो, धन्नाणं भवक्खयं कुणंताणं ।
हिअयं अणम्मुयंतो, विसोत्तिया वारओ होइ ॥2॥
उवज्झाय नमुक्कारो, एक खलु वन्निओ महत्थोत्ति ।
जो मरणम्मि उवग्गे, अभिक्खणं कीरइ बहुसो ॥3॥
उवज्झाय नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, चउत्थं हवइ मंगल ॥4॥

➡ **भावार्थ :**

(1) उपाध्याय भगवंत को कीया हुआ नमस्कार जीव को हजारो भव से मुक्त कराता है एवं भावपूर्वक कराता नमस्कार बोधिलाभ हेतु बनता है ।

(2) उपाध्याय भगवंत को किया हुआ नमस्कार भाग्यशाली के भव क्षय का कारण बनता है हृदय से अनुस्सरण कराता नमस्कार अपध्यान को दूर करता है ।

(3) उपाध्याय भगवंत को किया हुआ नमस्कार महान अर्थवाला बनता है एसा वर्णन करने में आया है और मृत्यु पास में आ गया हो तो बार बार नमस्कार करना ।

(4) उपाध्याय भगवंत को कीया हुआ नमस्कार सभी पापो का नाश करता है । सभी मंगल में यह चतुर्थ मंगल है । **(आवश्यक निर्युक्ति)**

बावना चंदन समरस वयणे
अहित ताप सवि टाले रे
ते उवज्झाय नमीजे जे वली
जिन शासन अजुआले रे ...... (श्रीपाल रास)

निसीहि शब्द बोलने का कारण

मिहोकहाउ सव्वाओ, जो वज्जेइ जिणालए ।
तस्स निसीहिआ होई, ईई केवलि भासियं ॥

➡ **भावार्थ :** जो जिनमंदिर.में सभी प्रकार के कथा का त्याग करते है। उसकी निसीहि सार्थक है एसा वचन कैवली भगवंत का है ।

(संधाचार भाष्य)

जो कोई निषिद्रपरा, निसीहिया भावओ तस्स ठोई ।
अनिसिद्धस्स निसीहिअ, केवलमित्तं हवई सद्दो ॥

➡ **भावार्थ :** जो आत्मा पाप कर्म से दूर हो गया है उसकी नीसिहिभाव से है और जो पापकर्म से दूर न हुआ उसकी निसीहि सिर्फ शब्दवाली है । **(संधाचार भाष्य)**

बाक़ी के 250 विषय भाग-6 में है

श्री रंजनविजयजी जैन पुस्तकालय (मालवाडा) के प्रकाशन

-: संपादक :-

आचार्य विजय श्री रत्नाकर सूरीश्वरजी म.सा. के

शिष्य उपाध्याय श्री रत्नत्रयविजयजी, पन्यास श्री रत्नज्योतविजयजी

Serving JinShasan

198102

gyanmandir@kobatirth.org

NAVNEET PRINTERS 9825261177